॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

श्रीसुदर्शनानुष्ठानम्

गोविन्दाचार्यः

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

श्री लक्ष्मीहयवदनपरब्रह्मणे नमः

श्री लक्ष्मी-हयग्रीव भगवान्

अवनीन्द्र वत्स
24/7/2011

श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रियै नमः, श्रीधराय नमः

श्रीसुदर्शनानुष्ठानम्

संग्राहकः
गोविन्दाचार्यः

कैङ्कर्यकर्ता
परम भागवत वै.वा. श्री बिरधिचन्द जी अग्रवाल डेरेवाला
एवं श्री घनश्याम दास जी डेरेवाला
की स्मृति में जयपुर के निष्काम भक्त दासानुदास श्रीवैष्णव परिवार

यतिराजप्रकाशनम्
६, मारबाड़ी घाट, कुदसिया घाट, बेला रोड़, दिल्ली- ५४

श्रीसुदर्शनानुष्ठानम्

संग्राहकः

गोविन्दाचार्यः

कैङ्कर्यकर्ता

परम भागवत वै.वा. श्री बिरधिचन्द जी अग्रवाल डेरेवाला
एवं श्री घनश्याम दास जी डेरेवाला

की स्मृति में जयपुर के निष्काम भक्त दासानुदास श्रीवैष्णव परिवार

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशकः

यतिराजप्रकाशनम्, दिल्ली

दूरभाषः- 011-23930776

प्राप्तिस्थानम्

श्रीमुक्तिनाथ पीठ वेद विद्याश्रम

6, मारवाड़ी घाट, कुदसिया घाट,

बेला रोड़, दिल्ली-54

दूरभाषः- 011-23930776, 09810429487

अन्यत् प्राप्तिस्थानम्

अखण्डज्योति बांबा आश्रमः

गल्फूटार, काठमाण्डू, नेपाल, दूरभाषः- 00977-1-4375074

प्रथमावृत्तिः- २०६१ संक्रान्ति ‌ ‌ ‌ ‌ १००० प्रतयः

मूल्यम्- ३०/- (पुनः प्रकाशनार्थम्)

प्राक्कथन

चक्रराज श्री सुदर्शन भगवान्

अखिलकोटि ब्रह्माण्डनायक परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीमन्नारायण के दिव्यायुध अस्त्रराज **श्री सुदर्शन चक्र** की आराधना-पद्धति पुरानी है। श्रीवैष्णवों में अनन्यता-स्वरूप के कारण देवतान्तर की प्रमुखता से उपासना निषिद्ध है। अत: भगवान् एवं भगवान् के पार्षद, आयुध, नित्यसूरियों की उपासना अनन्य श्रीवैष्णवों के लिए विहित है। भगवान् ने निजायुध श्री सुदर्शन चक्र को अपना स्वरूप, नाम, धाम, गुण, ऐश्वर्य आदि सब कुछ प्रदान किया है जैसा कि सुदर्शनशतक के सौवें श्लोक **यस्मिन् विन्यस्य भारं.......** से स्पष्ट है। अत: भक्तों के समस्त अभीष्ट फलों को देने में चक्रराज पूर्णतया समर्थ हैं। भक्तों को अनेक कष्टों से बचाते हुए उनके मनोरथों को पूर्ण करते हैं।

श्री सुदर्शन शतक

श्री सुदर्शनशतक का प्रणयन श्री कूरनारायण स्वामी जी ने लगभग नौ सौ वर्ष पूर्व किया था। उस समय श्री रंगनाथ भगवान के अनन्य उपासक के रोगग्रस्त हो जाने पर उनकी स्वस्थता के लिए भगवत्प्रर्थना के रूप में श्री स्वामी जी ने 100 लोकों का यह अद्‌भुत स्तोत्र बनाया था जिससे उन भक्त को स्वस्थता तो मिली ही साथ ही श्री स्वामी जी के अनेक मनोरथ भी पूर्ण हुए। तब से लेकर श्रीसम्प्रदाय में इसके अनुष्ठान का प्रचलन चल पड़ा। यद्यपि श्री सुदर्शन भगवान् का अनुष्ठान अनादिकाल से चल ही रहा है तथापि **सुदर्शनशतक** के माध्यम से अनुष्ठान तब से प्रचलित हुआ। सुदर्शनशतक का अनुष्ठान सदाचार-पालनपूर्वक करने से सभी कार्य जैसे आधि, व्याधि, भूत-प्रेतकष्ट, राजकष्ट, राजभय, शत्रुभय आदि से मुक्ति मिलती है और धन, धान्य, ऐश्वर्य, विजय प्राप्त करने का भी अकाट्य उपाय है। इसीलिए श्री वैष्णवजन ग्रहों की उपासना न करके सुदर्शन भगवान् की उपासना करते हैं।

सुदर्शनशतक के श्लोक अतिकठिन हैं। जो संस्कृतभाषा में पारंगत नहीं है, उनके लिए उच्चारण करना असम्भव तो नहीं किन्तु कठिन अवश्य है। अत: योग्य विद्वानों से गुरुमुख होकर उच्चारण पद्धति एवं पाठविधि सीखकर स्वयं अपने लिए **१११** बार पाठ करने के बाद ही दूसरों के लिए पारायण करना चाहिए। गुरुपरम्परा से प्राप्त किए बिना पारायण करने से उल्टा फल भी हो सकता है। चक्राङ्कित भागवत को ही पारायण का अधिकार है क्योंकि उपास्यदेव श्री चक्रराज हैं। श्री सुदर्शनशतक पर किसी का शाप नहीं है, अत: शापविमोचन की भी आवश्यकता नहीं है।

पूजा एवं पाठ विधि

उपासना में केवल सुदर्शन भगवान् की उपासना नहीं करनी चाहिए अपितु विजयलक्ष्मी सहित भगवान् की उपासना करने से चक्रराज में जो ऊष्णत्व है, उसे सौम्यता में बदलकर श्री लक्ष्मी जी भक्तों पर अनुगृहीत करती हैं।

तत्तत्कार्य के लिए अलग-अलग मन्त्रों के सम्पुट का विधान है। **१०१** बार पारायण करने से अभीष्ट सिद्धि होती है। विशेष कार्यों के लिए चतुर्गुणित या दशगुणित करना चाहिए और तदनुसार ही हवन, तर्पण, मार्जन आदि भी कराना चाहिए। पारायण में श्लोक संख्या के आधार पर दशांश हवन, उस हवन संख्या के आधार पर दशांश तर्पण और तर्पण के आधार पर दशांश मार्जन का विधान है। **२४** श्रीवैष्णव ब्राह्मणों को तदीयाराधन(भोजन) कराने का नियम है। अनुष्ठान के प्रारम्भ, मध्य या समापन में चित्रा या स्वाति नक्षत्र एवं चतुर्दशी तिथि श्रेष्ठ है। **११** पाठ प्रतिदिन के नियम से **४०** दिन तक पारायण करने पर एकमण्डल होता है, ऐसा भी विधान है, अथवा अपनी सुविधा तथा ब्राह्मणसंख्या के आधार पर **५, ११, १५, २१, ४१, १०१** दिन या नियमित मासिक पाठ भी किया जा सकता है।

आचार्यजन एक ही पुस्तक लेकर पूजा से प्रारम्भ करके सम्पूर्ण अनुष्ठान, पारायण एवं हवन आदि सविधि सम्पादन कर सकें, इस दृष्टि से श्रीवैष्णवीय पद्धति के अनुसार पूजाविधि एवं हवन की विधि भी दी गई है। पाठ अत्यन्त शुद्ध हो, इसका भी ध्यान रखा गया है। यद्यपि अनेक पाठभेद मिलते हैं, फिर भी प्रचलित पाठ एवं शुद्धता पर ज्यादा ध्यान दिया गया है। कई कारणों से वैदिक मन्त्रों में उदात्तादि स्वर नहीं लग पाए हैं।

प्रामाणिकता

पूजनविधि एवं हवन विधि की प्रामाणिकता यह है कि आज तक प्रकाशित पुस्तकों में जैसा दास को मिला तद्नुसार तो रखा गया ही है साथ ही परमाचार्य **श्रीमद्वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्योभयवेदान्तप्रवर्तकाचार्य श्रीमद्रामानुजीयश्रीसम्प्रदायाचार्य जगदाचार्य वर्तमान श्रीगोवर्धनपीठाधीश्वर अनन्त श्रीविभूषित स्वामी श्रीगोवर्धनरङ्गाचार्य जी महाराज,** वृन्दावन द्वारा स्वीकृत पाठविधि परम्परया दास को भी प्राप्त हुई है। दास के परमाचार्य एवं जगदाचार्य, उभयवेदान्त के अद्वितीय विद्वान्, **अनन्त श्रीविभूषित त्रिदण्डी श्री शठकोप रामानुज जीयर स्वामी जी महाराज,** सहस्रधारा, नेपाल के द्वारा कर्मकाण्ड पर संगृहीत हवनपद्धति आदि पुस्तकों का विशेष आश्रय करके और आपके सान्निध्य के अवसर पर प्राप्त कृपाप्रसाद का अनुसरण करते हुए प्रस्तुत ग्रन्थ में पूजापद्धति अपनायी गई है साथ ही अनन्त श्रीविभूषित **वै.वा. स्वामी श्री परांकुशाचार्य जी महाराज,** मथुरा के

द्वारा अनुगृहीत **भगवत्प्रतिष्ठापद्धति** का बहुत्र आश्रयण किया गया है। स्वाचार्यवर्य श्रीमदुभयवेदान्ताचार्य षडाचार्य विद्वान् अनन्तश्रीविभूषित वै.वा. **श्री श्रीनिवास मुक्तिनारायण रामानुज जीयर (श्रीधराचार्य) स्वामी जी महाराज**, नेपाल ने बाल्यकाल्य में ही दास को इस अनुष्ठान में अंगुली पकड़कर प्रवृत्त कराया था और आपके सान्निध्य में अनेकशः प्रायोगिक रूप में भी कुछ सीखने-जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उसका सार-ग्रहण किया गया है। यही इसकी प्रामाणिकता है।

श्री मुक्तिनाथपीठाधीश्वर अनन्त श्रीविभूषित स्वामी **श्री कमलनयनाचार्य जी महाराज** के द्वारा इस पद्धति को लिपिबद्ध करने की प्रेरणा बारम्बार प्राप्त हुई है। अतः उक्त सभी आचार्यों, स्वाचार्य एवं परमाचार्य का मंगलानुशासन दास को प्राप्त है।

अवधानता

श्रीसुदर्शनशतक के पारायण के प्रारम्भ में भी आसनशुद्धि, आचमन, प्राणायाम, षडक्षरजप, सुदर्शनगायत्रीजप, सुदर्शनकवच करके श्रीसुदर्शनशतक का पारायण करना चाहिए। अन्त में भी षडक्षरजप, सुदर्शनगायत्रीजप एवं कवच का पारायण करना चाहिए। अर्थात् जब पारायण करने के लिए बैठ जायें तो पहले षडक्षरादि करें और बीच जितने शतक पाठ करने हैं, उतने पाठ करके अन्त में फिर षडक्षरजप आदि करें। यदि पाठ के बीच में अन्य कोई वार्ता करते हैं तो वह पाठ खण्डित माना जाता है, अतः ऐसे पाठ की गणना न करें। आचार्य एवं यजमान शुचिता, शुद्धता और स्वच्छता पर अवश्य ध्यान दें। निर्मल तन और मन से किये गये कार्य शीघ्र फलदायक होते हैं।

उच्चारण की शुद्धता

उच्चारण के सम्बन्ध में हमें दाक्षिणात्यपद्धति बहुत अच्छी लगती है। शर् प्रत्याहार (श, ष, स) के परे रहने पर विसर्ग के स्थान पर श्, ष्, स् उच्चारण करने में सरलता है और व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध भी नहीं है- **वा शरि** (पाणिनीय सूत्र)। यही पद्धति यहाँ भी शतक में अपनायी गई है किन्तु अर्धशकारादि के परे असन्देहार्थ वह पद्धति नहीं अपनाई है। य, व, ल के परे होने पर पूर्व में विद्यमान अनुस्वार का यँ, वँ, लँ उच्चारण करने पर सौष्ठव है। जैसे- श्लोकसंख्या ५८ में **पर्याप्तामुन्नतिं या** की जगह **पर्याप्तामुन्नतिय्ँया** इस तरह से उच्चारण करने पर सरलता होगी। अन्यत्र अनुस्वार का परसवर्ण उच्चारण ही ठीक रहेगा। जैसे- **दग्धानां दानवानां** की जगह **दग्धानान्दानवानां** एवं **दुरितशतं द्योतमाना** की जगह **दुरितशतन्द्योतमाना** तथा **भूमानं भूयसां** की जगह **भूमानम्भूयसाम्** आदि उच्चारण करने का प्रयत्न करें। ह्रस्व, दीर्घ, शकार आदि के उच्चारण और बकार एवं वकार के उच्चारण पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

उत्तरभारत में शब्दसिद्धि पर तो ध्यान दिया जाता है किन्तु उच्चारण पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जाता है, जिससे गलत उच्चारण हो जाने के कारण अर्थ का अनर्थ हो जाता है। फलतः कार्यसिद्धि सन्दिग्ध हो जाती है। अतः **पारायणकर्ता पहले किन्हीं योग्य विद्वानों से पढ़ लें, उच्चारण करना सीख लें और हो सके तो अर्थ का ज्ञान भी कर लें। तभी अनुष्ठान में लगें, यह मेरा निवेदन है।**

पारायणकर्ताओं से निवेदन

अनुष्ठान-काल में ब्रह्मचर्य, अधःशय्या, नख-केश आदि न काटना, हविष्यान्न का आहार होना जरूरी है। शुचिता और स्वच्छता का भी अनुष्ठान में ध्यान रखना चाहिए। यजमान के अतिरिक्त परान्नभोजन नहीं करना चाहिए। पारायण के बीच में वार्तालाप करना अत्यन्त निषेध है। यदि आप मनोयोग से और विधिविधान से अनुष्ठान करेंगे तो आपको भी यश और धन मिलेगा और यजमान की भी कार्यसिद्धि होगी। यदि निष्काम भाव से मात्र भगवन्मुखोल्लासार्थ करते हैं तो कहना ही क्या है?

यजमान-महानुभावों से

यजमान-बन्धुओं को सूचित करना चाहते हैं कि आप योग्य एवं सदाचारी तथा विश्वासी आचार्य का चयन करें और उनसे अनुष्ठान कराने पर उन्हें दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट करें। अपनी शक्ति के अनुसार पर्याप्त दक्षिणा दें, तभी आपके कार्य सिद्ध होंगे। ब्राह्मण के परिश्रम के अनुसार उन्हें दक्षिणा नहीं मिली तो आपको फल नहीं मिलेगा। यद्यपि दक्षिणा कितनी होनी चाहिए, यह निश्चित नहीं है तथापि जैसे अत्यन्त गरीब, सामान्य गरीब, मध्यवर्ग एवं उच्चवर्ग के लोग अपनी कन्या की शादी में अपने सामर्थ्य के अनुसार ही खर्च करते हैं अर्थात् सबके लिए एक ही मापदण्ड का खर्च नहीं होता। उसी प्रकार यजमान भी अनुष्ठानों में अपने सामर्थ्य के अनुसार खर्च करें अर्थात् वित्तशाठ्य(पर्याप्त दान-दक्षिणा का समर्थ होते हुए भी कंजूसी) न करें जिससे अनुष्ठान का पूर्णफल आपको मिल सके। अनुष्ठान में आचार्य एवं यजमान दोनों सन्तुष्ट हों तो ही कार्य सिद्ध होंगे। दोनों के बीच में व्यावसायिक रूप न होकर स्वकर्तव्यपालन का भाव होना चाहिए। अथवा यूँ कहा जाय कि यजमान ने बहुत कम दिया तो भी ब्राह्मण लोग यह समझें कि मुझे यजमान ने बहुत-बहुत दिया। इसी प्रकार यजमान ने ब्राह्मणों को बहुत कुछ दिया हो पर वह मन में यह भाव रखे कि मैंने विद्वान् ब्राह्मणों को कुछ भी नहीं दिया। इस तरह उदात्तभाव रखकर अनुष्ठान किया जाय तो आचार्य एवं यजमान दोनों फलितार्थ होंगे। आज कल कुछ ब्राह्मण यजमानों से वञ्चना करते हैं तो कुछ यजमान ब्राह्मणों से वञ्चना करते हैं। ऐसे तामसी यजमान और ब्राह्मणों से बचे रहना चाहिए। तात्पर्य यह है कि **अनुष्ठान जैसे पवित्र कार्य को कतई व्यवसाय का रूप न दिया जाय।**

यह परम सत्य है कि भागवतों के मुखोल्लास के विना आचार्य का मुखोल्लास नहीं होता और आचार्य के मुखोल्लास के विना भगवान् का मुखोल्लास नहीं होता है। भगवान् के मुखोल्लास के विना कार्य कैसे सिद्ध होंगे? अत: भगवान्, भागवत एवं आचार्य मुखोल्लास पूर्वक भगवत्कैंकर्यार्थ कार्यसिद्धि के रूप में अनुष्ठानों का अनुष्ठान करने में निष्कामता की हानि नहीं होगी।

साधुवाद

इस पुस्तक के लिपिबद्ध होने के बाद पाणिनीय-व्याकरण में दास से षष्ठी-प्रथमा आदि प्राप्त कर चुके वर्तमान में **श्री हयग्रीव पीठ,** अयोध्या के महान्त **स्वामी श्री रघुनाथ देशिक जी महाराज** को दिखाया तो उन्होंने इसके प्रकाशन का दायित्त्व सहर्ष अपने ऊपर ले लिया और आपके ही प्रयत्न से यह कार्य साकार रूप को प्राप्त हुआ है। अत: शिष्य होने के नाते और महान्त होने के नाते भी आप मंगलानुशासन के सुपात्र हैं। आपकी प्रेरणा से ही वैकुण्ठवासी परमभागवत **श्री बिरधिचन्द जी अग्रवाल** (श्रीमद्वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्योभयवेदान्त प्रवर्तकाचार्य अनन्त श्रीविभूषित गादी स्वामी **श्री अनन्ताचार्य जी महाराज** के अनन्य कृपापात्र) एवं आपके ही सुपुत्र वैकुण्ठवासी परमभागवत **श्री घनश्याम दास जी** की स्मृति में जयपुर के निष्काम भक्त दासानुदास श्रीवैष्णव परिवार के पत्रपुष्परूप कैंकर्य से पुस्तक का प्रकाशन हो सका है। इस प्रकार का कैंकर्य इस परिवार से निरन्तर होता रहे और भगवद् भागवत एवं आचार्य के मुखोल्लासार्थ यह परिवार को आयुष्य, आरोग्य के साथ महालक्ष्मी जी की कृपा प्राप्त होती रहे, यह दास की ओर से मंगलानुशासन है। यह उल्लेखनीय है कि आप दोनों ही परम भागवत श्रीवैष्णव सन्त, महात्मा, आचार्य एवं भागवतों को अत्यन्त ही श्रद्धाभाव से सेवा करते थे। आपकी श्री गादी स्वामी जी एवं वहाँ के सभी आचार्यों में अगाध श्रद्धा थी ही, साथ ही श्रीवृन्दावन धाम श्रीरंगमन्दिर एवं श्री स्वामी जी महाराज के प्रति उतनी ही आस्था थी। वैष्णवाचार्यों एवं श्रीवैष्णवों की सेवा में अहर्निश संलग्न ऐसे महानुभावों का जीवन चरित्र हम सभी लोगों के लिए अनुकरणीय है।

इस संस्करण के सम्बन्ध में

लेखन से लेकर अक्षरसंयोजन, प्रूफ आदि सभी प्रकार के कार्यों में पूर्णतया सहयोग प्रदान करने वाले आत्मीय सहयोगी **श्री सुदर्शनाचार्य जी, आचार्य श्री केशवशरण अर्याल जी, श्री गोविन्द अधिकारी जी, श्री भवानी शंकर मिश्र जी, श्री बालकृष्ण रेग्मी, खगेन्द्र दुलाल** आदि महानुभावों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन करना दास का परम कर्तव्य है।

इस पुस्तक के बाद श्रीवैष्णवीय पद्धति के अनुसार सभी प्रकार के कर्मकाण्ड, अनुष्ठान आदि विषयों पर एक पुस्तक लगभग तैयार है। इस पर सभी विद्वानों के परामर्श एवं सुझाव अपेक्षित है एवं लक्ष्मीकृपासम्पन्न प्रकाशक महानुभावों की प्रतीक्षा है।

प्रस्तुत पुस्तक के इस संस्करण में यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो मानवसुलभ दोष समझकर विज्ञ आचार्यगण दास को क्षमादान देंगे। इस पुस्तक में विद्यमान त्रुटियाँ मेरी असावधानता के कारण हैं और अन्य पुस्तकों की अपेक्षा कुछ अच्छाई है तो वह भगवद्-भागवत-आचार्यों का अनुग्रह है।

अपनी बात

वेद, वेदाङ्ग, वेदान्त के एक हजार प्रकाण्ड विद्वान् तैयार करने का संकल्प लेना दास जैसे क्षुद्र पामर जीव की एक धृष्टता ही है फिर भी भगवत्कृपा एवं भागवत तथा आचार्यों का अनुग्रह मिलने पर अवश्य यह असम्भव नहीं होगा। इसी क्रम में दिल्ली, चण्डीगढ़, पञ्चकूला, भिवानी, पनवेल(मुम्बई) और मैसूर में पाठशालाएँ संचालित हो रही हैं। खासकर के मैसूर, कर्नाटक में **उभयवेदान्ताचार्य विद्वान् स्वामी श्री के. एस. वरदाचार्य जी** महाराज के सान्निध्य में न्याय एवं विशिष्टाद्वैत वेदान्त के वर्तमान में दस छात्र अध्ययनरत हैं। इसके संचालन में आई आर्थिक समस्या की ओर लक्ष्मीकृपासम्पन्न भागवतों का ध्यान जाना परम आवश्यक है। आज सर्वत्र श्रीवैष्णवीय परम्परा में खासकर पठन-पाठन एवं उत्तर-भारत में कर्मकाण्ड में बहुत कमी आई है। अतः सभी भागवतों एवं आचार्यों का इस ओर चिन्तन होना परमावश्यक है।

अन्ततः यही कहना है कि नीरक्षीरविवेकी विद्वानों एवं आचार्यो का अनुग्रह प्राप्त होता रहे एवं विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त एवं श्रीवैष्णवीय आराधना पद्धति का पठन-पाठन, अनुष्ठान चलता रहे और **श्रीरामानुजार्यदिव्याज्ञा वर्धतामभिवर्धताम्** को सार्थक करने में सभी भागवत, महाभागवतों का सहयोग प्राप्त हो।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः॥

विदुषां वशंवदः

गोविन्दाचार्यः (श्रीनिवास रामानुज दास)

श्री मुक्तिनाथ पीठ वेद विद्याश्रम, 6 मारवाड़ी घाट,
कुदसिया घाट, बेला रोड़, दिल्ली-54

दिनांकः- मकर संक्रान्ति **२०६१** 14 जनवरी 2005

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ-संख्या
१.	पूजनप्रारम्भः	१
२.	स्वस्तिवाचनम्	४
३.	प्रतिज्ञासङ्कल्पः	५
४.	कलशप्रतिष्ठा	७
५.	विष्वक्सेनपूजनम्	१०
६.	वरुणकलशपूजनम्	१२
७.	पुण्याहवाचनम्	१४
८.	चक्राब्जमण्डलपूजनम्	१८
९.	श्रीसुदर्शनाराधनम्	२३
१०.	श्रीसुदर्शनाष्टोत्तरनामावली	३२
११.	श्रीसुदर्शनमन्त्राराधनविधिः	३८
१२.	श्रीसुदर्शनकवचम्	४१
१३.	श्रीसुदर्शनशतकम्	४८
१४.	होमविधिप्रारम्भः	६८
१५.	पुरुषसूक्तादिहोमः	७४
१६.	वैकुण्ठपार्षदनामभिर्होमः	८९
१७.	दशांशतर्पणं मार्जनं च	९४
१८.	पूर्णाहुतिः	९५
१९.	ब्रह्मादिविसर्जनम्	९६
२०.	पूर्णपात्रदानम्	९७
२१.	श्रीमद्भगवद्भागवताचार्यवैभवम्	९९

पूजा सामग्री

रंगवल्ली के लिए सफेद, लाल, पीला चूर्ण या आटा, हल्दी आदि।

कलश ३ छोटे और १ बड़ा पूर्णपात्र सहित,			पंचपात्र, आचमनी
श्रीचूर्ण(रोली)	रक्षाबन्धन(मोली)	धूप	अगरवत्ती
कपूर	रूई	माचिस	छोटी सुपारी २५० ग्राम
नारियल ५	यज्ञोपवीत २१	लौंग, इलायची	पान के पत्ते १५ प्रतिदिन
दूर्वा(दूब)	तुलसीपत्र	फूल, मालाएँ	कुश
देशी घी	जौ	तिल	इत्र

भगवान सुदर्शन की सुवर्ण प्रतिमा या शक्ति के अनुसार अन्य धातु की प्रतिमा।

पञ्चरत्न- (सोना, हीरा, मोती, पद्मराग, नीलम) न मिलने पर केवल सोना।

पञ्चामृत- दूध, दही, घी, शहद, शक्कर।

पञ्चपल्लव- आम, पीपल, बरगद, गूलर, पाकड़ के पत्ते, (अभाव में आम के पत्ते)।

सप्तधान्य- जौ, धान, तिल, कँगनी, मूँग, चना, सावाँ। (अभाव में केवल जौ)

सवौषधी- मुरा, जटामांसी, वच, कुष्ठ, शिलाजीत, हल्दी, सोंठ, चम्पक और मुस्ता (न मिलने पर पर, हल्दी मात्र।)

सप्तमृत्तिका- घुड़साल, हाथीसाल, बांबी, नदियों के संगम, तालाब, राजद्वार और गौशाले की मिट्टी। (न मिलने पर तुलसी की जड़ की मिट्टी।)

कलशों के लिए वस्त्र धोती, गमछा, उत्तरीय वस्त्र आदि।

सफेद कपड़ा ३ मीटर, लाल कपड़ा ३ मीटर। चौकी १ गज की २,

भगवान् श्री सुदर्शन जी के लिए वस्त्र, धोती, गमछा, चद्दर, उत्तरीय।

श्री विजय लक्ष्मी जी के लिए सौभाग्य वस्त्र साड़ी, आभूषण, श्रृंगार आदि अपने सामर्थ्य एवं श्रद्धा के अनुसार।

भोग के लिए मिष्ठान्न और खीरान्न का भोग अवश्य लगना चाहिए।

ब्राह्मणसंख्यानुसार वरण हेतु वस्त्र, यज्ञोपवीत, आसन, पंचपात्र, आचमनी आदि।

हवन हेतु

काले तिल	चावल	जौ,	चावल,
मेवा	शक्कर	गरी गोला	हवन सामाग्री
वेलगिरि	गुग्गुल	कमलगट्टा	केशर
अबीर	गुलाल	हवन की समिधा	पूर्णपात्र एवं घृतपात्र

हवन के लिए गौ के दूध में निर्मित खीरान्न।

इसके अतिरिक्त- स्रुक्, श्रुवा, प्रोक्षणी, प्रणीता, कुशा आदि। (आचार्यद्वारा)

बैठने के आसन, थालियाँ, दोनें, कटोरियाँ, चम्मच, लोटा आदि। (यजमानद्वारा)

।।श्रीमते रामानुजाय नमः।।
।।श्रियै नमः।।श्रीधराय नमः।।
।।श्रीविजयलक्ष्मीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः।।

श्रीसुदर्शनानुष्ठानम्

स्वाचार्यं श्रीधरं शान्तं षडाचार्यं यतिं गुरुम्।
श्रीनिवासं मुक्तिनारायणं रामानुजं भजे।।

अनुष्ठानकर्ता यजमानो वा कृतस्नानसन्ध्यावन्दनभगवदाराधनादिक्रियः शुभमूहूर्ते पवित्रस्थाने मन्दिरे स्वगृहे वा शुभासने उपविश्य पूजासम्भारान् एकत्रीकृत्य चक्राब्ज-मण्डलादिकं विरच्य रङ्गवल्यादिभिः पूजास्थानमलङ्कृत्य प्रारभेत्-

परम्परादिस्मरणम्

लक्ष्मीनाथसमारम्भां नाथयामुनमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्।।

तस्मै रामानुजार्याय नमः परमयोगिने।
यः श्रुतिस्मृतिसूत्राणामन्तर्ज्वरमशीशमत्।।

यस्य द्विरदवक्त्राद्याः पारिषद्याः परश्शतम्।
विघ्नं निघ्नन्ति सततं विष्वक्सेनं तमाश्रये।।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

यस्य स्मरणमात्रेण विद्रवन्ति सुरारयः।
सहस्रार नमस्तुभ्यं विष्णुपाणितलाश्रय।।

शरीरे जलसेचनम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु,
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आसनपवित्रीकरणम्

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

आचमनम्

ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः
हस्तौ प्रक्षालयेत्- ॐ गोविन्दाय नमः।

पवित्रधारणम्

ॐ पवित्रेस्थो व वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

प्राणायामः

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिः, देवी गायत्रीच्छन्दः, परमात्मा देवता, सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि, अग्नि-वायु-सूर्य-बृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवा देवताः, तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, सविता देवता, आपोज्योतिरिति शिरसः प्रजापतिर्ऋषिः, यजुश्छन्दः, ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः, सर्वेषां प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्, ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतम्। ब्रह्म भूर्भुवःस्वरोम्।

भूतशुद्धिः

वामहस्ते पीतसर्षपान् गृहीत्वा दक्षिणहस्तेन दशदिक्षु विकिरेत्-

पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुडध्वजः।
याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते॥
वारुण्यां केशवो वायव्यां मधुसूदनः।
उत्तरे श्रीधरो रक्षेदैशान्यां तु गदाधरः।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः।
एवं दशदिशो रक्षेद् वासुदेवः सनातनः॥
अपसर्पन्तु ये भूता ये भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन शान्तिकर्म समारभे॥

कर्मपात्रस्थापनम्

गन्धेन भूमौ शङ्खचक्रे विलिख्य तदुपरि पुष्पं कुशं च संस्थाप्य तदुपरि कर्मपात्रं स्थापयित्वा मन्त्रान् पठेत्-

ॐ यद्देवादेवहेडनन्देवासश्चकृमा व्वयम्।
अग्निर्म्मा तस्मादेनसो व्विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः॥१॥
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा व्वयम्।
व्वायुर्म्मा तस्मादेनसो व्विश्वान् मुञ्चतꣳहसः॥२॥
ॐ यदिजाग्रद्यदिस्वप्नऽएनाꣳसि चकृमा व्वयम्।
सूर्य्यो मा तस्मादेनसो व्विश्वान् मुञ्चतꣳहसः॥

पवित्रस्थापनम्-

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

जलस्थापनम्-

ॐ शन्नो देवीरभीष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शँय्योरभिस्रवन्तु नः।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

तत्र तिलस्थापनम्-

ॐ तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः।
प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृँल्लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा।

तत्र गन्धस्थापनम्-

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

तत्र अक्षतस्थापनम्-

ॐ अक्षन्नमी मदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान् विन्द्रते हरी।

तत्र पुष्पस्थापनम्

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण॥

ततः कर्मपात्रस्थाभिमन्त्रितजलेन यज्ञीयद्रव्यं यजमानमात्मानञ्चाभिषिञ्चेत्-

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।

स्वस्तिवाचनम्

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥१॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाथ्ठं रातिरभिनो निवर्तताम्।
देवानाथ्ठं सख्यमुपसेदिमावयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥२॥
तान्पूर्वया निविदा हूमहे व्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं वरुणथ्ठंसोममश्विनासरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥३॥
तन्नो व्वातो मयोभुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या युवम्॥४॥
तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्।
पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥५॥
स्वस्ति नऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥६॥

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो व्विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्वे नो देवाऽअवसागमन्निह॥७॥
भद्रं कर्ण्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥
शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवाऽअदितिः पञ्च जनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥
यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

प्रतिज्ञासङ्कल्पः

हरिः ॐ तत्सत् तत्सत् तत्सत् गोविन्दो गोविन्दो गोविन्दः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य श्रीभूनीलानायकस्य सौशील्यादिसकल-कल्याणगुणसमलङ्कृतस्य तस्य श्रीमन्नारायणस्य नाभिकमले समुद्भवस्य भगवदाज्ञया जगत्सृष्टिं कुर्वतोऽखिललोकपितामहस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथमे मासे प्रथमे पक्षे प्रथमे दिवसे दिनस्य द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे......संवत्सरे श्रीमन्नृपति-विक्रमादित्यराज्याद्........तम-संख्याके वर्तमाने वत्सरे श्रीरामानुजप्रादुर्भावाद् ....तम-संख्याके वर्तमाने ....अयने .... ऋतौ ....मासे........पक्षे ....तिथौ.......वासरे................ नक्षत्रे ....योगे......... करणे..........राशिस्थिते चन्द्रे........राशिस्थिते .... सूर्ये ....राशिस्थिते देवगुरौ अन्येषु ग्रहेषु यथायथास्थानस्थितेषु सत्सु एवङ्गुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ जम्बूद्वीपे भातरवर्षे ......राज्ये................नद्याः समीपे .... नगरे/ग्रामे.........देवसन्निधौ

वर्तमानः ....वेदान्तर्गत.........शाखाध्यायी..........प्रवरान्वितः...... गोत्रोत्पन्नः.........नक्षत्रे........राशौ जातः...............नामाहं भगवतो बलेन भगवतो वीर्येण भगवतस्तेजसा भगवद्भागवताचार्यमुखोल्लासपूर्वकं ....कार्यसिद्ध्यर्थं भगवत्प्रार्थनारूपेण श्रीसुदर्शनशतकानुष्ठानं (श्रीसुदर्शनशतकस्य..... संख्याकावृत्तिपारायणम् अथवा ....मन्त्रेण सम्पुटितं ......संख्याकावृत्तिपारायणम् एकाहेन, पञ्चाहेन, सप्ताहेन, ...दिनैर्वा) (स्वयम्) आचार्यादिब्राह्मणद्वारा वा अहं करिष्ये/कारयिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं श्रीविष्वक्सेनपूजनं कलशपूजनं, गृहशरीरादिशुद्ध्यर्थं पुण्याहवाचनं (चक्राब्जमण्डलपूजनं) अन्ते प्रधानदेवश्रीविजयलक्ष्मीसमेतचक्रराजसुदर्शनपूजनं च करिष्ये।

ततो गृहशरीरादिशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तार्थं गां (हिरण्यं, गोनिष्क्रयभूतद्रव्यं वा) ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे इति ब्राह्मणेभ्यो दद्यात्। श्रीसूत्रवतीसहिताय श्रीमते विष्वक्सेनाय नमः, कर्मण्यविघ्नमस्तु।

भू-वराहानन्त-कूर्मपूजनम्

भूमौ गन्धाक्षतैः सम्पूजयेत्- ॐ भूवराहानन्तकूर्मेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाक्षतान् समर्पयामि। अनन्तकोटिनमस्कारान् समर्पयामि।

दीपपूजनम्

ॐ पृष्ठो दिवि पृष्ठोऽअग्निः पृथिव्याम्पृष्टो विश्वाऽओषधीराविवेश। वैश्वानरः सहसा पृष्टोऽअग्निः स नो दिवा सरिषस्पातु नक्तम्।। ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा सूर्यो व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

इति प्रज्वाल्य गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य प्रणमेत्-

ॐ स्थिरो भव व्वीड्वङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन्।
पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्ने पुरीषवाहनः।।
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः।।

कलशप्रतिष्ठा

विष्वक्सेनकलशो वरुणकलशः पुण्याहवाचनकलशः प्रधानदेवकलशश्चेति चत्वारः कलशाः स्थाप्याः। तेषाम् एकत्र सहैव प्रतिष्ठां विधाय पुनः यथावसरं तत्र तत्र स्थापनीयाः।

कलशभूमिप्रार्थना-

ॐ भूमिर्भूम्ना द्यौर्वरिणान्तरिक्षम्महित्वा।

उपस्थे ते देव्यदितेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।

धान्यास्तरणम्-

ॐ धानावन्तङ्करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्रप्रातर्जुषस्वनः।

कलशस्थापनम्

ॐ आजिघ्र कलशम्मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जानिवर्तस्वसानः सहस्रन्धुक्षोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः॥

कलशे जलपूरणम्-

ॐ अपो देवीरुपह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः। सिन्धुभ्यः कर्त्वंꣳहविः।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

कलशदृढीकरणम्-

ॐ स्थिरो भव व्वीड्वङ्गऽआशुर्भ्भव वाज्यर्वन्।

पृथुर्भ्भव सुखदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहनः।

पञ्चपल्लवनिक्षेपः-

अश्वत्थेवो निषदनम्पर्णेवो वसतिष्कृता।

गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।

कुशकूर्चनिक्षेपः-

ॐ पवित्रन्ते विततम्ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि व्विश्वतः।

अतप्ततनुर्नतदामोऽअश्नुते श्रृतासऽइद्वहन्तस्तत्समासते॥

दूर्वानिक्षेपः-

ॐ सहस्रपरमा देवी शतमूला शताङ्कुरा।

सर्वं हरतु मे पापं दूर्वा दुःस्वप्ननाशिनी॥

फलनिक्षेपः-

ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वꣳहसः।

सर्वौषधिनिक्षेपः-

ॐ याऽओषधीः पूर्व्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनैनु बब्भ्रूणा महꣳशतन्धामानि सप्त च॥

पञ्चरत्ननिक्षेपः-

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥

गन्धनिक्षेपः-

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करिषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

सप्तमृत्तिकानिक्षेपः-

ॐ मृत्तिके प्रतिष्ठितं सर्वं तन्मे निर्णुद मृत्तिके।
त्वया हतेन पापेन गच्छामि परमां गतिम्॥

कलशमुखे तण्डुलपूरित-पूर्णपात्रस्थापनम्-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

पूर्णपात्रोपरि श्रीफलस्थापनम्-

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः॥

कलशे वस्त्रवेष्टनम्-

सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः।
व्वासोऽअग्ने व्विश्वरूपꣳसंव्ययस्व व्विभावसो॥

घटेषु चतुरो वेदानावाहयेत्- तत्र पूर्वे ऋग्वेदम्-

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्। ऋग्वेदमावाहयामि।

दक्षिणे यजुर्वेदम्-

ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वा व्वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय
कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मामा-

वस्तेनऽईशतमाघशꣳसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि। यजुर्वेदमावाहयामि।

पश्चिमे सामवेदम्-

ॐ अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
निहोता सत्सि बर्हिषि। सामवेदमावाहयामि।

उत्तरे अथर्ववेदम्-

ॐ शन्नो देवीरभीष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः। अथर्ववेदमावाहयामि।

पीताक्षतैः कलशप्रतिष्ठां कुर्यात्-

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ। एष वै प्रतिष्ठानामयज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति।

कलशप्रार्थना-

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा सपैतृकाः॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः॥
कलशाधिष्ठितेभ्यः सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे पुष्पाक्षतान् समर्पयामि। अनन्तकोटिनमस्कारान् समर्पयामि।

इति कलशप्रतिष्ठा।

अथ विष्वक्सेनपूजनम्

एकस्मिन् प्रतिष्ठिते कलशे सप्तदर्भनिर्मितं कूर्चं निधाय तत्र पीताक्षतैः सपरिवारं सूत्रवतीसहितं श्रीमन्तं विष्वक्सेनमावाहयेत्-

ॐ व्विष्वकर्मन् हविषा व्वावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुतद्याम्।
मुह्यन्त्वन्येऽअभितः सपत्नाऽइहास्माकं मघवा सूरिरस्तु॥

आवाहयामि सेनेशं शङ्खचक्रगदाधरम्।
अतसीपुष्पसङ्काशं पीतवाससमच्युतम्॥
एहि मे देवदेवेश भक्तरक्षणतत्पर।
गजाननादिसहितः सूत्रवत्या सह प्रभो॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सूत्रवतीसहिताय भगवते विष्वक्सेनाय नमः।
श्रीसूत्रवत्यादिसहितं विष्वक्सेनमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

तत्रैव विष्वक्सेनपारिषद्यान् आवाहयेत्-

ॐ गं गजाननाय नमः, गजाननमावाहयामि।
ॐ जं जयत्सेनाय नमः, जयत्सेनमावाहयामि।
ॐ हं हरिमुखाय नमः, हरिमुखमावाहयामि।
ॐ कं कालप्रकृतये नमः, कालप्रकृतिमावाहयामि।
ॐ बं बलाय नमः, बलमावाहयामि।
ॐ प्रं प्रबलाय नमः, प्रबलमावाहयामि।
ॐ विं विनायकाय नमः, विनायकमावाहयामि।
ॐ विं विघ्नेशाय नमः, विघ्नेशमावाहयामि।

प्राणप्रतिष्ठा-

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमन्दधातु। व्विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ। एष वै प्रतिष्ठानामयज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति।
सूत्रवतीसहितं सपरिजनं विष्वक्सेनं प्रतिष्ठापयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, मुखे आचमनीयं समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, सर्वाङ्गे स्नानीयं समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, पञ्चामृतेन स्नापयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, शुद्धोदकेन स्नापयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, गन्धं समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, धूपमाघ्रापयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य तुलसीदलानि समर्प्य जलेन मण्डलीकृत्य निवेदयेत्-

श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, आपोशनं समर्पयामि।
ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।
ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, मध्ये मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, उत्तरापोशनं समर्पयामि।
श्रीसूत्रवतीसहिताय विष्वक्सेनाय नमः, करोद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि।
ऋतुफलं समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। दक्षिणां समर्पयामि।

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः-

विष्वक्सेन नमस्तेऽस्तु सर्वेषाञ्च शुभप्रद।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण गणनायक॥
ॐ विष्वक्सेनाय विद्महे वेत्रहस्ताय धीमहि। तन्नः सेनेशः प्रचोदयात्।
सर्वोपचारार्थे मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनन्तकोटिनमस्कारान् समर्पयामि, भक्तिं भावयामि, प्रणमामि मुहुर्मुहुः।

वरुण-कलश-पूजनम्

एकस्मिन् प्रतिष्ठिते कलशे वरुणमावाहयेत्-

ॐ इमम्मे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।
ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो व्वरुणेहबोध्युरुषꣳसमानऽआयुः प्रमोषीः।
अस्मिन् कलशे साङ्गं सपरिवारं वरुणमावाहयामि।
ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ। एष वै प्रतिष्ठानामयज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति। साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, साङ्गं सायुधं सवाहनं सपरिवारं भगवत्पार्षदं वरुणं प्रतिष्ठापयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, मुखे आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, सर्वाङ्गे स्नानीयं जलं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, पञ्चामृतेन स्नापयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, शुद्धोदकेन स्नापयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, गन्धं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, धूपम् आघ्रापयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, दीपं दर्शयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, आपोशनं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, मध्ये-मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, उत्तरापोशनं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, करोद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, ऋतुफलं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।
ॐ भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

ततः प्रार्थयेत्-

त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहस्ताय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावच्चात्र स्थिरो भव॥

सर्वोपचारार्थे मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय भगवत्पार्षदाय वरुणाय नमः, अनन्तकोटिनमस्कारान् समर्पयामि, भक्तिं भावयामि, प्रणमामि मुहुर्मुहुः।

आचार्यादिवरणम्

पूगीफलवस्त्रदक्षिणादिकमादाय ब्राह्मणवरणं कुर्यात्-

ॐ तत्सत् ३, विष्णुः३, अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकनामाहं मम सुदर्शनानुष्ठानकर्मणि पुण्याहवाचनपूर्वकपारायणादिकर्म कर्तुं आचार्यादिवरणम् एभिर्वस्त्रैर्द्रव्यैश्चाहं करिष्ये।
........गोत्रं ....नामानं ब्राह्मणम् आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।

एवं प्रकारेण आचार्याय वस्त्रादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

शक्रादीनां यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पति।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत॥

तदनन्तरं ब्रह्मवरणं ऋत्विग्वरणं च कुर्यात्-

.......गोत्रं ....शर्माणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।
...........गोत्रं ......शर्माणं पारायणकर्तृकत्वेन त्वामहं वृणे।

ततो ब्राह्मणः वृतोऽस्मि, एवं ब्राह्मणाः वृताः स्म इति प्रतिब्रूयुः।

पुण्याहवाचनम्

पुण्याहे चतुरो ब्राह्मणान् दर्भहस्तान् पुरत उपवेश्यार्चयेत्-

यजमानः- **पुष्पाणि पान्तु,** विप्राः- **सौमनस्यमस्तु।**

यजमानः- **गन्धाः पान्तु,** विप्राः- **सौमङ्गल्यमस्तु।**

यजमानः- **अक्षताः पान्तु** विप्राः- **अरिष्टमरिष्टं चास्तु।**

यजमानः- **सफलताम्बूलानि पान्तु** विप्राः **ऐश्वर्यमस्तु।**

यजमानः- **दक्षिणाः पान्तु** विप्राः- **बहुदेयं चास्तु।**

यजमानः- **भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।**

विप्राः- **वाच्यताम्।**

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

(देशकालादिकमुच्चार्य)..................गोत्रोत्पन्नः...........**नामाहं सुदर्शनानुष्ठानकर्मणि भगवदाज्ञया भगवत्प्रीत्यर्थं यागोपकरण-शरीरादिशुद्ध्यर्थं पुण्याहवाचनमहं करिष्ये।**

यजमानः जानुनी भूमौ निपात्य अञ्जलिं बद्ध्वा प्रार्थयेत्-

यजमानः- **व्रतजपतपःस्वाध्यायक्रतुदयादानदमनियमसम्पन्नानां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।**

विप्राः- **समाहितमानसाः स्मः।**

यजमानः- **प्रसीदन्तु भवन्तः।**

विप्राः- **प्रसन्नाः स्मः।**

यजमानः- **भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।**

विप्राः- **वाच्यताम्।**

तत उदककुम्भं वामहस्ते निधाय दक्षिणहस्तेन पिधाय, अथवा दर्भैरुपरि स्पृष्ट्वा प्रार्थयेत्-

यजमानः- **भो ब्राह्मणाः! मम गृहे सुदर्शनानुष्ठानकर्मणि पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

विप्राः- **पुण्याहमस्तु पुण्याहमस्तु पुण्याहमस्तु।**

ॐ पुनस्त्वादित्यारुद्रा व्वसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथयज्ञैः।
घृतेन त्वन्तन्वं व्वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥

यजमानः- भो ब्राह्मणाः! मम गृहे सुदर्शनानुष्ठानकर्मणि स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः- स्वस्त्यस्तु, स्वस्त्यस्तु स्वस्त्यस्तु।

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा व्विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यर्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु॥

यजमानः- भो ब्राह्मणाः! मम गृहे सुदर्शनानुष्ठानकर्मणि ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः- ऋद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु।

ॐ ऋध्यामस्तोमं सनुयाम व्वाजमानो मन्त्रं सरथे होपयातम्।
यशो न पक्वम्मधु गोष्वन्तरा भूतांशोऽअश्विनो कामप्राः॥

ततो यजमानहस्ते स्थितं वा भूमौ स्थितं पुण्याहकलशं ब्राह्मणाः स्वहस्तस्थदर्भाग्रभागैः स्पृशन्त एवं ब्रूयुः-

दर्भैः स्पृशन्तु कलशं ब्राह्मणैस्सह देशिकः।
ततश्च शुद्धिमन्त्रांस्तु पठेदेवं समाहहितः॥१॥
शुद्धयेऽस्तु परो देवो वासुदेवोऽस्तु शुद्धये।
सङ्कर्षणश्शुद्धयेऽस्तु प्रद्युम्नश्चास्तु शुद्धये॥२॥
शुद्धयेऽस्त्वनिरुद्धोऽपि केशवश्चास्तु शुद्धये।
नारायणोस्तु विश्वेशश्शुद्धये सर्वकर्मणाम्॥५॥
शुद्धये माधवश्चास्तु सर्वलोकहिते रतः।
गोविन्दश्शुद्धये चास्तु परमात्मा सनातनः॥४॥
शुद्धये विष्णुरस्त्वाद्यश्शुद्धये मधुसूदनः।
सर्वलोकहितो देवश्शुद्धयेऽस्तु त्रिविक्रमः॥५॥
वामनश्शुद्धये चास्तु श्रीधरोऽद्यास्तु शुद्धये।
शुद्धयेऽस्तु हृषीकेशः पद्मनाभोऽस्तु शुद्धये॥६॥
सदा दामोदरो देवश्शुद्धयेऽस्तु जगत्पतिः।
शुद्धये पद्मनाभोऽस्तु शुद्धयेऽस्तु सदा ध्रुवः॥७॥

अनन्तश्शुद्धये चास्तु शक्त्यात्मा चास्तु शुद्धये।
सर्वकर्मसु चैवास्तु शुद्धये मधुसूदनः॥८॥
सदा विद्याधिदेवोऽस्तु शुद्धये कपिलस्तथा।
शुद्धये विश्वरूपोऽस्तु शुद्धयेऽस्तु विहङ्गमः॥९॥
क्रोडात्मा शुद्धये चास्तु शुद्धये वडवाननः।
शुद्धयेऽस्तु सदा धर्मश्चास्तु वागीश्वरस्तथा॥१०॥
देव एकार्णवशयः शुद्धयेऽस्तु निरन्तरम्।
शुद्धयेऽस्तु सदा देवः कूर्मः पातालधारकः॥११॥
वराहश्शुद्धये चास्तु नारसिंहोऽस्तु शुद्धये।
अमृताहरणस्चास्तु शुद्धये सर्वकर्मणाम्॥१२॥
श्रीपतिश्शुद्धये चास्तु शान्तात्मा चास्तु शुद्धये।
शुद्धये राहुजिच्चास्तु कालनेमिघ्न एव च॥१३॥
पारिजातहरश्चास्तु लोकनाथोऽस्तु शुद्धये।
सर्वत्र शुद्धये चास्तु दत्तात्रेयो महाप्रभुः॥१४॥
न्यग्रोधशायी भगवान् शुद्धये चास्तु सर्वदा।
एकशृङ्गतनुश्चास्तु वामनश्चास्तु शुद्धये॥१५॥
त्रिविक्रमश्शुद्धयेऽस्तु शुद्धयेऽस्तु नरः सदा।
नारायणश्शुद्धयेऽस्तु हरिः कृष्णश्च शुद्धये॥१६॥
ज्वलत्परशुधृग्ग्रामश्शुद्धयेऽस्तु धनुर्धरः।
रामश्च शुद्धये चास्तु वेदविद् भगवाँस्तथा॥१७॥
शुद्धयेऽस्तु सदा कल्की सर्वदोषक्षयङ्करः।
शुद्धयेऽस्तु सदा देवः पातालशयनः प्रभुः॥१८॥
शुद्धये सन्तु सर्वेषां सर्वे सर्वत्र सर्वदा।
एते सर्वे सदा देवाश्शान्तये सन्तु पूजिताः॥१९॥
ऋद्धये पुष्टये सन्तु सिद्धये भक्तयेऽपि च।
शिवाय मुक्तये सन्तु वृद्धये सर्वकर्मणाम्॥२०॥
मन्त्राणां देशिकानाञ्च स्थानानामपि सर्वदा।
पुत्रमित्रकलत्राणां दासीदासगवामपि॥२१॥

वेदशास्त्रागमादीनां वृतानामिष्टसम्पदाम्।
मनोरथानां सर्वेषां हितानां सन्तु सर्वदा॥२२॥
आयुरारोग्यमेधानां धनधान्यादिसम्पदाम्।
पुण्यानामणिमादीनां गुणानां श्रेयसामपि॥२३॥
राज्ञो जनपदस्यापि यजमानस्य मन्त्रिणाम्।
वैष्णवानां विशेषेण परत्र हितमिच्छताम्॥२४॥
पञ्चकालविशुद्धानां सत्त्वस्थानां शुभात्मनाम्।
स्वस्त्यस्तु च शिवञ्चास्तु शुभञ्चास्तु पुनः पुनः॥२५॥
अविघ्नमनिशं चास्तु दीर्घमायुष्यमस्तु वै।
समाहितमनश्चास्तु सम्पदश्चोत्तरोत्तरम्॥२६॥
पुण्याहं शुद्धये चास्तु वासुदेवादिमूर्तयः।
शङ्खचक्रगदापद्मयुक्तस्सर्वेश्वरेश्वरः॥२७॥
प्रीयतां भगवान् देवो लाङ्गली प्रीयतां सदा।
प्रद्युम्नः प्रीयतां नित्यमनिरुद्धस्सुरेश्वरः॥२८॥
नारायणस्सुरेशोऽपि कर्मणां पूरणाय च।
न्यूनाधिकानां शान्त्यर्थं प्रीयतां प्रीयतां विभुः॥२९॥
पुण्याहं स्वस्तिं ऋद्धिं च संवाच्य सहितो द्विजैः।
आत्मानं प्रोक्षयेत् पश्चाद्यागोपकरणानि च॥३०॥
येन देवा पवित्रेणेत्यादिमन्त्रान् पठन् गुरुः।
एवं सर्वेषु यागेषु कुर्यात् पुण्याहवाचनम्॥३१॥

अथ तज्जलं किञ्चिन्निष्कास्य घटं पूर्ववत् स्थापयित्वा तज्जलेन आम्रपल्लवकूर्चादिभिः स्वं यागोपकरणानि गृहादिकं च प्रोक्षयेत्।

ॐ येन देवा पवित्रेण आत्मानं पुनते सदा।
तेन सहस्रधारेण पावमान्यः पुनन्तु माम्॥

इति पुण्याहवाचनम्।

चक्राब्जमण्डलपूजनम्

चक्राब्जमण्डले पूर्वं तत्तन्नामभिस्तत्तद्देवान् मूलमन्त्रेणावाहयेत्-

कर्णिकायाम्-

ॐ नमो नारायणाय, ॐ मन्त्राध्वानाय नमः, मन्त्राध्वानमावाहयामि।

केसरेषु-

ॐ नमो नारायणाय, ॐ तत्त्वाध्वानाय नमः, तत्त्वाध्वानमावाहयामि।

दलेषु-

ॐ नमो नारायणाय, ॐ वर्णाध्वानाय नमः, वर्णाध्वानमावाहयामि।

नाभौ-

ॐ नमो नारायणाय, ॐ पदाध्वानाय नमः, पदाध्वानमावाहयामि।

अरेषु-

ॐ नमो नारायणाय, ॐ कलाध्वानाय नमः, कलाध्वानमावाहयामि।

नेमौ-

ॐ नमो नारायणाय, ॐ भुवनाध्वानाय नमः, भुवनाध्वानमावाहयामि।

अष्टविन्दुषु मूलमन्त्राष्टाक्षराणि पूर्वादिक्रमेणावाहयेत्-

ॐ ॐ नमः, ॐ आवाहयामि। ॐ नं नमः, नम् आवाहयामि।

ॐ मों नमः, मोम् आवाहयामि। ॐ नां नमः, नाम् आवाहयामि।

ॐ रां नमः, राम् आवाहयामि। ॐ यं नमः, यम् आवाहयामि।

ॐ णां नमः, णाम् आवाहयामि। ॐ यं नमः, यम् आवाहयामि।

कमलेषु पूर्वादिक्रमेण-

ॐ श्रीं श्रियै नमः, श्रियम् आवाहयामि।

ॐ पुं पुष्ट्यै नमः, पुष्टिम् आवाहयामि।

ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीम् आवाहयामि।

ॐ प्रीं प्रीत्यै नमः, प्रीतिम् आवाहयामि।

ॐ शं शान्त्यै नमः, शान्तिम् आवाहयामि।

ॐ तुं तुष्ट्यै नमः, तुष्टिम् आवाहयामि।

ॐ क्लीं कान्त्यै नमः, कान्तिम् आवाहयामि।

ॐ क्लीं कीर्त्यै नमः, कीर्तिम् आवाहयामि।

दलेषु अष्टलक्ष्मीः पूर्वादिक्रमेण-

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, महालक्ष्मीम् आवाहयामि।

ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः, विद्यालक्ष्मीम् आवाहयामि।

ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः, सौभाग्यलक्ष्मीम् आवाहयामि।

ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः, अमृतलक्ष्मीम् आवाहयामि।

ॐ कामलक्ष्म्यै नमः, कामलक्ष्मीम् आवाहयामि।

ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः, सत्यलक्ष्मीम् आवाहयमि।

ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः, भोगलक्ष्मीम् आवाहयामि।

ॐ योगलक्ष्म्यै नमः, योगलक्ष्मीम् आवाहयामि।

दलसन्धिषु पूर्वादिक्रमेण-

ॐ श्रीवत्साय नमः, श्रीवत्सम् आवाहयामि।

ॐ कौस्तुभाय नमः, कौस्तुभम् आवाहयामि।

ॐ किरीटाय नमः, किरीटम् आवाहयामि।

ॐ वनमालायै नमः, वनमालाम् आवाहयामि।

ॐ तुलस्यै नमः, तुलसीम् आवाहयामि।

ॐ कुण्डलाय नमः, कुण्डलम् आवाहयामि।

ॐ अङ्गवलयादिभ्यो नमः, अङ्गवलयादीन् आवाहयामि।

ॐ सर्वभूषणेभ्यो नमः, सर्वभूषणानि आवाहयामि।

प्रथमनाभौ- ॐ विष्णवे नमः, विष्णुम् आवाहयामि।

द्वितीयनाभौ- ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणम् आवाहयामि।

तृतीयनाभौ- ॐ त्र्यम्बकाय नमः, त्र्यम्बकम् आवाहयामि।

अरेषु पूर्वादिक्रमेण-

पूर्वे- ॐ विष्णवे नमः, विष्णुम् आवाहयामि।

आग्नेये- ॐ मधुसूदनाय नमः, मधुसूदनम् आवाहयामि।

दक्षिणे- ॐ त्रिविक्रमाय नमः, त्रिविक्रमम् आवाहयामि।

नैर्ऋत्ये- ॐ वामनाय नमः, वामनम् आवाहयामि।

पश्चिमे- ॐ श्रीधराय नमः, श्रीधरम् आवाहयामि।
वायव्ये- ॐ हृषीकेशाय नमः, हृषीकेशम् आवाहयामि।
उत्तरे- ॐ पद्मनाभाय नमः, पद्मनाभम् आवाहयामि।
ऐशान्ये- ॐ दामोदराय नमः, दामोदरम् आवाहयामि।
अरसन्धिषु पूर्वादिक्रमेण-
पूर्वे- ॐ मत्स्याय नमः, मत्स्यम् आवाहयामि।
आग्नेये- ॐ कूर्माय नमः, कूर्मम् आवाहयामि।
दक्षिणे- ॐ वराहाय नमः, वराहम् आवाहयामि।
नैर्ऋत्ये- ॐ नृसिंहाय नमः, नृसिंहम् आवाहयामि।
पश्चिमे- ॐ वामनाय नमः, वामनम् आवाहयामि।
वायव्ये- ॐ परशुरामाय नमः, परशुरामम् आवाहयामि।
उत्तरे- ॐ रामाय नमः, रामम् आवाहयामि।
ऐशान्ये- ॐ कृष्णाय नमः, कृष्णम् आवाहयामि।
नेमिवलये पूर्वादिक्रमेण-
पूर्वे- ॐ पाञ्चजन्याय नमः, पाञ्चजन्यम् आवाहयामि।
आग्नेये- ॐ सुदर्शनाय नमः, सुदर्शनम् अवाहयामि।
दक्षिणे- ॐ कौमोदक्यै नमः, कौमोदकीम् आवाहयामि।
नैर्ऋत्ये- ॐ नन्दकाय नमः, नन्दकम् आवाहयामि।
पश्चिमे- ॐ शार्ङ्गाय नमः, शार्ङ्गम् आवाहयामि।
वायव्ये- ॐ मुसलाय नमः, मुसलम् आवाहयामि।
उत्तरे- ॐ बाणेभ्यो नमः, बाणान् आवाहयामि।
ऐशान्ये- ॐ पाशेभ्यो नमः, पाशान् आवाहयामि।
पीठचतुष्कोणेषु-
आग्नेये- ॐ वराहाय नमः, वराहम् आवाहयामि।
नैर्ऋत्ये- ॐ नृसिंहाय नमः, नृसिंहम् आवाहयामि।
वायव्ये- ॐ अनन्ताय नमः, अनन्तम् आवाहयामि।
ऐशान्ये- ॐ हयग्रीवाय नमः, हयग्रीवम् आवाहयामि।
वीथीशाने-
ॐ श्रीमते विष्वक्सेनाय नमः, श्रीमन्तं विष्वक्सेनम् आवाहयामि।

वीथ्याम्- पूर्वादिक्रमेण-

पूर्वे- ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रम् आवाहयामि।

अग्निकोणे- ॐ अग्नये नमः, अग्निम् आवाहयामि।

दक्षिणे- ॐ यमाय नमः, यमम् आवाहयामि।

निर्ऋतिकोणे- ॐ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिम् आवाहयामि।

पश्चिमे- ॐ वरुणाय नमः, वरुणम् आवाहयामि।

वायुकोणे- ॐ वायवे नमः, वायुम् आवाहयामि।

उत्तरे- ॐ सोमाय नमः, सोमम् आवाहयामि।

ईशानकोणे- ॐ ईशानाय नमः, ईशानम् आवाहयामि।

द्वारचतुष्टये द्वारपालान् आवाहयेत्-

पूर्वे- ॐ चण्डप्रचण्डाभ्यां नमः, चण्डप्रचण्डौ आवाहयामि।

दक्षिणे- ॐ भद्रसुभद्राभ्यां नमः, भद्रसुभद्रौ आवाहयामि।

पश्चिमे- ॐ जयविजयाभ्यां नमः, जयविजयौ आवाहयामि।

उत्तरे- ॐ धातृविधातृभ्यां नमः, धातृविधातारौ आवाहयामि।

द्वारबहिर्देशे पूर्वादिक्रमेण-

पूर्वे- ॐ गरुडाय नमः, गरुडम् आवाहयामि।

दक्षिणे- ॐ चक्राय नमः, चक्रम् आवाहयामि।

पश्चिमे- ॐ गदायै नमः, गदाम् आवाहयामि।

उत्तरे- ॐ शङ्खाय नमः, शङ्खम् आवाहयामि।

शोभासु चामरग्राहिणीः पूर्वादिक्रमेण-

पूर्वे- ॐ विमलायै नमः, विमलामावाहयामि।

आग्नेये- ॐ क्रियायै, क्रियामावाहयामि।

दक्षिणे- ॐ उत्कर्षिण्यै नमः, उत्कर्षिणीमावाहयामि।

नैर्ऋत्ये- ॐ ज्ञानायै नमः, ज्ञानामावाहयामि।

पश्चिमे- ॐ प्रह्वयै नमः, प्रह्वीमावाहयामि।

वायव्ये- ॐ सत्यायै नमः, सत्यामावाहयामि।

उत्तरे- ॐ ईशानायै नमः, ईशानामावाहयामि।

ऐशान्ये- ॐ योगायै नमः, योगामावाहयामि।

उपशोभासु अष्टवसून् पूर्वादिक्रमेण-

पूर्वे- ॐ अद्भ्यो नमः, अप आवाहयामि।

आग्नेये- ॐ ध्रुवाय नमः, ध्रुवम् आवाहयामि।

दक्षिणे- ॐ सोमाय नमः, सोमम् आवाहयामि।

नैर्ऋत्ये- ॐ धराय नमः, धरम् आवाहयामि।

पश्चिमे- ॐ अनिलाय नमः, अनिलम् आवाहयामि।

वायव्ये- ॐ अनलाय नमः, अनलम् आवाहयामि।

उत्तरे- ॐ प्रत्यूषाय नमः, प्रत्यूषम् आवाहयामि।

ऐशान्ये- ॐ प्रभाताय नमः, प्रभातम् आवाहयामि।

अर्धशोभासु नागान् पूर्वादिक्रमेण-

पूर्वे- ॐ अनन्ताय नमः, अनन्तम् आवाहयामि।

आग्नेये- ॐ वासुकये नमः, वासुकिम् आवाहयामि।

दक्षिणे- ॐ तक्षकाय नमः, तक्षकम् आवाहयामि।

नैर्ऋत्ये- ॐ कुलीराय नमः, कुलीरम् आवाहयामि।

पश्चिमे- ॐ कर्कोटकाय नमः, कर्कोटकम् आवाहयामि।

वायव्ये- ॐ शङ्खपालाय नमः, शङ्खपालम् आवाहयामि।

उत्तरे- ॐ कम्बलाय नमः, कम्बलम् आवाहयामि।

ऐशान्ये- ॐ अश्वतराय नमः, अश्वतरम् आवाहयामि।

मण्डलचतुष्कोणेषु आग्नेयादिदिक्रमेण-

आग्नेये- ॐ धर्माय नमः, धर्मम् आवाहयामि।

नैर्ऋत्ये- ॐ ज्ञानाय नमः, ज्ञानम् आवाहयामि।

वायव्ये- ॐ वैराग्याय नमः, वैराग्यम् आवाहयामि।

ऐशान्ये- ॐ ऐश्वर्याय नमः, ऐश्वर्यम् आवाहयामि।

चक्राब्जमण्डले आवाहितेभ्यो देवेभ्यो नमः, आवाहिताभ्यो देवीभ्यो नमः, तान् ताँश्चात्र प्रतिष्ठापयामि।

तत्र मन्त्रः- ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ। एष वै प्रतिष्ठानामयज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति।

ततः पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रणमेत्-

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः॥

श्रीसुदर्शनाराधनम्

चक्राब्जमण्डलस्य मध्यभागे सुवर्ण-रजतादिनिर्मितं प्रतिष्ठितं कलशं संस्थाप्य तदुपरि प्रधानदेवस्य श्रीसुदर्शनभगवतो यन्त्रं मूर्तिं सुदर्शनावतारशालग्रामं वा स्थापयित्वा षोडशोपचारैः पूजयित्वा सुदर्शनाष्टोत्तरशतनामावलिमन्त्रैः तुलसीदलैः समर्च्य नीराजनादिकं कुर्यात्। अप्रतिष्ठितयन्त्रमूर्तिषु तु पूर्वं प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। तत्र एकस्मिन् पात्रे यन्त्रं मूर्तिं वा संस्थाप्य शुद्धिस्नानं कारयित्वा तत्र प्राणादीन् प्रतिष्ठापयेत्-

अयं पुरोभुव इति यजुषो वशिष्ठ ऋषिः प्राणभृद्देवता यजुश्छन्दः प्राणस्थापने विनियोगः। कुशैर्यन्त्रं मूर्तिं वा स्पृशन्-

ॐ अयम्पुरोभुवस्तस्य प्राणो भौवायनो व्वसन्तः प्राणायनो गायत्री व्वासन्ती गायत्र्यै गायत्रङ्गायत्रादुपाᳫँशुरुपाᳫँशोस्त्रिवृत्त्रिवृतो रथन्तरं व्वशिष्ठऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वयाप्प्राणङ्गृह्णामि प्रजाभ्यः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं हं सः अस्मिन् यन्त्रे (मूर्तौ) श्रीसुदर्शनभगवतः प्राणादय इहैवागत्य सुखेन चिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा।

अयं दक्षिणेति यजुषो भरद्वाजऋषिः प्राणभृद्देवता मनःस्थापने विनियोगः।

ॐ अयन्दक्षिणा व्विश्वकर्म्मा तस्य मनो व्वैश्वकर्म्मण ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वारᳫँस्वारादन्तर्यामोऽन्तर्यामात् पञ्चदशः पञ्चदशाद् बृहद् भरद्वाजऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं हं सः अस्मिन् यन्त्रे (मूर्तौ) श्रीसुदर्शनभगवतः मन इहैवागत्य सुखेन चिरं तिष्ठतु स्वाहा।

अयं पश्चादिति यजुषो जमदग्निर्ऋषिः प्राणभृद्देवता चक्षुस्थापने विनियोगः।

ॐ अयम्पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसंवर्षाश्चाक्षुष्यो जगती व्वार्षी जगत्याऽऋक्समम‍ृक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपञ्जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं हं सः अस्मिन् यन्त्रे (मूर्तौ) श्रीसुदर्शनभगवतश्चक्षुरिहैवागत्य सुखेन चिरन्तिष्ठतु स्वाहा।

इदमुत्तरादिति यजुषो विश्वामित्रऽऋषिः प्राणभृद्देवता श्रोत्रस्थापने विनियोगः।

ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रꣳसौवꣳशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शारद्यनुष्टुभ ऽऐडमैडान्मन्थी मन्थिनऽएकविꣳशऽएकविꣳशाद्वैराजं विश्वामित्र-ऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रङ्गृह्णामि प्रजाभ्यः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं हं सः अस्मिन् यन्त्रे (मूर्तौ) श्रीसुदर्शनभगवतः श्रोत्रमिहैवागत्य सुखेन चिरन्तिष्ठतु स्वाहा।

इयमुपरिमतिरिति यजुषो विश्वकर्माऽऋषिः प्राणभृद्देवता वागादीन्द्रियस्थापने विनियोगः।

ॐ इयमुपरिमतिस्तस्यै व्वाङ्‌मात्या हेमन्तो व्वाच्यः पङ्क्तिर्हैमन्ती पङ्क्त्यै निधनवन्निधनवतऽआग्रयणऽआग्रयणात्त्रिणवत्त्रयस्त्रि-ꣳशौत्रिणवत्त्रयस्त्रिꣳशाभ्याꣳशाक्क्वररैवते व्विश्वकर्म्मऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया व्वाचङ्गृह्णामि प्रजाभ्यो लोकन्ताऽइन्द्रम्।

ॐ आं ह्रीं क्रौं हं सः अस्मिन् यन्त्रे (मूर्तौ) श्रीसुदर्शनभगवतः वाक्पाणिपादोपस्थपायव इति कर्मेन्द्रियाणि, श्रोत्रं चक्षुस्त्वग्घ्राणरसनमन इति ज्ञानेन्द्रियाणि इहैवागत्य सुखेन चिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ आं ह्रीं क्रौं हं सः अस्मिन् यन्त्रे (मूर्तौ) श्रीसुदर्शनभगवतः प्रणवेन गर्भादानादिषोडशसंस्कारान् सम्भावयामि- ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ।

ततः यथास्थानं स्थापयित्वा पूजनं कुर्यात्। पञ्चपात्रादीन् प्रक्षाल्य जलं स्थापयित्वा तुलसीदलानि प्रक्षिप्य **ॐ विं विरजायै नमः** इति विरजामावाह्य अर्घ्यपाद्याचमनीयस्नानीयपात्राणि परिकल्प्य ध्यायेत्।

ध्यानम्-

ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सभूमिꣳसर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥
शङ्खं चक्रं च चापं परशुमसिमिषुं शूलपाशाङ्कुशास्त्रं,
विभ्राणं वज्रखेटौ हलमुसलगदाकुन्तमत्युग्रदंष्ट्रम्।
ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिभं हारकेयूरभूषं
ध्यायेत्षट्कोणसंस्थं सकलरिपुकुलप्राणसंहारचक्रम्॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः, ध्यायामि।

आसनम्-

ॐ पुरुषऽएवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
आसनं समर्पयामि।

अर्घ्यम्-

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य व्विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

पाद्यम्-

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो व्विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्-

ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजोऽअधिपूरुषः।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

स्नानीयम्-

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्या नारण्या ग्राम्याँश्च ये॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
सर्वाङ्गे स्नानीयं जलं समर्पयामि।

दुग्धेन स्नानम्-

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
पयस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकेन स्नानम्-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः।
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽअवलिप्ता
रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
शुद्धोदकेन स्नापयामि।

दधिस्नानम्-

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः।
सुरभिनो मुखा करत् प्रणऽआयूꣳषि तारिषत्॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
दधिस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकेन स्नानम्-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः।
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽअवलिप्ता
रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
शुद्धोदकेन स्नापयामि।

घृतस्नानम्-

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृतेश्रितो घृतम्बस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभं वक्षि हव्यम्।।
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः
घृतस्नानं समर्पयामि।

पुनः शुद्धोदकेन स्नानम्-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः।
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽअवलिप्ता
रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः।।
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
शुद्धोदकेन स्नापयामि।

मधुस्नानम्-

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्तोषधीः।
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।
मधुमान्नो वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ२अस्तु सूर्यः। माद्ध्वीर्गावो भवन्तु नः।
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
मधुस्नानं समर्पयामि।

पुनः शुद्धोदकेन स्नानम्-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः।
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽअवलिप्ता
रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः।।
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
शुद्धोदकेन स्नापयामि।

शर्करास्नानम्-

ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्येसन्तꣳसमाहितम्। अपाꣳरसस्य यो रसस्तं
वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषते
योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।

श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः। शुद्धोदकेन स्नापयामि।

पुनः शुद्धोदकेन स्नानम्-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः।
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽअवलिप्ता
रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
शुद्धोदकेन स्नापयामि।

एकतन्त्रेण पञ्चामृतस्नानम्-

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
पञ्चामृतेन स्नापयामि।

पुनः शुद्धोदकेन स्नानम्-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः।
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽअवलिप्ता
रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
शुद्धोदकेन स्नापयामि।

वस्त्रम्-

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्-

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उत्तरीयं वस्त्रम्-

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूपꣳसंव्ययस्व व्विभावसो।
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः
उत्तरीयं वस्त्रं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम्-

ॐ तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः
नानाविधं परिमलं गन्धं समर्पयामि।

अक्षतान् (शालग्रामभगवते अक्षता नैव समर्प्यन्ते)

ॐ तं यज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः
अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पादिसमर्पणम्

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादाऽउच्येते॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
पुष्पं समर्पयामि। पुष्पमालां समर्पयामि। आभूषणानि समर्पयामि।
विजयलक्ष्म्यै नमः, शाटकसिन्दूरादिसौभाग्यद्रव्यं समर्पयामि।

धूपम्-

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रोऽअजायत॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीपम्

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्-

भूमौ जलेन मण्डलीकृत्य तदुपरि भक्ष्यभोज्यचोष्यलेह्यादिनानाविध-व्यञ्जनं पुरतः संस्थाप्य तुलसीदलादि प्रक्षिप्य जलेन पवित्रीकृत्य सुरभिमुद्रां प्रदश्र्य भोज्यार्पणं कुयात्

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीष्णों द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्।।
त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये।
गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद पुरुषोत्तम।।

श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। आपोशनं समर्पयामि, ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा। मध्ये मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि। गण्डूषार्थे आचमनीयं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि।

ऋतुफलानि-

ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वꣳहसः।।
फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तस्मात्फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।।
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः,
ऋतुफलानि समर्पयामि।

ताम्बूलम्-

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।।

श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः
हिरण्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनम्

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषं पशुम्॥
मङ्गलाशासनपरैर्मदाचार्यपुरोगमैः।
सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मङ्गलम्॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः, नीराजयामि।

पुष्पाञ्जलिः-

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः
पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

ततः केशवादिद्वादशनामभिस्तथा श्र्यादिद्वादशनामभिश्च तुलसीदलानि समर्प्य सुदर्शनाष्टोत्तरशतनामभिस्तुलसीदलार्चनां कुर्यात्।

केशवादि-द्वादश-नामानि

१. ॐ केशवाय नमः
२. ॐ नारायणाय नमः
३. ॐ माधवाय नमः
४. ॐ गोविन्दाय नमः
५. ॐ विष्णवे नमः
६. ॐ मधुसूदनाय नमः
७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
८. ॐ वामनाय नमः
९. ॐ श्रीधराय नमः
१०. ॐ हृषीकेशाय नमः
११. ॐ पद्मनाभाय नमः
१२ ॐ दामोदराय

श्र्यादिद्वादशनामानि

१. ॐ श्रियै नमः
२. ॐ अमृतोद्भवायै नमः
३. ॐ कमलायै नमः
४. ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः
५. ॐ विष्णुपत्न्यै नमः
६. ॐ वैष्णव्यै नमः
७. ॐ वरारोहायै नमः
८. ॐ हरिवल्लभायै नमः
९. ॐ शार्ङ्गिण्यै नमः
१०. ॐ देवदेविकायै नमः
११. ॐ लोकसुन्दर्यै नमः
१२. ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

श्रीसुदशनाष्टोत्तरशतनामावली

(तुलसीदलार्चना)

१ ॐ सुदर्शनाय नमः
२ ॐ चक्रराजाय नमः
३ ॐ तेजोव्यूहाय नमः
४ ॐ महाद्युतये नमः
५ ॐ सहस्रबाहवे नमः
६ ॐ दीप्ताङ्गाय नमः
७ ॐ अरुणाक्षाय नमः
८ ॐ प्रतापवते नमः
९ ॐ अनेकादित्यसङ्काशाय नमः
१० ॐ प्रोर्ध्वज्वालाभिरञ्जिताय नमः
११ ॐ सौदामिनीसहस्राभाय नमः
१२ ॐ मणिकुण्डलशोभिताय नमः
१३ ॐ पञ्चभूतमनोरूपाय नमः
१४ ॐ षट्कोणान्तरसंस्थिताय नमः
१५ ॐ हरान्तःकरणोद्भूतरोषभीषणविग्रहाय नमः
१६ ॐ हरिपाणिलसत्पद्मविहारारमनोहराय नमः
१७ ॐ श्रीकाररूपाय नमः
१८ ॐ सर्वज्ञाय नमः
१९ ॐ सर्वलोकार्चितप्रभवे नमः
२० ॐ चतुर्दशसहस्राराय नमः
२१ ॐ चतुर्वेदमयाय नमः
२२ ॐ अनलाय नमः
२३ ॐ भक्तचान्द्रमसज्योतिषे नमः
२४ ॐ भवरोगविनाशकाय
२५ ॐ रेफात्मकाय नमः

२६ ॐ मकारात्मने नमः
२७ ॐ रक्षोऽसृग्रूषिताङ्गकाय नमः
२८ ॐ सर्वदैत्यग्रीवनालविभेदनमहागजाय नमः
२९ ॐ भीमदंष्ट्राय नमः
३० ॐ ज्वालाकाराय नमः
३१ ॐ भीमकर्मणे नमः
३२ ॐ त्रिलोचनाय नमः
३३ ॐ नीलवत्मने नमः
३४ ॐ नित्यसुखाय नमः
३५ ॐ निर्मलश्रियै नमः
३६ ॐ निरञ्जनाय नमः
३७ ॐ रक्तमाल्याम्बरधराय नमः
३८ ॐ रक्तचन्दनरुषिताय नमः
३९ ॐ रजोगुणाकृतये नमः
४० ॐ शूराय नमः
४१ ॐ रक्षःकुलयमोपमाय नमः
४२ ॐ नित्यक्षेमङ्कराय नमः
४३ ॐ प्राज्ञाय नमः
४४ ॐ पाषण्डजनखण्डनाय नमः
४५ ॐ नारायणाज्ञानुवर्तिने नमः
४६ ॐ नैगमान्तप्रकाशकाय नमः
४७ ॐ बलिनन्दनदोर्दण्डखण्डनाय नमः
४८ ॐ विजयाकृतये नमः
४९ ॐ मित्रभाविने नमः
५० ॐ सर्वमयाय नमः
५१ ॐ तमोविध्वंसनाय नमः
५२ ॐ रजःसत्त्वतमोद्वर्तिने नमः
५३ ॐ त्रिगुणात्मने नमः

५४ ॐ त्रिलोकधृते नमः
५५ ॐ हरिमायागुणोपेताय नमः
५६ ॐ अव्ययाय नमः
५७ ॐ अक्षजस्वरूपभाजे नमः
५८ ॐ परमात्मने नमः
५९ ॐ परञ्ज्योतिषे नमः
६० ॐ पञ्चकृत्यपरायणाय नमः
६१ ॐ ज्ञानशक्तिबलैश्वर्यवीर्यतेजःप्रभामयाय नमः
६२ ॐ सदसत्परमाय नमः
६३ ॐ पूर्णाय नमः
६४ ॐ वाङ्मयाय नमः
६५ ॐ वरदाय नमः
६६ ॐ अच्युताय नमः
६७ ॐ जीवाय नमः
६८ ॐ हरये नमः
६९ ॐ हंसरूपाय नमः
७० ॐ पञ्चाशत्पीठरूपकाय नमः
७१ ॐ मातृकामण्डलाध्यक्षाय नमः
७२ ॐ मधुध्वंसिने नमः
७३ ॐ मनोमयाय नमः
७४ ॐ बुद्धिरूपाय नमः
७५ ॐ चित्तसाक्षिणे नमः
७६ ॐ साराय नमः
७७ ॐ हंसाक्षरद्वयाय नमः
७८ ॐ मन्त्रयन्त्रप्रभावज्ञाय नमः
७९ ॐ मन्त्रयन्त्रमयाय नमः
८० ॐ विभवे नमः
८१ ॐ स्रस्ट्रे नमः

८२ ॐ क्रियास्पदाय नमः
८३ ॐ शुद्धाय नमः
८४ ॐ मन्त्रबोद्धे नमः
८५ ॐ त्रिविक्रमाय नमः
८६ ॐ निरायुधाय नमः
८७ ॐ असंरम्भाय नमः
८८ ॐ सर्वायुधसमन्विताय नमः
८९ ॐ ओङ्काररूपाय नमः
९० ॐ पूर्णात्मने नमः
९१ ॐ आङ्कारात्साध्यबन्धनाय
९२ ॐ ऐङ्काराय नमः
९३ ॐ वाक्प्रदाय नमः
९४ ॐ वाग्मिने नमः
९५ ॐ श्रीङ्कारैश्वर्यवर्द्धनाय
९६ ॐ क्लीङ्कारमोहनाकाराय नमः
९७ ॐ हुंफडक्षोभणाकृतये
९८ ॐ इन्द्रार्चितमनोवेगाय
९९ ॐ धरणीभारनाशकाय नमः
१०० ॐ वीराराध्याय नमः
१०१ ॐ विश्वरूपाय नमः
१०२ ॐ वैष्णवाय नमः
१०३ ॐ विष्णुरूपकाय
१०४ ॐ सत्यव्रताय नमः
१०५ ॐ सत्पराय नमः
१०६ ॐ सत्यधर्मानुषङ्गकाय
१०७ ॐ नारायणकृपाव्यूहतेजश्चक्राय नमः
१०८ ॐ सुदर्शनाय नमः

श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः।

कर्पूरार्तिक्यम्

मङ्गलं चक्रराजाय महनीयगुणाब्धये।
पद्मनाभकराम्भोजपरिष्काराय मङ्गलम्॥१॥
काशीविप्लोषकाराय कल्याणगुणशालिने।
बालिप्रमथनायाऽस्तु महाधीराय मङ्गलम्॥२॥
गजेन्द्रार्तिहरायास्तु ग्राहद्वेधात्वकारिणे।
दिनाधीशतिरोधानकर्त्रे दीप्ताय मङ्गलम्॥३॥
चित्राकारस्वचाराय चित्तनिर्वृत्तिकारिणे।
नरकासुरसंहर्त्रे नानारूपाय मङ्गलम्॥४॥
चण्डास्त्रांश्चितदोर्दण्डखण्डितामरशत्रवे।
चामीकरनिभाङ्गाय चारुनेत्राय मङ्गलम्॥५॥
चैद्यासुरशिरोहर्त्रे चन्द्राह्लादकराय च।
श्रीमते चक्रराजाय श्रितार्तिघ्नाय मङ्गलम्॥६॥

अनन्तरं साष्टाङ्गप्रणामादिकं कृत्वा गुरुपरम्परापाठपूर्वकं तीर्थप्रसाददिकं ग्राह्यम्।

सुदर्शनकवचेन त्रिसूत्रीमभिमन्त्र्य यजमानस्य दक्षिणहस्ते बध्नीयात्-

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥

यजमानो ब्राह्मणानां हस्ते बध्नीयात्-

जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापूरुषपूर्वज॥

ततः पुस्तकं पूजयित्वा सुदर्शनशतकस्य पारायणं कर्तव्यम्।
यजमानेन ब्राह्मणैश्च अनुष्ठाननियमा अवश्यं पालनीयाः।
यावदनुष्ठानं ब्रह्मचर्यम्, अधःशय्या, पत्रावल्यां भोजनं, फलाहारं कृत्वा पारायणं समाप्य दिवसान्ते हविष्यान्नभोजनं च कर्तव्यम् अथच परान्नभोजन-नखकेशादिकर्तनं च नैव कर्तव्यम्।

पारायणप्रारम्भः

शुचौ आसने स्थित्वा आचमन-प्राणायामादिकं विधाय सुदर्शनाराधनविधिं कृत्वा न्यासादिकं, मानसोपचारं, षडक्षरजपं, सुदर्शनगायत्रीजपं च कृत्वा देशकालादिकं समुच्चार्य ....**वेदान्तर्गत**.............. **शाखाध्यायी**. ....**प्रवरान्वितः**.....................**गोत्रोत्पन्नः**..............**शर्माहं**......... ....**गोत्रोत्पन्नस्य मम (.............नामकस्य यजमानस्य वा) सङ्कल्पितकार्यसिद्ध्यर्थं सङ्कल्पितसङ्ख्यापूर्तये (प्रतिमन्त्रं........................ मन्त्रेण सम्पुटितं कृत्वा) सुदर्शनशतकस्य पारायणं करिष्ये** इति सङ्कल्प्य कवचपारायणपूर्वकं सुदर्शनशतकस्य पारायणं कुर्यात्।

प्रतिदिनं नियमेन स्नानशौचादिकं विधाय अनिवार्यतया सन्ध्यावन्दनं कृत्वा स्वस्तिवाचन-विष्वक्सेनपूजन-सुदर्शनाराधनादिकं सम्पाद्य तुलसीदलैर्भगवन्तं समर्च्य प्रतिदिनम् एवमेव कृत्वा पारायणं कुर्यात्।

एवं प्रकारेण प्रतिदिनस्य पारायणं समाप्य पुनः सुदर्शनाराधनविधिं मानसोपचार-न्यासादि-षडक्षरजप-सुदर्शनगायत्रीजपं कृत्वा सुदर्शनकवचस्य पाठं कुर्यात्। तदनन्तरं हस्ते जलं गृहीत्वा............**गोत्रोत्पन्नस्य**..................**नामकस्य मम (यजमानस्य) कार्यसिद्ध्यर्थं सङ्कल्पितसङ्ख्यापूर्तये मया कृतेन सुदर्शनशतकपारायणकर्मणा श्रीविजयलक्ष्मीसमेतसुदर्शनो भगवान् प्रीयताम्। सत्याः सन्तु मम(यजमानस्य) कामाः।** इति पठित्वा भूमौ निपातयेत्।

अथ सुदर्शनमन्त्राराधनविधिः

तत्र षडक्षरजपविधिः

ॐ अस्य श्रीसुदर्शनमहामन्त्रस्य अहिर्बुध्न्यो भगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसुदर्शनचक्रराजो भगवान् देवता, क्ष्रौं महाज्वालाय बीजम्, क्लीं शत्रुमर्दनाय शक्तिः, क्लीं सर्वभयनिवारणाय कीलकम्, श्रीभगवत्कैंकर्यस्य बाधानिवृत्तिपूर्वकमविच्छिन्नसन्तानेन विवृद्ध्यर्थम् षट्कोणमध्यस्थितविष्णुचक्रमन्त्रजपे विनियोगः॥

अथाङ्गन्यासः- ॐ सं मूर्ध्नि न्यसामि, ॐ हं भ्रूमध्ये न्यसामि, ॐ स्रां मुखे न्यसामि, ॐ रं हृदि न्यसामि, ॐ हुं नाभौ न्यसामि, ॐ फट् जान्वोर्न्यसामि।

(सहस्रार हुं फट् इति मन्त्रः।)

अथ करन्यासः

ॐ रां रणत्किङ्किणीजालाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ रीं रिपुदावानलाय तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ रूं राक्षसभयनिवारणाय मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ रैं रक्षोत्सादनाय अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ रौं रणभीषणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ रः रक्तमाल्याम्बरधराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

अथ हृदयादिन्यासः

ॐ रां राक्षसविध्वंसकाय हृदयाय नमः।
ॐ रीं रक्ताक्षाय शिरसे स्वाहा।
ॐ रूं रुद्रभीषणाय शिखायै वषट्।
ॐ रैं राक्षसकुलनाशनाय कवचाय हुं।
ॐ रौं रमेशप्रियाय नेत्राभ्यां वौषट्।
ॐ रः रक्तमाल्याम्बरधराय अस्त्राय फट्॥

अथ मानसिक-पञ्चोपचार-पूजनम्

ॐ लं पृथिव्यात्मने बाणासुरमदभञ्जनाय श्रीचन्दनं समर्पयामि॥१॥
ॐ हं आकाशात्मने दैत्यदानवमर्दनाय पारिजातपुष्पं समर्पयामि॥२॥
ॐ यं वाय्वात्मने दुर्वासोगर्वखण्डनाय सुगन्धदशाङ्गधूपं समर्पयामि॥३॥
ॐ रं ब्रह्मात्मने वैकुण्ठनिवासाय भक्ष्य-भोज्य-लेह्य-चोष्य-गुड-घृत-दधि-क्षीरादि-शुभ्रशाल्योदन-मोदकाद्यनेक-पक्वान्न-कन्दमूल-फलाद्यनेक-चित्रान्नपायस-निर्मल-स्वादुविरजाजल-संयुक्त-श्रीरमाहस्तनिर्मित-मणिमयपात्रस्थित-श्रीमहाविष्णुनिवेदित-महाप्रसादामृतान्नं समर्पयामि॥४॥
ॐ जं सोमात्मने पूगीफल-नागवल्लीदलैलालवङ्ग-कङ्कोल-जातीफलाद्यनेक-शतौषधिसहितानेक-सुगन्धपरिमलद्रव्य-जातीपत्र-कस्तूरी-कर्पूर-गोरोचन-मौक्तिकचूर्णमिश्रित-लक्ष्मीहस्तनिर्मित-स्वर्णपात्रस्थित-श्रीधरचर्वणशेष-ताम्बूलवीटिकां समर्पयामि॥५॥

अथ दशदिग्बन्धः

ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय ऐन्द्रीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय आग्नेयीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय दक्षिणां दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय नैर्ऋतिं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय वारुणीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय वायव्यदिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय कौवेरीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय ईशानदिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय ऊर्ध्वदिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय अधोदिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते कोटिसूर्यप्रकाशाय भूर्भुवः स्वरोमिति सर्वदिग्बन्धनं कुर्यात्।

सहस्रार हुं फट् इति षडक्षरमष्टोत्तरशतवारं जपेत्॥ षड्लक्षात्मकः पुरश्चरणः।

सुदर्शनगायत्रीमन्त्रः

ॐ सुदर्शनाय विद्महे हेतिराजाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्।

ध्यानम्

शङ्खं चक्रं च चापं परशुमसिमिषुं शूलपाशाङ्कुशास्त्रं,
विभ्राणं वज्रखेटौ हलमुसलगदाकुन्तमत्युग्रदंष्ट्रम्।
ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिभं हारकेयूरभूषं
ध्यायेत्षट्कोणसंस्थं सकलरिपुकुलप्राणसंहारचक्रम्॥१॥

सुदर्शन महाज्वाल कोटिसूर्यसमप्रभ।
अज्ञानान्धस्य मे देव विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय॥२॥

यस्य स्मरणमात्रेण विद्रवन्ति सुरारयः।
सहस्रार नमस्तुभ्यं विष्णुपाणितलाश्रय॥३॥

क्षिप्त्वा सुदर्शनं चक्रं ज्वालामालातिभीषणम्।
सर्वरोगप्रशमनं कुरु देववराच्युत॥४॥

सुदर्शन महाचक्र गोविन्दस्य करायुध।
तीक्ष्णधारमहावेग सूर्यकोटिसमप्रभ॥५॥

त्रैलोक्यं रक्ष रक्ष त्वं दुष्टदानवमर्दन।
सुदर्शन महाज्वाल छिन्धि छिन्धि महागदम्॥६॥

छिन्धि वातं च पित्तं च छिन्धि घोरं महाविषम्।
रुजं दाहं च शूलं च निमिषं जालगर्दभम्॥७॥

ये च केचिन्महोत्पाताः कार्यविघ्नकराश्च नः।
सुदर्शनस्य मन्त्रेण ग्रहा यान्तु दिशो दश॥८॥

इति सुदर्शनाराधनविधिः॥

श्रीसुदर्शनकवचम्।

ॐ अस्य श्रीसुदर्शनकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य अहिर्बुध्न्यो भगवान् ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः श्रीसुदर्शनमहाश्रीनृसिंहो देवता सहस्रारमिति बीजं, सुदर्शनमिति शक्तिः चक्रमिति कीलकम् मम (यजमानस्य) सर्वरक्षार्थे श्रीसुदर्शनपुरुषश्रीनृसिंहप्रीत्यर्थं जपे (पाठे) विनियोगः।

करन्यासः-

ॐ सं आचक्राय स्वाहा, अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ हं विचक्राय स्वाहा, तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ स्रां सुचक्राय स्वाहा, मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ रं सूर्यचक्राय स्वाहा, अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ हुं ज्वालाचक्राय स्वाहा, कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ फट् सुदर्शनचक्राय स्वाहा, करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यासः-

ॐ सं आचक्राय स्वाहा हृदयाय नमः।
ॐ हं विचक्राय स्वाहा शिरसे स्वाहा।
ॐ स्रां सुचक्राय स्वाहा शिखायै वषट्।
ॐ रं सूर्यचक्राय स्वाहा कवचाय हुम्।
ॐ हुं ज्वालाचक्राय स्वाहा नेत्राभ्यां वौषट्।
ॐ फट् सुदर्शनचक्राय स्वाहा अस्त्राय फट्।
ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानम्

शङ्खं चक्रं च चापं परशुमसिमिषुं शूलपाशाङ्कुशास्त्रं,
बिभ्राणं वज्रखेटौ हलमुसलगदाकुन्तमत्युग्रदंष्ट्रम्।
ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिभं हारकेयूरभूषं
ध्यायेत्षट्कोणसंस्थं सकलरिपुकुलप्राणसंहारचक्रम्॥१॥

ॐ नमो भगवते सुदर्शनाय, भो भो सुदर्शन! दुष्टं दारय दारय दुरितं हन हन पापं दह दह रोगं मर्दय मर्दय आरोग्यं कुरु कुरु ॐ ॐ ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं फट् फट् दह दह हन हन भीषय भीषय स्वाहा।

मस्तकं मे सहस्रार भालं पातु सुदर्शन।
भ्रुवौ मे चक्रराट् पातु नेत्रे द्वेऽर्केन्दुलोचनः॥१॥

कर्णौ वेदस्तुतः पातु घ्राणं मे सुविभीषणः।
महादीप्तः कपोलौ मे ओष्ठौ रुद्रवरप्रदः॥२॥

दन्तान् पातु जगद्वन्द्यो रसनां मम सर्वदा।
सर्वविद्यार्णवः पातु गिरं वागीश्वरो मम॥३॥

वीरसिंहो मुखं पातु चिबुकं भक्तवत्सलः।
सर्वदा पातु कण्ठं मे मेघगम्भीरनिःस्वनः॥४॥

मम स्कन्धयुगं पातु धराभारापहारकः।
बाणासुरभुजारण्यदावाग्निः पातु मे भुजौ॥५॥

कालनेमिशिरश्छेत्ता पातु मे कूर्परद्वयम्।
करौ दिव्यायुधः पातु नखान् वज्रनखोपमः॥६॥

कुक्षौ पातु महाशूरः स्तनौ शत्रुनिषूदनः।
पातु मे हृदयं भक्तजनानन्दश्च सर्वदा॥७॥

सर्वशास्त्रार्थसद्भूतिहेतुः पातूदरं मम।
वक्षः पातु महाधारो दिवि दानवमर्दनः॥८॥

पार्श्वौ मे पातु दीनार्तशरणागतवत्सलः।
सर्वदा पृष्ठदेशं मे देवानामभयप्रदः॥९॥

नाभिं षट्कोणधामा मे पातु घण्टारवः कटिम्।
आदिमूलः पुमान् पातु गुह्यदेशं निरन्तरम्॥१०॥

ऊरू पातु महाशूरो जानुनी भीमविक्रमः।
जङ्घे पातु महावेगो गुल्फौ पातु महाबलः॥११॥

पादौ पातु सदा श्रीदो ब्रह्माद्यैरभिवन्दितः।
पातु पादतलद्वन्द्वं विश्वभारो निरन्तरम्॥१२॥

सुदर्शननृसिंहो मे शरीरं पातु सर्वदा।
मम सर्वाङ्गरोमाणि ज्वालाकेशस्स रक्षतु॥१३॥

मम सर्वाङ्गकान्तिं वै कल्पान्ताग्निसमप्रभः।
अन्तर्बहिश्च मे पातु विश्वात्मा विश्वतोमुखः॥१४॥

रक्षाहीनञ्च यत्स्थानं प्रचण्डस्तत्र रक्षतु।
सर्वतो दिक्षु मे पातु ज्वालाशतपरीवृतः॥१५॥

त्रिनेमिः पातु मे प्राणान् भ्रातृन् पात्वनलद्युतिः।
भार्यां लक्ष्मीसखः पातु पुत्रान् पातु सुदर्शनः॥१६॥

श्रीकरो मे श्रियः पातु बन्धून् पातु बलाधिकः।
गोपाँश्चैव पशून् पातु सहस्रारधरस्सदा॥१७॥

क्षेत्रं विश्वम्भरः पातु मित्रं पात्वघनाशनः।
दिवारात्रौ च मां पातु अहिर्बुध्न्यवरप्रदः॥१८॥

षोडशोत्तुङ्गबाहुस्तु पातु मे राजसम्मुखम्।
वैरिविद्वेषसङ्घे तु सङ्ग्रामे शत्रुसूदनः॥१९॥

अवान्तरा अबाधाश्च त्रासयेत् सार्वकालिकम्।
आधिव्याधिमहाव्याधिमध्ये चोपद्रवे तथा॥२०॥

अपमृत्युमहामृत्यू नाशयेच्चक्रनायकः।
परप्रयुक्तमन्त्राँश्च यन्त्रतन्त्रविभञ्जनः॥२१॥

सुदर्शनोऽयमस्माकं दुर्दशादुःखनाशनः।
सर्वसम्पत्प्रदाता मां चक्रराजो निरन्तरम्॥२२॥

जपं पातु जगद्वन्द्यो मनसामक्षयप्रदः।
प्रमादाँश्चास्त्रधामासौ ज्ञानं रक्षतु सर्वदा॥२३॥

अणिमादिमहैश्वर्यं पातु साम्राज्यसिद्धिदः।
तिर्यग्ज्वालाग्निरूपश्च नष्टराज्यार्थदो मम॥२४॥

राज्यं पातु सहस्रारः पादार्तिं पातु चाच्युतः।
चतुरङ्गबलस्तोमं रक्ष त्वं चक्रभावनः॥२५॥

ज्योतिर्मयश्चक्रराजस्सर्वान् वरुणरक्षकः।
अखण्डमण्डितः पातु परचक्रापहारकः॥२६॥

त्रिविक्रमश्चक्रराजः पातु धैर्यं सदा मम।
नभोदशदिशव्याप्तिः कीर्तिं पातु सुदर्शनः॥२७॥

आयुर्बलं धृतिं पातु लोकत्रयभयापहः।
सुधामण्डलसंविष्टो मायापञ्चसुशीतलः॥२८॥

राजद्वारे सभामध्ये पातु मा चण्डविक्रमः।
पूर्वे सुदर्शनः पातु आग्नेये पातु चक्रराट्॥२९॥

याम्ये रथाङ्गकः पातु त्रिनेमिः पातु नैर्ऋते।
लोकत्रयप्रभाकारज्वालो रक्षतु पश्चिमे॥३०॥

षट्कोणः पातु वायव्ये ह्यस्त्रराजोत्तरां दिशम्।
ऐशान्यां चक्रराट् पातु मध्ये भूचक्रचक्रिणः॥३१॥

अनन्तादित्यसङ्काशः क्ष्मान्तरिक्षौ च पातु मे।
सर्वतो दिक्षु मे पातु ज्वालासाहस्रसंवृतः॥३२॥

एवं सर्वत्र संरक्ष सर्वदा सर्वरूपवान्।
सकारः पृथिवी ज्ञेयो हकार अप उच्यते॥३३॥

स्राकारो वायुरुक्तश्च रकारोऽम्बर उच्यते।
हुंकारमग्निरित्याहुः फट्कारं सूर्यरूपकम्॥३४॥

स्वाहाकारं न्यसेन्मूर्ध्नि पीतरक्तसुवर्णकम्।
सकारं नासिकायां तु हकारं वदने न्यसेत्॥३५॥

स्राकारं हृदये चैव सृष्टिसंहारकारणम्।
रकारं विन्यसेद् गुह्ये हुंकारं जानुदेशके॥३६॥

फकारं गुल्फदेशे तु टकारं पादयोर्न्यसेत्।
सर्वाणि चैव वर्णानि जप्यान्यङ्गुलिपर्वसु॥३७॥

क्षिप्रं सौदर्शनं चक्रं ज्वालामालातिभीषणम्।
सर्वदैत्यप्रशमनं कुरु देववराच्युत॥३८॥

सुदर्शन महाज्वाल छिन्धि छिन्धि सुवेदनाम्।
परयन्त्रं च तन्त्रं च छिन्धि मन्त्रौषधादिकम्॥३९॥

सुदर्शन महाचक्र गोविन्दस्य करायुध।
सूक्ष्माधार महावेग छिन्धि छिन्धि सुभैरव॥४०॥

छिन्धि पातं च लूतं च छिन्धि घोरं महद्विषम्।
इति सौदर्शनं दिव्यं कवचं सर्वकामदम्॥४१॥

सर्वबाधाप्रशमनं सर्वव्याधिविनाशनम्।
सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वमङ्गलदायकम्॥४२॥

त्रिसन्ध्यं पठतां नृणां सर्वदा विजयप्रदम्।
सर्वपापप्रशमनं भोगमोक्षैकसाधनम्॥४३॥

प्रातरुत्थाय यो भक्त्या पठेदेतत् सदा नरः।
तस्य सर्वेषु कालेषु विघ्नः क्वापि न जायते॥४४॥

यक्षराक्षसवेतालभैरवाश्च विनायकाः।
शाकिनी डाकिनी ज्येष्ठा निद्रा बालग्रहादयः॥४५॥

भूतप्रेतपिशाचाद्या अन्ये दुष्टग्रहा अपि।
कवचस्यास्य जप्तारं दृष्टमात्रेण तेऽखिलाः॥४६॥

पलायन्ते यथा नागा पक्षिराजस्य दर्शनात्।
अस्यायुतं पुरश्चर्यं दशांशं तिलतर्पणम्॥४७॥

हवनं तर्पणं चैव मार्जनं गन्धवारिणा।
पुष्पाञ्जलिर्दशांशं च मिष्टान्नं सघृतप्लुतम्॥४८॥

चतुर्विंशद्द्विजा भोज्या वैष्णवा वेदपारगाः।
पञ्चसंस्कारसम्पन्नास्ततः कार्याणि साधयेत्॥४९॥

विन्यस्याङ्गेष्विदं धीरो युद्धार्थं योऽभिगच्छति।
रणे जित्वाखिलान् शत्रून् विजयी भवति ध्रुवम्॥५०॥

मन्त्रिताम्बु त्रिवारं वा पिबेत् सप्तदिनावधि।
व्याधयः प्रविनश्यन्ति सकलाः कुक्षिसम्भवाः॥५१॥

मुखप्रक्षालने नेत्रनासिकारोगनाशनम्।
भीतानामभिषेकं च महाभयनिवारणम्॥५२॥

सप्ताभिमन्त्रितानेन तुलसीमूलमृत्तिका।
लेपान्नश्यन्ति ते रोगास्सद्यः कुष्ठादयोऽखिलाः॥५३॥

ललाटे तिलकं स्त्रीणां मोहनं सर्ववश्यकृत्।
परेषां मन्त्रयन्त्राणि तन्त्राण्यपि विनाशकृत्॥५४॥

व्यालसर्पादिसर्वेषां विषापहरणं परम्।
सौवर्णे रजते वापि भूर्जे ताम्रादिकेऽपि वा॥५५॥

लिखित्त्वा त्वर्चयेद् भक्त्या स श्रीमान् भवति ध्रुवम्।
बहुना किमिहोक्तेन यद्यद्वाञ्छति यो नरः॥५६॥

सकलं प्राप्नुयादस्य कवचस्य प्रसादतः।
सकलं प्राप्नुयादस्य कवचस्य प्रसादतः॥५६॥

ध्वजे गजानामथ वाजिसायके
शरेष्वमोघेष्वथ वीरपट्टके।
लिखेच्च चक्रं विजयेषु संयुगे-
ष्वमोघवीर्यं जयमाप्नुयाद् ध्रुवम्।।५७।।

श्रियः प्रवृत्यै परिपूजनीयो
ह्यभीष्टसिद्धिं कुरुते सुदर्शनः।
कन्याञ्च भर्ता पुरुषो वधुञ्च
लभेच्च विद्यां धनधान्ययुक्ताम्।।५७।।

इति सुदर्शनकवचम्।

तत्तत्कार्यसिद्धये सम्पुटमन्त्राः

कार्याणि	सम्पुटमन्त्राः	श्लोकसंख्या
शत्रुपराजयार्थम्-	नाभीशालानिखाताम्	४७
ख्यातिप्राप्त्यर्थम्-	निःसीमं निःसृतायाः	५५
पापकर्मविनाशार्थम्-	डिण्डीरापाण्डुगण्डैः	५७
सम्पत्तिप्राप्त्यर्थम्-	पर्याप्तामुन्नतिं या	५८
मनोरथसिद्ध्यर्थम्-	प्राणादीन् सन्नियम्य	७१
व्याधिनिवारणार्थम्-	वाणी पौराणिकी यं	७६
दारिद्र्यविनाशार्थम्-	नन्दिन्यानन्दशून्ये	८७
राजविवादजयार्थम्-	रक्तौघाभ्यक्तमुक्ता	८८
जयप्राप्त्यर्थम्-	काशीविप्लोषचैद्य	८९
समस्तरोगनिवारणार्थम्-	दंष्ट्रा कान्त्या कडारे	९३
सर्वकामनासिद्ध्यर्थम्-	यस्मिन् विन्यस्य भारं	१००

श्रीविजयलक्ष्मीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः।

।।श्रीसुदर्शनशतकम्।।

रङ्गेशविज्ञप्तिकरामयस्य चकार चक्रेशनुतिं निवृत्तये।
समाश्रयेऽहं वरपूरणीं यस्तं कूरनारायणनामकं मुनिम्।।

अथ ज्वालावर्णनम्

सौदर्शन्युज्जिहाना दिशि विदिशि तिरस्कृत्य सावित्रमर्चि-
र्बाह्याबाह्यान्धकार-क्षत-जगद-गदङ्कारभूम्ना स्वधाम्ना।
दोःखर्जू-दूरगर्जद्विबुध-रिपुवधू-कण्ठवैकल्य-कल्या
ज्वाला जाज्वल्यमाना वितरतु भवतां वीप्सयाभीप्सितानि।।१।।

प्रत्युद्यातम्मयूखैर्नभसि दिनकृतः प्राप्तसेवम्प्रभाभि-
र्भूमौ सौमेरवीभिर्दिवि वरिवसितन्दीप्तिभिर्देवधाम्नाम्।
भूयस्यै भूतये वः स्फुरतु सकलदिग्भ्रान्तसान्द्रस्फुलिङ्ग-
ञ्चाक्रञ्जाग्रत्प्रतापन्त्रिभुवन-विजय-व्यग्रमुग्रम्महस्तत्।।२।।

पूर्णे पूरैस्सुधानां सुमहति लसतस्सोमबिम्बालबाले
बाहाशाखावरुद्धक्षिति गगनदिवश्चक्रराजद्रुमस्य।
ज्योतिश्छद्माप्रवालः प्रकटितसुमनस्सम्पदुत्तं सलक्ष्मीम्-
पुष्णन्नाशामुखेषु प्रदिशतु भवतां सप्रकर्षं प्रहर्षम्।।३।।

आरादारात्सहस्राद्विसरति विमतक्षेपदक्षाद्यदक्षान्
नाभेर्भास्वत्सनाभेर्निज-विभवपरिच्छिन्न-भूमेश्च नेमेः।
आम्नायैरेककण्ठैः स्तुतमहिममहो माधवीयस्य हेते-
स्तद्वो दिक्ष्वेधमानञ्चतसृषु चतुरः पुष्यतात्पूरुषार्थान्।।४।।

श्यामन्धामप्रसृत्या क्वचन भगवतः क्वापि बभ्रु प्रकृत्या
शुभ्रं शेषस्य भासा क्वचन मणिरुचा क्वापि तस्यैव रक्तम्।
नीलं श्रीनेत्रकान्त्या क्वचिदपि मिथुनस्यादिमस्येव चित्रां
व्यातन्वानं वितानश्रियमुपचिनुताच्छर्म वश्चक्रभानम्।।५।।

शंसन्त्युन्मेषमुच्छोषितपरमहसो भास्वतः कैटभारे-
रिन्धे सन्ध्येव नक्तञ्चरविलयकरी या जगद्वन्दनीया।
बन्धूकच्छायबन्धुच्छवि-घटित-घनच्छेदमेदस्विनी सा
राथाङ्गी रश्मिभङ्गी प्रणुदतु भवताम्प्रत्यहोत्थानमेनः॥६॥

साम्यन्धूम्या प्रवृद्ध्या प्रकटयति नभस्तारकाजालकानि
स्फौलिङ्गीं यान्ति कान्तिन्दिशति यदुदये मेरुरङ्गारशङ्काम्।
अग्निर्मग्नार्चिरैक्यम्भजति दिननिशावल्लभौ दुर्लभाभौ
ज्वालावर्ताविव स्तः प्रहरणपतिजन्धाम वस्तद्धिनोतु॥७॥

दृष्टेऽधिव्योमचक्रे विकचनवजपासन्निकाशे सकाशं
स्वर्भानुर्भानुरेष स्फुटमिति कलयन्नागतो वेगतोऽस्य।
निष्टप्तो यैर्निवृत्तो विधुमिव सहसा स्प्रष्टुमद्यापि नेष्टे
घर्मांशुन्ते घटन्तामहितविहतये भानवो भास्वरा वः॥८॥

देवं हेमाद्रितुङ्गम्पृथुभुजशिखरम्बिभ्रतीम्मध्यदेशे
नाभि-द्वीपाभिरामामर-विपिनवतीं शेषशीर्षासनस्थाम्।
नेमिम्पर्यायभूमिन्दिनकरकिरणादृष्टसीमः परीत्य
प्रीत्यै वश्चक्रवालाचल इव विलसन्नस्तु दिव्यास्त्ररश्मिः॥९॥

एकल्ँलोकस्य चक्षुर्द्विविधमपनुदत्कर्म नम्रत्रिनेत्रं
दात्रर्थानाञ्चतुर्णाङ्गमयदरिगणम्पञ्चतां षड्गुणाढ्यम्।
सप्तार्चिश्शोषिताष्टापद-नवकिरण-श्रेणिरज्यद्दशाशं
पर्यस्याद्वश्शताङ्गावयव-परिवृढज्योतिरीतीस्सहस्रम्॥१०॥

उच्चण्डे यच्छिखण्डे निविडयति नभः क्रोडमर्कोटतिद्याम्
अभ्यस्य प्रौढतापग्लपितवपुरपो बिभ्रतीरभ्रपङ्क्तीः।
धत्ते शुष्यत्सुधोत्सो विधुरपमधुनः क्षौद्रकोशस्य साम्यं
रक्षन्त्वस्त्रप्रभोस्ते रचितसुरचितव्युष्टयो घृष्टयो वः॥११॥

पद्मौघो दीर्घिकाम्भस्यवनिधरतटे गैरिकाम्बुप्रपातः
सिन्दूरङ्कुञ्जराणान्दिशि दिशि गगने सान्ध्यमेघप्रबन्धः।
पारावारे प्रवालो वनभुवि च तथा प्रेक्ष्यमाणः प्रमुग्धैः
साधिष्ठं वः प्रमोदं जनयतु दनुजद्वैषिणस्त्वैषराशिः॥१२॥

भानो भा नो त्वदीया स्फुरति कुमुदिनीमित्र ते कुत्र तेज-
स्तारास्थारादधीरोऽस्यनल न भवतः स्वैरमैरम्मदार्चिः।
शंसन्तीत्थं नभःस्था यदुदयसमये चक्रराजांशवस्ते
युष्माकम्प्रौढताप-प्रभवभवगदापक्रमाय क्रमन्ताम्॥१३॥

जग्ध्वा कर्णेषु दूर्वाङ्कुरमरिसुदृशामक्षिषु स्वर्वधूनाम्-
पीत्वा चाम्भश्चरन्त्यस्सवृषमनुगता वल्लवेनादिमेन।
गावो वश्चक्रभर्तुः परममृतरसम्प्रश्रितानान्दुहाना
ऋद्धिं स्वालोकलुप्तत्रिभुवनतमसस्सानुबन्धान्ददन्ताम्॥१४॥

सेनां सेनाम्मघोनो महति रणमुखेऽलम्भयल्ँलम्भयन्ती-
रुत्सेकोष्णालुदोष्णाम्प्रथम-दिविषदामावलीर्यावलीढे।
विश्वं विश्वम्भराद्यं रथपदधिपतेर्लीलया पालयन्ती
ऋद्धिः सा दीधितीनां वृजिनमनुजनुर्मार्जयत्वार्जितं वः॥१५॥

तप्ता स्वेनोष्मणेव प्रतिभटवपुषामस्रधारान्धयन्ती
प्राप्तेव क्षीबभावम्प्रतिदिशमसकृत्तन्वती घूर्णितानि।
वंशास्थिस्फोटशब्दम्प्रकटयति पटून् यावहन्त्यट्टहासान्
भा सा वः स्यन्दनाङ्गप्रभुसमुदयिनी स्पन्दताञ्चिन्तिताय॥१६॥

देवैरासेव्यमानो दनुजभटभुजादण्डदर्पोष्णतप्तै-
राशारोधोतिलङ्घी लुठदुडुपटलीलक्ष्यडिण्डीरपिण्डः।
रिङ्गज्ज्वालातरङ्ग-त्रुटितरिपुतरु-व्रातपातोग्रमार्ग-
श्चाक्रो वश्शोचिरोधश्शमयतु दुरितापह्नवन्दाववह्निम्॥१७॥

भ्राम्यन्ती संश्रितानाम्भ्रमशमनकरीच्छन्नसूर्यप्रकाशा
सूर्यालोकानुरूपा रिपुहृदयतमस्कारिणी निस्तमस्का।
धारासम्पातिनी च प्रकटितदहना दीप्तिरस्त्रेशितुर्व-
श्चित्रा भद्राय विद्रावितविमतजना जायतामायताय॥१८॥

निन्ये वन्येव काशीदवशिखिजटिलज्योतिषा येन दाहङ्-
कृत्या वृत्या विलिल्ये शलभसुलभया यत्र चित्रप्रभावे।
रुद्रोऽप्यद्रेर्दुहित्रा सह गहनगुहां यद्भयादभ्ययासीत्
दिश्याद्विश्वार्चितो वस्स शुभमनिभृतं शौरिहेतिप्रतापः॥१९॥

उद्यन् बिम्बादुदारान्नयनजलहिमम्मार्जयन्निर्जरीणाम्
अज्ञानध्वान्त-मूर्च्छाकरजनिरजनी-भञ्जनव्यञ्जिताध्वा।
न्यक्कुर्वाणो ग्रहाणां स्फुरणमपहरन्नर्चिषः पावकीया-
श्चक्रेशार्कप्रकाशो दिशतु दश दिशो व्यश्नुवानं यशो वः॥२०॥

वर्गस्य स्वर्गधाम्नामपि दनुजनुषां विग्रहन्निग्रहीतुं
दातुं सद्योऽबलानां श्रियमतिशयिनीम्पत्रभङ्गानुवृत्त्या।
योक्तुन्देदीप्यते या युगपदपि पुरो भूतिमय्याप्रकृत्या
सा वो नुद्यादविद्यान्द्युतिरमृतरसस्यन्दिनी स्यान्दनाङ्गी॥२१॥

दाहन्दाहं सपत्नान्समरभुवि लसद्भस्मना वर्त्मना यान्
क्रव्यादप्रेतभूताद्यभिलषितपुषा प्रीतकापालिकेन।
कङ्कालैः कालधौतङ्गिरिमिव कुरुते यः स्वकीर्तेर्विहर्तुङ्-
घृष्टिस्सान्दृष्टिकं वस्सकलमुपनयत्वायुधाग्रेसरस्य॥२२॥

दग्धानान्दानवानां सभसितनिचयैरस्थिभिस्सर्वशुभ्राम्-
पृथ्वीङ्कृत्वापि भूयो नवरुधिरझरीकौतुकङ्कौणपेभ्यः।
कुर्वाणम्बाष्पपूरैः कुचतटघुसृणक्षालनैस्तद्वधूनाम्-
पापम्पापचय्मानं शमयतु भवतामस्त्रराजस्य तेजः॥२३॥

मा गान्मोषल्ँललाटानल इति मदनद्वेषिणा ध्यायतेव
स्रष्ट्रा प्रोन्निद्रवासाम्बुजदलपटलप्लोषमुत्पश्यतेव।
वज्राग्निर्मा स्म नाशं व्रजदिति चकितेनेव शक्रेण बद्धैः
स्तोत्रैरस्त्रेश्वरस्य द्यतु दुरितशतन्द्योतमाना द्युतिर्वः॥२४॥

अथ नेमिवर्णनम्

शस्त्रास्त्रं शात्रवाणां शलभकुलमिव ज्वालया लेलिहाना
घोषैः स्वैः क्षोभयन्ती विघटितभगवद्योगनिद्रान् समुद्रान्।
व्यूढोरः प्रौढचारत्रुटितपटुरटत्कीकसक्षुण्णदैत्या
नेमिस्सौदर्शनी वश्श्रियमतिशयिनीन्दाशतादाशताब्दम्॥२५॥

धारा चक्रस्य तारागणकणवितति-द्योतितद्युप्रचारा
पारावाराम्बुपूर-क्वथनपिशुनितोत्ताल-पातालयात्रा।
गोत्राद्रिस्फोटशब्द-प्रकटितवसुधा-मण्डलीचण्डयाना
पन्थानं वः प्रदिश्यात् प्रशमनकुशला पाप्मनामात्मनीनम्॥२६॥

यात्रा या त्रातलोका प्रकटितवरुणत्रासमुद्रे समुद्रे
सत्त्वासत्त्वासहोष्णा कृतसगरुदगस्पन्ददानाददाना।
हानिं हा निन्दितानाञ्जगति परिषदान्दानवीनान्नवीना-
ञ्चक्रे चक्रेशनेमिश्शमुपहरतु सा सप्रभावप्रभा वः॥२७॥

यत्रामित्रान्दिधक्षौ प्रविशति बलिनो धाम निःसीमधाम्नि
ग्रस्तापस्तापशीर्णैः प्रगुणितसिकतो मौक्तिकैश्शौक्तिकेयैः।
राशिर्वारामपाराम्प्रकटयति पुनर्वैरिदाराश्रुपूरै-
र्वृद्धिन्निर्याति निर्यापयतु स दुरितान्यस्त्रराजप्रधिर्वः॥२८॥

कक्ष्यातौल्येन कद्रूतनयफणमणीन् कल्यदीपस्य युञ्जन्
पातालान्तः प्रपाती निखिलमपि तमः स्वेन धाम्ना निगीर्य।
दैतेयप्रेयसीनां वमति हृदि हतप्रेयसाम्भूयसां य-
श्चक्राग्रीयाग्रदेशो दहतु विलसितम्भूयसामंहसां वः॥२९॥

कृष्णाम्भोदस्य भूषा कृतनय-नयनव्याहतिर्भार्गवस्य
प्राप्तामावेदयन्ती प्रतिभटसुदृशामुद्धटां वाष्पवृष्टिम्।
निष्टप्ताष्टापदश्रीस्स्समममरचमू-गर्जितैरुज्जिहाना
कीर्तिं वः केतकीभिः प्रथयतु सदृशीञ्चञ्चला चक्रधारा॥३०॥

वप्राणाम्भेदिनीं यः परिणतिमखिलश्लाघनीयान्दधानः
क्षुण्णां नक्षत्रमालां दिशि दिशि विकिरन् विद्युता तुल्यकक्ष्यः।
निर्याणेनोत्कटेन प्रकटयति नवन्दानवारिप्रकर्ष-
ञ्चक्राधीशस्य भद्रो वशयतु भवतां स प्रधिश्चित्तवृत्तिम्॥३१॥

नाकौकश्शत्रु-जत्रुत्रुटनविघटितस्कन्धनीरन्ध्रनिर्यन्
नव्यक्रव्यास्रहव्य-ग्रसनरसलस-ज्ज्वालजिह्वालवह्निम्।
यन्दृष्ट्वा सांयुगीनम्पुनरपि विदधत्याशिषो वीर्यवृद्ध्यै
गीर्वाणा निर्वृणाना वितरतु स जयं विष्णुहेतिप्रधिर्वः॥३२॥

धन्वाध्वन्यस्य धारासलिलमिव धनन्दुर्गतस्येव दृष्टि-
र्जात्यन्धस्येव पङ्गोः पदविहतिरिव प्रीणनी प्रेमभाजाम्।
पत्युर्माया क्रियायाम्प्रकटपरिणतिर्विश्वरक्षाक्षमायाम्-
मायामायामिनीं वस्त्रुटयतु महतीन्नेमिरस्त्रेश्वरस्य॥३३॥

त्राणं वा विष्टपानां वितरति च यया कल्प्यते कामपूर्ति-
र्न स्थातुं यत्पुरस्तात् प्रभवति कलयाप्यौषधीनामधीशः।
उन्मेषो याति यस्या न समयनियतिं साश्रियं वः प्रदेयान्-
न्यक्कृत्य द्योतमाना त्रिपुरहरदृशन्नेमिरस्त्रेश्वरस्य॥३४॥

नक्षत्रक्षोदभूति-प्रकरविकिरण-श्वेतिताशावकाशा
जीर्णैः पर्णैरिव द्याञ्जलधरपटलैश्चूर्णितैरुर्णुवाना।
आजावाजानवाजानत-रिपुजनतारण्यमावर्तमाना
नेमिर्वात्येव चाक्री प्रणुदतु भवतां संहतम्पापतूलम्॥३५॥

क्षिप्त्वा नेपथ्यशाटीमिव जलदघटाञ्जिष्णुकोदण्डचित्रान्-
तारापुञ्जम्प्रसूनाञ्जलिमिव विपुले व्योमरङ्गे विकीर्य।
निर्वेदग्लानिचिन्ताप्रभृतिपरवशानन्तरा दानवेन्द्रान्-
नृत्यन्नानालयाढ्यन्नट इव तनुतां शर्म चक्रप्रधिर्वः॥३६॥

दौर्गत्यप्रौढतापप्रतिभटविभवा वित्तधारास्सृजन्ती
गर्जन्ती चीत्क्रियाभिर्ज्वलदनल-शिखोद्दामसौदामनीका।
अव्यात् क्रव्याद्वधूटीनयनजलभरैर्दिक्षु नव्याननाव्यान्
पुष्यन्ती सिन्धुपूरान् रथचरणपतेर्नेमिकादम्बिनी वः॥३७॥

सन्दोहन्दानवानामजसमजमिवालभ्य जाज्वल्यमाने
वह्नावह्नाय जुह्वत्त्रिदशपरिषदे स्वस्वभागप्रदायी।
स्तोत्रैर्ब्रह्मादिगीतैर्मुखरपरिसरं श्लाघ्यशस्त्रप्रयोगम्-
प्राप्तस्सङ्ग्रामसत्रम्प्रधिरसुररिपोः प्रार्थितम्प्रस्नुतां वः॥३८॥

अरवर्णनम्

उत्पातालातकल्पान्यसुर-परिषदामाहवप्रार्थिनीनाम्
अध्वानध्वावबोध-क्षपणचणतमः क्षेपदीपोपमानि।
त्रैलोक्यागारभारोद्वहन-सहमणि-स्तम्भसम्पत्सखानि
त्रायन्तामन्तिमायां विपदि सपदि वोऽराणि सौदर्शनानि॥३९॥

ज्वालाजालप्रवालस्तबकितशिरसो नाभिमावालयन्त्यः
सिक्ता रक्ताम्बुपूरैश्शकलितवपुषां शात्रवानीकिनीनाम्।
चक्राक्रीडप्ररूढा भुजगशयंभुजोपघ्ननिघ्नप्रचाराः
पुष्यन्त्यः कीर्तिपुष्पाण्यरकनकलताः प्रीतये वः प्रथन्ताम्॥४०॥

ज्वालाजालाब्धिमुद्रं क्षितिवलयमिवाबिभ्रती नेमिचक्र-
न्नागेन्द्रस्येव नाभेः फणपरिषदिव प्रौढरत्नप्रकाशा।
दत्तां वो दिव्यहेतेर्मतिमरविततिः ख्यातसाहस्रङ्ख्या
सङ्ख्यावत्सङ्घचित्त-श्रवणहरगुणस्यन्दि-सन्दर्भगर्भाम्॥४१॥

ब्रह्मेशोपक्रमाणाम्बहुविधविमतक्षोदसम्मोदितानां
सेवायै देवतानां दनुजकुलरिपो पिण्डिकाद्यङ्गभाजाम्।
तत्तद्धामान्तसीमा-विभजनविधये मानदण्डायमाना
भूमानम्भूयसां वो दिशतु दशशती भास्वराणामराणाम्॥४२॥

ज्वालाकल्लोलमालानिविडपरिसरान्नेमिवेलान्दधाने
पूर्वेणाक्रान्तमध्ये भुवनमयहविर्भोजिना पूरुषेण।
प्रस्फूर्जत्प्राज्यरत्ने रथपदजलधावेधमानैः स्फुलिङ्गै-
र्भद्रं वो विद्रुमाणां श्रियमरविततिर्विस्तृणाना विधत्ताम्॥४३॥

नासीरस्वैरभग्नप्रतिभटरुधिरासारधारावसेकान्
एकान्तस्मेर-पद्मप्रकर-सहचरच्छायया प्राप्य नाभ्या।
मुक्तानीवाङ्कुराणि स्फुरदनलशिखादर्शितप्राक्प्रवाला-
न्यव्याघातेन भव्यम्प्रददतु भवतान्दिव्यहेतेरराणि॥४४॥

दावोल्कामण्डलीव द्रुमगणगहने बाडवस्येव वह्ने-
र्ज्वालावृद्धिर्महाब्धौ प्रवयसि तमसि प्रातरर्कप्रभेव।
चक्रे या दानवानां हयकरटिघटासङ्कटे जाघटीति
प्राज्यं सा वः प्रदेयात् पदमरपरिषत्पद्मनाभायुधस्य॥४५॥

तापाद् दैत्यप्रतापातपसमुपचितात् त्रायमाणन्त्रिलोकीं
लोलैर्ज्वालाकलापैः प्रकटयदभितश्चीनपट्टाञ्चलानि।
छत्राकारं शलाका इव कनककृताश्शौरिदोर्दण्डलग्नम्-
भूयासुर्भूषयन्त्यो रथचरणमरस्फूर्तयः कीर्तये वः॥४६॥

नाभीशालानिखातान्नहनसमुचितां वैरिलक्ष्मीवशानां
संयद्वारीहतानां समनुविदधती काञ्चनालानपङ्क्तिम्।
राज्या च प्राज्यदैत्यव्रजविजयमहोत्तम्भितानाम्भुजानां
तुल्या चक्रारमाला तुलयतु भवतान्तूलवच्छत्रुलोकम्॥४७॥

आनेमेश्चक्रवालात्विष इव वितताः पिण्डिकाचण्डदीप्ते-
र्दीप्ता दीपा इवाराद्गहनरणतमीगाहिनः पूरुषस्य।
शाणे रेखायितानां रथचरणमये शत्रुशौण्डीर्यहेम्नां
रेखाः प्रत्यग्रलग्ना इव भुवनमरश्रेणयः प्रीणयन्तु॥४८॥

दीप्तैरर्चिः प्ररोहैर्दलवति विधृते बाहुनालेन विष्णो-
रुद्यत्प्रद्योतनाभम्प्रथयति पुरुषङ्कर्णिकावर्णिकायाम्।
चूडालं वेदमौलिङ्कलयति कमले चक्रनाम्नोपलक्ष्ये
लक्ष्मीं स्फारामराणि प्रतिविदधतु वः केसरश्रीकराणि॥४९॥

धातुस्यन्दैरमन्दैः कलुषितवपुषो निर्झराम्भः प्रपातान्
अर्चिष्मत्या स्वमूर्त्या रथचरणगिरेर्नेमिनाभीतटस्य।
व्याकुर्वाणारपङ्क्तिर्वितरतु विभुताविस्तृतिं वित्तकोटी
कोटीरच्छत्रपीठी-कटककरिघटा-चामरस्रग्विणीं वः॥५०॥

अथ नाभिवर्णनम्

ऐक्येन द्वादशानामशिशिरमहसान्दर्शयन्ती प्रवृत्तिं
दत्तः स्वर्लोकलक्ष्म्यास्तिलक इव मुखे पद्मरागद्रवेण।
देयाद् दैतेयदर्पक्षतिकरणरण-प्रीणिताम्भोजनाभि-
र्नाभिर्नाभित्वमुर्व्यास्सुरपतिविभवस्पर्शि सौदर्शनी वः॥५१॥

शस्त्रश्यामे शताङ्गक्षितिभृतितरलैरुत्तरङ्गे तुरङ्गै-
स्त्वङ्गन्मातङ्गनक्रे कुपितभटमुखच्छायमुग्धप्रवाले।
अस्तोकम्प्रस्नुवाना प्रतिभटजलधौ पाटवं वाडवस्य
श्रेयो वस्संविधत्तां श्रितदुरितहरा श्रीधरास्त्रस्य नाभिः॥५२॥

ज्वालाचूडाल-कालानल-चलनसमाडम्बरा साम्परायं
यासावासाद्यमाद्यत्सुर-सुभटभुजास्फोट-कोलाहलाढ्यम्।
दैत्यारण्यन्दहन्ती विरचयति यशोभूतिशुभ्रान्धरित्रीं
सा वश्चक्रस्य नक्रस्यदमृदितगजत्रायिणी नाभिरव्यात्॥५३॥

विन्दन्ती सान्ध्यमर्चिर्विदलितवपुषः प्रत्यनीकस्य रक्तैः
स्फायन्नक्षत्रराशिर्दिशि दिशि कणशः कीकसैः कीर्यमाणैः।
नाकौकः पक्ष्मलाक्षीनवमदहसितच्छायया चन्द्रपादान्
राथाङ्गी विस्तृणाना रचयतु कुशलम्पिण्डिकायामिनी वः॥५४॥

निस्सीमं निस्सृताया भुजधरणिधराघाटतः कैटभारे-
राशाकूलङ्कषर्द्धेरहित-बलमहाम्भोधिमासादयन्त्याः।
चक्रज्वालापगायाश्चलदर-लहरीमालिकादन्तुराया
बिभ्रत्यावर्तभावम्भ्रमयतु भुवने पिण्डिका वः प्रशस्तिम्॥५५॥

पाणौ कृत्वाहवाग्रे प्रतिभटविजयोपार्जितां वीरलक्ष्मीम्
आनीतायास्ततोऽस्याः स्वसविधमसुरद्वेषिणा पूरुषेण।
प्रासादं वासहेतोर्विरचितमरुणै रश्मिभिस्सूचयन्ती
नाभिर्वो निर्मिमीतां रथचरणपतेर्निर्वृतिन्निर्विघाताम्॥५६॥

डिण्डीरापाण्डुगण्डैररियुवतिमुखैः पिण्डिका कृष्णहेते-
रुच्चण्डाश्रुप्रवर्षैरुपरत-तिलकैरुक्तशौण्डीर्यचर्या।
द्वित्रग्रामाधिपत्य-द्रुहिणमदमषी-दूषिताक्षक्षमाभृत्
सेवाहेवाकपाकं शमयतु भवताङ्कर्म शर्मप्रतीपम्॥५७॥

पर्याप्तामुन्नतिं या प्रथयति कमलं या तिरोभाव्य भाति
स्रष्टुस्सृष्टेर्दवीयः कुवलयमहितं या बिभर्ति स्वरूपम्।
भूम्ना स्वेनान्तरिक्षङ्कवलयति च या सा विचित्रा विधत्तां
दैतेयारातिनाभिर्द्रविणपतिपदद्रोहिणीं सम्पदं वः॥५८॥

वाणीवाङ्गैश्चतुर्भिस्सदसि सुमनसान्द्योतमानस्वरूपा
बाह्वन्तःस्था मुरारेरभिमतमखिलं श्रीरिव स्पर्शयन्ती।
दुर्गेवोग्राकृतिर्या त्रिभुवनजननस्थेमसंहारधुर्या
मर्यादालङ्घनं वः क्षपयतु महती हेतिवर्यस्य नाभिः॥५९॥

स्रग्भिस्सन्तानजाभिर्मधुर-मधुरसस्यन्दसन्दोहिनीभिः
पाटीरैः प्रौढचन्द्रातपचयसुषमालोपनैर्लेपनैश्च।
धूपैः कालागरूणामपि सुरसुदृशो विस्रमर्चासु यस्या
गन्धं रुन्धन्ति सा वश्चिरमसुरभिदो नाभिरव्यादभव्यात्॥६०॥

अंहस्संहत्य दग्ध्वा प्रतिजनिजनितम्प्रौढसंसारवन्या
दूराध्वन्यानधन्यान् महति विनतिभिर्धामनि स्थापयन्ति।
विश्रान्तिं शाश्वतीं या नयति रमयताञ्चक्रराजस्य नाभिः
संयन्मोमुह्यमानत्रिदशरिपुदशासाक्षिणी साक्षिणी वः॥६१॥

अथ अक्षवर्णनम्

श्रुत्वा यन्नामशब्दं श्रुतिपथकटुकन्देवनक्रीडनेषु
स्ववैरिस्वैरवत्यो भयविवशधियः कातरन्यस्तशाराः।
मन्दाक्षं यान्त्यमन्दम्प्रतियुवतिमुखैर्दर्शितोत्प्रासदर्पै-
रक्षं सौदर्शनन्तत्क्षपयतु भवतामेधमानान्धनायाम्॥६२॥

व्यस्तस्कन्धं विशीर्णप्रसवपरिकरम्प्रत्तपत्रोपमर्द
संयद्वर्षासु तर्षातुरखगपरिषत्पीतरक्तोदकासु।
अक्षं रक्षस्तरूणामशनिवदशनैरापतन्मूर्ध्नि मूर्ध्नि
स्तादस्त्राधीशितुर्वः स्तबकितयशसे द्वेषिणां प्लोषणाय॥६३॥

दीक्षां सङ्ग्रामसत्रे महति कृतवतो दीप्तिभिस्संहताभि-
र्जिह्वाले सप्तजिह्वे दनुजकुलहविर्जुह्वतो नेमिजुह्वा।
वैकुण्ठास्त्रस्य कुण्डम्महदिव विलसत्पिण्डिकावेदिमध्ये
दिश्याद्दिव्यर्द्धिदेश्यम्पदमिह भवतामक्षतोन्मेषमक्षम्॥६४॥

तुङ्गाद्दोरद्रिशृङ्गाद्दनुजविजयिनः स्पष्टदानोद्यमानां
शत्रुस्तम्बेरमाणं शिरसि निपततस्स्रस्तमुक्तास्थिपुञ्जे।
रक्तैरभ्यक्तमूर्तेर्विदलनगलितैर्व्यक्तवीरायितर्द्धे-
र्हर्यक्षस्यारिभङ्गञ्जनयतु जगतामीडितङ्क्रीडितं वः॥६५॥

उन्मीलत्पद्मरागङ्कटकमिव धृतम्बाहुना यन्मुरारे-
र्दीप्तान् रश्मीन् दधानन्नयनमिव यदुत्तारकं विष्टपस्य।
चक्रेशार्कस्य यद्वा परिधिरभिदधद्दैत्यहत्यामिव द्राग्
अक्षम्पक्षे पतित्वा परिघटयतु वस्तद् द्रढिष्ठाम्प्रतिष्ठाम्।।६६।।

क्रीडत्प्राक्रोडदंष्ट्राहति-दलितहिरण्याक्ष-वक्षःकवाट-
प्रादुर्भूतप्रभूतक्षत-जसमुदितारुण्यमुद्रं समुद्रम्।
उन्मीलत्किंशुकाभैरुपहसदमितैरंशुभिस्संशयघ्नीम्
अक्षं चक्रस्य दत्तामघशतशमनन्दाशुषीं शेमुषीं वः।।६७।।

पद्मोल्लासप्रदं यज्जनयति जगतीमेधमानप्रबोधां
यस्यच्छायासमाना लसति परिसरे रोहिणी तारकाग्र्या।
नानाहेत्युन्नतत्वम्प्रकटयति च यत्प्राप्तकृष्णप्रयाणन्-
त्रेधा भिन्नस्य धाम्नस्समुदय इव तत्पातु वश्चाक्रमक्षम्।।६८।।

शोचिर्भिः पद्मरागद्रवसमसुषमैश्शोभमानावकाशम्-
प्रत्यग्राशोकरागप्रतिभटवपुषा भूषितम्पूरुषेण।
अन्तः स्वच्छन्दमग्नोत्थितभृगुतनयङ्क्षत्रियाणाङ्क्षतानाम्
आरब्धं शोणितौघैस्सर इव भवतो दिव्यहेत्यक्षमव्यात्।।६९।।

मत्तानामिन्द्रियाणाङ्कृतविषयमहाकाननक्रीडनानां
सृष्टञ्चक्रेश्वरेण ग्रहणधिषणया वारिवद्वारणानाम्।
गम्भीरं यन्त्रगर्तङ्कमपि कृतधियो मन्वते यत्प्रदेयाद्
अस्थूलां संविदं वस्त्रिजगदभिमतस्थूललक्षन्तदक्षम्।।७०।।

प्राणादीन् सन्नियम्य प्रणिहितमनसां योगिनामन्तरङ्गे
तुङ्गं सङ्कोच्य रूपं विरचितदहराकाशकृच्छ्रासिकेन।
प्राप्तं यत्पूरुषेण स्वमहिमसदृशन्धाम कामप्रदं वो
भूयात्तद्भूर्भुवः स्वस्त्रयवरिवसितम्पुष्कराक्षायुधाक्षम्।।७१।।

विद्धान् वीध्रेण धाम्ना चरणनखभुवा बद्धवासस्य मध्ये
चक्राध्यक्षस्य बिभ्रत्परिहसितजपापुष्पकोशान्प्रकाशान्।
शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैस्शरदि तत इतो व्योम विभ्राजमानम्-
प्रातस्त्यादित्यरोचिस्ततमिव भवतः पातु राथाङ्गमक्षम्।।७२।।

श्रीवाणीवाङ्मृडान्यो विदधति भजनं शक्तयो यस्य दिक्षु
प्राह व्यूहं यदाद्यम्प्रथममपि गुणम्भारती पाञ्चरात्री।
घोरां शान्तां च मूर्तिम्प्रथयति पुरुषः प्राक्तनः प्रार्थनाभि-
र्भक्तानां यस्य मध्ये दिशतु तदनघामक्षमध्यक्षतां वः।।७३।।

रक्षः पक्षेण रक्षत्क्षतममरगणल्लँक्ष्यवैलक्ष्यमाजौ
लक्ष्मीमक्षीयमाणाम्बलमथनभुजे वज्रशिक्षानपेक्षे।
निक्षिप्य क्षिप्रमध्यक्षयति जगति यद्दक्षतान्दिव्यहेते-
रक्षामामक्षमान्ताङ्क्षपयतु भवतामक्षजिल्लक्ष्यमक्षम्।।७४।।

अथ पुरुषवर्णनम्

ज्योतिश्चूडालमौलिस्त्रिनयनवदनष्षोडशोत्तुङ्गबाहुः
प्रत्यालीढेन तिष्ठन् प्रणवशशधराधारषट्कोणवर्ती।
निस्सीमेन स्वधाम्ना निखिलमपि जगत्क्षेमवन्निर्मिमाणो
भूयात्सौदर्शनो वः प्रतिभटपरुषः पूरुषः पौरुषाय।।७५।।

वाणी पौराणिकी यम्प्रथयति महितम्प्रेक्षणङ्कैटभारेः
शक्तिर्यस्येषुदंष्ट्रानखपरशुमुखव्यापिनी तद्विभूत्याम्।
कर्तुं यत्तत्वबोधो न निशितमतिभिर्नारदाद्यैश्च शक्यो
दैवीं वो मानुषीञ्च क्षिपतु स विपदन्दुस्तरामस्त्रराजः॥७६॥

रूढस्तारालवाले रुचिरदलचयः श्यामलैश्शस्त्रजालै-
र्ज्वालाभिस्सप्रवालः प्रकटितकुसुमो बद्धसङ्घैः स्फुलिङ्गैः।
प्राप्तानाम्पादमूलम्प्रकृतिमधुरया छायया तापहृद्वो
दत्तामुद्दोः प्रकाण्डः फलमभिलषितं विष्णुसङ्कल्पवृक्षः॥७७॥

धाम्नामैरम्मदानां निचयमिव चिरस्थायिनां द्वादशानाम्-
मार्तण्डानां समूहम्मह इव बहुलां रत्नभासामिवर्द्धिम्।
अर्चिस्सङ्घातमेकीकृतमिव शिखिनां वाडवाग्रेसराणां
शङ्कन्ते यस्य रूपं स भवतु भवतान्तेजसे चक्रराजः॥७८॥

उग्रम्पश्याक्षमुद्यद्भ्रुकुटि समुकुटङ्कुण्डलि स्पष्टदंष्ट्र-
ञ्चण्डास्त्रैर्बाहुदण्डैर्लसदनल-समक्षौमलक्ष्योरुकाण्डम्।
प्रत्यालीढस्थपादम्प्रथयतु भवताम्पालनव्यग्रमग्रे
चक्रेशोऽकालकालेरितभटविकटाटोपलोपाय रूपम्॥७९॥

चक्रङ्कुन्तङ्कृपाणम्परशुहुतवहावङ्कुशन्दण्डशक्ती
शङ्खङ्कोदण्डपाशौ हलमुसलगदावज्रशूलाँश्च हेतीन्।
दोर्भिस्सव्यापसव्यैर्दधदतुल-बलस्तम्भितारातिदर्पै-
र्व्यूहस्तेजोभिमानी नरकविजयिनो जृम्भतां सम्पदे वः॥८०॥

पीतङ्क्लेशे रिपोरप्यसृजि रथपदे संश्रितेऽप्युत्कटाक्ष-
ञ्चन्द्राधःकारि यन्त्रे वपुषि च दलने मण्डले च स्वराङ्कम्।
हस्ते वक्त्रे च हेतिस्तवकितमसमल्लँलोचने मोचने च
स्तादस्तोकाय धाम्ने सुरवरपरिषत्सेवितन्दैवतं वः॥८१॥

चित्राकारैः स्वचारैर्मितसकलजगज्जागरूकप्रतापो
मन्त्रन्तन्त्रानुरूपम्मनसि कलयतो मानयन्नात्मगुह्यान्।
पञ्चाङ्गस्फूर्तिनिर्वर्तित-रिपुविजयो धाम षण्णाङ्गुणानाम्
लक्ष्मीं राजासनस्थो वितरतु भवताम्पूरुषश्चक्रवर्ती॥८२॥

अक्षावृत्ताभ्रमालान्यर-विवरलुठच्चन्द्र-चण्डद्युतीनि
ज्वालाजालावलीढ-स्फुटदुडुपटली-पाण्डुदिङ्मण्डलानि।
चक्रान्ताक्रान्तचक्राचल-चलितमही-चक्रवालार्तशेषा-
ण्यस्त्रग्रामाग्रिमस्य प्रददतु भवताम्प्रार्थितम्प्रस्थितानि॥८३॥

शूलन्त्यक्तात्मशीलं सृणिरणुकघृणिः पट्टसः स्पष्टसादः
शक्तिश्शालीनशक्तिः कुलिशमकुशलङ्कुण्ठधारः कुठारः।
दण्डश्चण्डत्वशून्यो भवति तनुधनुर्यत्पुरस्तात्स वः स्ताद्
ग्रस्ताशेषास्त्रगर्वो रथचरणपतिः कर्मणे शार्मणाय॥८४॥

क्षुण्णाजानेयवृन्दङ्क्षुभितरथगणं सन्त्रसान्नाय्ययूथं
क्ष्वेलासंरम्भहेला-कलकलविगलत्पूर्वगीर्वाणगर्वम्।
कुर्वाणस्साम्परायं रथचरणपतिः स्थेयसीं वः प्रशस्तिं
दुग्धान्दुग्धाब्धिभासम्भयविवशशुनासीरनासीरवर्ती॥८५॥

द्रुह्यद्दोश्शालिमालिप्रहरणरभसोत्तानिते वैनतेये
विद्राति द्राक्प्रयुक्तः प्रधनभुवि परावर्त्तमानेन भर्त्रा।
निर्जित्य प्रत्यनीकन्निरवधिकचरद्धास्तिकाश्वीयरथ्यम्-
पथ्यं विश्वस्य दाश्वान् प्रथयतु भवतो हेतिरिन्द्रानुजस्य॥८६॥

नन्दिन्यानन्दशून्ये गलति गणपतौ व्याकुले बाहुलेये
चण्डे चाकित्यकुण्ठे प्रमथपरिषदि प्राप्तवत्याम्प्रमाथम्।
उच्छिद्याजौ बलिष्ठम्बलिजभुजवनं यो ददावादिभिक्षो-
र्भिक्षान्तत्प्राणरूपां स भवदकुशलङ्कृष्णहेतिः क्षिणोतु॥८७॥

रक्तौघाभ्यक्तमुक्ताफललुलितललद्वीचिवृद्धौ महाब्धौ
सन्ध्यासम्बद्धतारा-जलधर-शबलाकाशनीकाशकान्तौ।
गम्भीरारम्भमम्भश्चरमसुरकुलं वेदविघ्नं विनिघ्नन्
निर्विघ्नं वः प्रसूतां व्यपगतविपदं सम्पदञ्चक्रराजः॥८८॥

काशीविप्लोषचैद्य-क्षपणधरणिज-ध्वंससूर्यापिधान-
ग्राहद्वेधात्वमालि-त्रुटनमुखकथावस्तुसत्कीर्तिगाथाः।
गीयन्ते किन्नरीभिः कनकगिरिगुहागेहिनीभिर्यदीया
देयाद् दैतेयवैरी स सकलभुवनश्लाघनीयां श्रियं वः॥८९॥

नानावर्णान् विवृण्वन् विरचितभुवनानुग्रहान् विग्रहान्य-
श्चक्रेष्वष्टासु मृष्टासुरवरतरुणीकण्ठकस्तूरिकेषु।
आतारादर्णमालावधिषु वसति यः पूरुषो वस्स वध्याद्
व्यध्वैरुद्धूतसत्त्वै-रुपहितमबहि-र्ध्वान्तमध्वान्तवर्ती॥९०॥

द्वात्रिंशत्षोडशाष्ट-प्रभृतिपृथुभुजस्फूर्तिभिर्मूर्तिभेदैः
कालाद्ये चक्रषट्के प्रकटितविभवः पञ्चकृत्यानुरूपम्।
अर्थानामर्थितानामहरहरखिलन्निर्विलम्बैर्विलम्बैः
कुर्वाणो भक्तवर्गङ्कुशलिनमवतादायुधग्रामणीर्वः॥९१॥

कोणैरर्णैः सरोजैरपि कपिशगुणैष्षड्भिरुद्भिन्नशोभे
श्रीवाणीपूर्विकाभिर्दधति विकसतश्शक्तिभिः केशवादीन्।
तारान्ते भूपुरादौ रथचरणगदाशार्ङ्गखड्गाङ्किताशे
यन्त्रे तन्त्रोदिते वः स्फुरतु कृतपदं लक्ष्म लक्ष्मीसखस्य॥९२॥

दंष्ट्राकान्त्या कडारे कपटकिटितनोः कैटभारेरधस्ताद्
ऊर्ध्वं हासेन विद्धे नरहरिवपुषो मण्डले वासवीये।
प्राक्प्रत्यक्सान्ध्य-सान्द्रच्छविभरभरिते व्योम्नि विद्योतमानो
दैतेयोत्पातशंसी रविरिव रहयत्वस्त्रराजो रुजं वः॥९३॥

कोणे क्वापि स्थितोऽपि त्रिभुवनविततश्चन्द्रधामापि रुक्षो
रुक्मच्छायोऽपि कृष्णाकृतिरनलमयोऽप्याश्रितत्राणकारी।
धारासारोऽपि दीप्तो दिनकररुचिरप्युल्लसत्तारकश्री-
श्चक्रेशश्चित्रभूमा वितरतु विमतत्रासनं शासनं वः॥९४॥

शुक्लश्शक्रः स्तवस्ते सह दहन! कलाङ्काल! तेऽयं न कालः
किं वो रक्षांसि रक्षा तव फलतु पते! यादसाम्पादसेवा।
वायो! हृद्योऽसि भर्तुस्त्यज धनद! मदं सेव्यतान्त्र्यम्बकेति
प्राहुर्यद्यन्त्रपालाः स दनुजविजयी हन्तु तन्द्रालुतां वः॥९५॥

गायत्र्यर्णारचक्रे प्रथममनुसखः स्मेरपत्रारविन्दे
बिम्बं वह्नेस्त्रिकोणं वहति जयिजयाद्यष्टशक्तौ निषण्णा।
शोकं वो शोकमूले पदसविधलसद्भीमभीमाक्षभीमा
पुंसो दिव्यास्त्रधामा पुरुषहरिमयी मूर्तिरस्यत्वपूर्वा॥९६॥

पाश्चात्याशोकपुष्पप्रकरनिपतितैः प्राप्तरागम्परागैः
सन्ध्यारोचिस्सगन्धैः स्वपदशशधरम्प्रेक्ष्य तारानुषक्तम्।
पद्मानाबद्धकोशानिव सुरनिवहैरञ्जलीन् कल्प्यमानान्
चक्राधीशो भिनन्दन् प्रदिशतु सदृशीमुत्तमश्लोकतां वः॥९७॥

रक्ताशोकस्य वेदस्य च विहितपदम्प्राप्तशाखस्य मूले
चक्रैरस्त्रैस्तदाद्यैरपि महितचतुर्द्विश्चतुर्बाहुदण्डम्।
प्रासीनम्भासमानं स्थितमपि भयतस्त्रायतान्तत्त्वमेकम्-
पश्चात्पूर्वत्र भागे स्फुटनरहरितामानुषञ्जानुषाद्वः॥९८॥

प्राणे दत्तप्रयाणे मुषितदृशि दृशि त्यक्तसारे शरीरे
मत्यां व्यामोहवत्यां सतमसि मनसि व्याहते व्याहृते च।
चक्रान्तवर्ति मृत्युप्रतिभयमुभयाकारचित्रम्पवित्र-
न्तेजस्तत्तिष्ठतां वस्त्रिदशकुलधनन्त्रीक्षणन्तीक्ष्णदंष्ट्रम्॥९९॥

यस्मिन् विन्यस्य भारं विजयिनि जगताञ्जङ्गमस्थावराणां
लक्ष्मीनारायणाख्यम्मिथुनमनुभवत्यत्युदारान् विहारान्।
आरोग्यम्भूतिमायुः कृतमिव बहुना यद्यदास्थापदं वः
तत्तत् सद्यः समस्तन्दिशतु स पुरुषो दिव्यहेत्यक्षवर्ती॥१००॥

पद्मानान्तत्त्वविद्याद्युमणिगिरिशविध्यङ्गसङ्ख्याधराणा-
मर्चिष्वङ्गेषु नेम्यादिषु च परमतः पुंसि षड्विंशतेश्च।
सङ्ख्यैस्सौदर्शनं यः पठति कृतमिदङ्कूरनारायणेन
स्तोत्रन्त्रिर्विष्टभोगो भजति स परमाञ्चक्रसायुज्यलक्ष्मीम्॥१०१॥

॥ इति श्रीकूरनारायणमुनिप्रणीतं सुदर्शनशतकं समाप्तम्।

सुदर्शनानुष्ठानसमापने होमः।

तत्रादौ कुशकण्डिका। तत्रापि पूर्वं पञ्चभूसंस्काराः। तत्रायं क्रमः।

यथापरिमिते तुषकेशादिरहिते सन्मृद्भिर्निर्मिते हस्तमात्रविस्तृत-चतुरङ्गुलोच्छ्रिते स्थण्डिले वेद्यां शास्त्रशुद्धकुण्डे वा चतुरस्रां भूमिं त्रिभिस्त्रिभिः कुशैः परिसमूहयेत्।१।।

तान् कुशान् ऐशान्यां परित्यज्य ''वं'' इत्यमृतबीजमुच्चारयन् गोमयोदकेनोपलिम्पेत्।।२।।

खदिरस्रुवमूलेन प्रागग्रं प्रादेशमात्रम् उत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिखेत्।।३।।

उल्लेखनक्रमेणैव ''ह्रीं'' इति मायाबीजमुच्चारयन् अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धरेत्।।४।।

उदकेन न्युब्जपाणिना अभ्युक्षणं कुर्यात्।।५।।

अग्निस्थापनम्

सदाचारवतां गृहात् कांस्यपात्रे मृण्मये पात्रे वा सम्पुटेनाग्निमानीय कुण्डस्य स्थण्डिलस्य वा आग्नेय्यां निधाय ''हुं फट्'' इति मन्त्रेण क्रव्यादंशं नैर्ऋत्यां परित्यज्य **ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२ आसादयादिह** इति उक्त्वा **आत्माभिमुखं वरदनामाग्निं कुण्डे संस्थापयामि** इति अग्निं संस्थापयेत्। अग्न्यानयनपात्रे साक्षतोदकं निषिच्य ततः प्रोक्षितानि इन्धनानि कुण्डे स्थापयेत्। ततोऽग्नौ प्रज्वलिते सति अग्निं ध्यायेत्-

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां२ऽआविवेश।।
ॐ भूर्भुवःस्वः अग्ने वैश्वानर मम सम्मुखो भव।
आवाहये त्वां पुरुषं महान्तं सुरासुरैर्वन्दितपादपद्मम्।
ब्रह्मादयो यस्य मुखे विशन्ति प्रविश्य कुण्डे सुरलोकनाथ।।

अग्नेः षोडश संस्काराः

ॐ हं नमः अग्नये शुचिषदे, अग्नेर्गर्भाधान-पुंसवन-सीमन्तोन्नयन-जातकर्म-नामकरण-निष्क्रमणान्नप्राशन-चूडाकरण-कर्णवेधोपनयन-सावित्रीश्रावण-वेदारम्भ-गोदान-समावर्तन-स्नातकव्रत-विवाहादि-षोडशसंस्कारान् सम्पादयामि"[१] इति वदन् षोडशवारं पीताक्षतान् विकिरेत्।

अग्निपूजनम्

ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये नमः इत्यग्निं कुण्डस्य नैर्ऋत्यकोणे षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

अग्निम्प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
हिरण्यवर्णममलं समृद्धं सर्वतोमुखम्।।

ब्राह्मणवरणं ब्रह्मपूजनं च

ततो गन्धपुष्पदक्षिणादिभिर्ब्राह्मणवरणं कृत्वा अग्नेर्दक्षिणभागे ब्रह्मोपवेसनार्थमासनं दत्त्वा ब्राह्मणम् अथवा पञ्चाशत्कुशनिर्मितं प्रदक्षिणग्रन्थियुतं ब्रह्माणमुदङ्मुखामुपवेश्य **अस्मिन् सुदर्शनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुं त्वं मे ब्रह्मा भव"** इत्युक्त्वा षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्।

अष्टवसुपूजनम्

अग्नेरष्टदिक्षु अष्टवसून् पीताक्षतैरावाह्य पूजयेत्-

पूर्वे- **ॐ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि।**
आग्नेये- **ॐ जातवेदसे नमः, जातवेदसमावाहयामि।**
दक्षिणे- **ॐ सहोजसे नमः, सहोजसमावाहयामि।**
नैर्ऋते- **ॐ अजिराप्रभवे नमः, अजिराप्रभुमावाहयामि।**
पश्चिमे- **ॐ वैश्वानराय नमः, वैश्वानरमावाहयामि।**
वायव्ये- **ॐ नर्यापसे नमः, नर्यापसमावाहयामि।**
उत्तरे- **ॐ पङ्क्तिराधसे नमः, पङ्क्तिराधसमावाहयामि।**
ऐशान्ये- **ॐ विसर्पिणे नमः, विसर्पिणमावाहयामि।**

अष्टवसुभ्यो नमः इति अष्टवसून् गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूजयेत्।

ततः प्रणीतापात्रं पुरतो वारिणा परिपूर्य कुशत्रयेणाच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य अग्नितो वितस्तिदूरे उत्तरतः कुशोपरि निदद्ध्यात्।

परिस्तरणम्

चतुर्भिश्चतुर्भिर्दर्भैः कुण्डस्य चतुर्दिक्षु परिस्तरेत्।

तत्र पूर्वे आग्नेयादीशानान्तमुत्तराग्रम्- **ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।**

दक्षिणे ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं प्रागग्रम्- **ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वा व्वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मणऽआप्यायध्वमग्घ्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मामावस्तेनऽईशतमाघशꣳसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।**

पश्चिमे नैर्ऋत्याद्वायव्यपर्यन्तमुत्तराग्रम्- **ॐ अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि।**

उत्तरे अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं पूर्वाग्रम्- **ॐ शन्नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।**

ततः पात्रासादनम्

अग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम्। पवित्रीकरणार्थं साग्रम् अनन्तर्गर्भं कुशपत्रद्वयम्। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनार्थं कुशत्रयम्। उपयमनार्थं वेणीरूपं कुशत्रयम्। तिस्रः(पञ्चदश वा) समिधः। पलाश्यः खादिरो हस्तमात्रः स्रुवः स्रुक् च। आज्यं गव्यम्। तण्डुलपूरितपूर्णपात्रम्। एतानि पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेण आसादनीयानि। एवमन्यान्यपि पूगीफलनारिकेलादीनि समस्तवस्तूनि स्थापनीयानि।

पवित्रीकरणम्

पवित्रच्छेदनकुशैरग्रतः प्रादेशमात्रं विहाय पवित्रे छित्त्वा दक्षिणावर्तग्रन्थिं दत्त्वा पवित्रच्छेदनकुशोन्मूलञ्च उत्तरतः क्षिपेत्। ततः सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निक्षिप्य व्यस्तानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां द्वे उत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम्। ततः प्रागग्रं प्रोक्षणीपात्रं वामहस्ते कृत्वा प्रणीतासन्निधौ दक्षिणे निधाय अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां गृहीतपवित्राभ्यां तज्जलं किञ्चित् त्रिरुत्क्षिप्य

प्रणीतोदकेन पवित्रानीतेन उत्तानहस्तेन प्रोक्षणीमभिषिच्य प्रोक्षणीजलेन "**वं**" इतिवारुणबीजमुच्चारयन् आज्यस्थाल्यादीनि आसादितवस्तूनि पूर्णपात्रपर्यन्तानि क्रमेण एकैकशः प्रोक्ष्य असञ्चरे प्रणीताग्न्योरन्तराले प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात्। आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। तदाज्यमग्नौ अधिश्रित्य "**वं**" इति बीजेन ज्वलत्तृणादिकमादाय आज्यस्योपरि प्रदक्षिणं समन्ताद् भ्रामयित्वा तत्तृणं वह्नौ क्षिपेत्। चरुस्थाल्यां चरु निक्षिप्य अधिश्रयेत्। ततः पूर्ववज्ज्वलत्तृणेन समन्ताद् भ्रामयित्वा वह्नौ क्षिपेत्। ततो दक्षिणपाणिना स्रुवमादाय अधोमुखमग्नौ त्रिस्तापयित्वा वामहस्ते कृत्वा सम्मार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलेन मूलं मध्येन मध्यम् अग्रेण अग्रम् सम्मृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः पूर्ववत् प्रताप्य दक्षिणतो निधाय सम्पूजयेत्।

आवाहयाम्यहं देवं स्रुवं शेवधिमुत्तमम्।
स्वाहाकारस्वधाकारवषट्कारसमन्वितम्।

इत्यनेन सम्पूज्य सकङ्कणं कुर्यात्।

ततः प्रदक्षिणक्रमेण आज्यमवतार्य अग्रतो निधाय चरु चानीय आज्यस्योत्तरतो निदध्यात्। आज्यं प्रोक्षणीवद् उत्पूय अवेक्ष्य अपद्रव्ये सति तन्निरस्य पुनः प्रोक्षणीमुत्पूय उत्थाय उपयमनकुशान् वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमेव अग्नौ घृताक्तास्तिस्रः पञ्चदश वा समिधः क्षिपेत्।

ततः परिषेचनम्

ॐ **अदितेऽनुमन्यस्व** (अग्नेर्दक्षिणतः प्रागग्रां जलधारां दद्यात्)
ॐ **अनुमतेऽनुमन्यस्व** (पश्चिमत उत्तराग्रां जलधारां दद्यात्)
ॐ **सरस्वतेऽनुमन्यस्व** (उत्तरतः प्रागग्रां जलधारां दद्यात्)
ॐ **देवसवितः प्रसुवः** (अग्नेः समन्ततो जलधारां दद्यात्)

उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन अग्निम् ईशानादिप्रदक्षिणमुदक्पर्यन्तं पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय पातितदक्षिणजानुः कुशेन ब्रह्मणान्वारब्धः कुशसहितं प्रसारिताङ्गुलिहस्तं हृदि निधाय दक्षिणहस्तेन मूले चतुरङ्गुलं त्यक्त्वा शङ्खसन्निभमुद्रया स्रुवं गृहीत्वा समिद्धतमेऽग्नौ सन्ततघृतधारया मनसा प्रजापतिं ध्यायेन् स्रुवेण तूष्णीं प्रक्षेपः।

ततो यजमानः, देशकालादिकं सङ्कीर्त्य **अस्मिन् सुदर्शनशतक-सुदर्शनकवच-षडक्षरादिमन्त्रजप-पारायणादिकृते तद्दशांशहवनाख्ये कर्मणि इदं सम्पादितं समिच्चरुतिल-तण्डुल-यवाज्यादि-हवनीयद्रव्यं विहितसंख्याहुतिपर्याप्तं या या यक्ष्यमाणदेवतास्तस्यै तस्यै देवतायै न मम। यथासंख्यं यथादैवतमस्तु** इति वदन् साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत्।

होमः

अग्नेरुत्तरभागे- **ॐ प्रजापतये स्वाहा,** इति मनसा

इदं प्रजापतये न मम इत्युच्चैः प्रोक्षण्यां त्यागः।

अग्नेर्दक्षिणभागे- **ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।**

ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम।

ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम।।

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

यजमानमूर्धाभिषेकः

यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।
तद्वद्दैवोपघातानां शान्तिर्भवतु वारिका।।

ॐ शान्तिरस्तु, पुष्टिरस्तु, तुष्टिरस्तु, यत्पापरोगाद्यकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु, द्विपदे चतुष्पदे सुशान्तिर्भवतु।।

सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाहुतयः

ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

ॐ सत्वन्नोऽअग्ने व्वमो भवोती नेदिष्टोऽअस्याऽउषसो व्युष्टौ।
अवयक्ष्व नो व्वरुणꣳरराणो वीहि मृडीकꣳसुहवो नऽएधि स्वाहा।
इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि।
अयानो यज्ञं वहास्यमानो धेहि भेषजꣳस्वाहा।
इदमग्नये न मम।

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः।
तेभिर्नोऽद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्व न मम।

ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳश्रथाय।
अथा व्वयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा।
इदं वरुणाय न मम।

ॐ व्विश्वकर्म्मन् हविषा व्वावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुतद्याम्।
मुह्यन्त्वन्येऽअभितः सपत्नाऽइहास्माकं मघवा सूरिरस्तु॥
विष्वक्सेनाय स्वाहा।

अग्नेर्जिह्वानामभिर्होमः,

ईशानादिक्रमेण

ईशाने- ॐ प्रभायै नमः स्वाहा।
पूर्वे- ॐ दीप्त्यै नमः स्वाहा।
आग्नेये- ॐ प्रकाशायै नमः स्वाहा।
दक्षिणे- ॐ मरीच्यै नमः स्वाहा।
नैर्ऋत्ये- ॐ तापिन्यै नमः स्वाहा।
पश्चिमे- ॐ करालायै नमः स्वाहा।
वायव्ये- ॐ लेलिहायै नमः स्वाहा।

पुरुषसूक्तश्रीसूक्तभूसूक्तनीलासूक्तैस्तिलतण्डुलयवाज्यद्रव्यैर्होमः

अथ पुरुषसूक्तहोमः

ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिꣳसर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥१॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।

ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥२॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥३॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि॥४॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।

ॐ ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥५॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥६॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥७॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।

ॐ तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः॥८॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषञ्जातमग्रतः।
तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये॥९॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।
ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किम्बाहू किमूरू पादाऽउच्येते॥१०॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।
ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬं शूद्रोऽअजायत॥११॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥१२॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।
ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षᳬं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥१३॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमन्वत।
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥१४॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।
ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन् पुरुषम्पशुम्॥१५॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।
ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥१६॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च व्विश्वकर्म्मणः समवर्त्तताग्रे।
तस्य त्वष्टा व्विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे॥१७॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।

ॐ व्वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात्।
तमेव व्विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥१८॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।

ॐ प्रजापतिश्चरति गर्ब्भेऽअन्तरजायमानो बहुधा व्विजायते।
तस्य योनिम्परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्ब्भुवनानि व्विश्वा॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।

ॐ यो देवेभ्यऽआतपति यो देवानाम्पुरोहितः।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये॥२०॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।

ॐ रुचं ब्राह्मञ्जनयन्तो देवाऽअग्रे तदब्रुवन्।
यस्त्वैवम्ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा ऽअसन्वशे॥२१॥
ॐ पुरुषाय नारायणाय स्वाहा।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण॥२२॥

अथ श्रीसूक्तहोमः

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआ वह॥१॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ ताम्मऽआ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वम्पुरुषानहम्॥२॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियन्देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥३॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्राञ्ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णान्तामिहोपह्वये श्रियम्॥४॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ चन्द्राम्प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
ताम्पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतान्त्वां वृणे॥५॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिञ्च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥८॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ गन्धद्वारान्दुराधर्षान्नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानान्तामिहोपह्वये श्रियम्॥९॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥१०॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥११॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीम्मातरं श्रियं वासय मे कुले॥१२॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ आर्द्राम्पुष्करिंणीम्पुष्टिम्पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीञ्जातवेदो मऽआ वह॥१३॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीञ्जातवेदो मऽआ वह॥१४॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ ताम्मऽआ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतङ्गावो दास्योऽश्वान् विन्देयम्पुरुषानहम्॥१५॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ य· शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहूयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तम्पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततञ्जपेत्॥१६॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ पद्मानने पद्मिविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मम्मयि सन्निधत्स्व॥१७॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥१८॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने।
धनम्मे जुषतान्देवि सर्वकामाँश्च देहि मे ॥१९॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ पुत्रपौत्रधनन्धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरीरथम्।
प्रजानाम्भवसि माता आयुष्मन्तङ्करोतु मे॥२०॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना॥२१।
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ वैनतेय सोमम्पिब सोमम्पिबतु वृत्रहा।
सोमन्धनस्य सोमिनो मह्यन्ददातु सोमिनः॥२२॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ न क्रोधो न च मात्सर्यन्न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानाम्भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम्॥२३॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥२४॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहां।

ॐ विष्णुपत्नीं क्षमान्देवीम्माधवीम्माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीम्प्रियसखीम्भूमिन्नमाम्यच्युतवल्लभाम्॥२५॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे, विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ आनन्दः कर्दमः श्रीदः चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥२६॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

अथ भूसूक्तहोमः

ॐ भूमिर्भूम्ना द्यौर्वरिणान्तरिक्षं महित्त्वा।
उपस्थेते देव्यदितेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥१॥
ॐ भूं भूदेव्यै नमः स्वाहा।

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥२॥
ॐ भूं भूदेव्यै नमः स्वाहा।

ॐ ॐ अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती।
व्यख्यन्महिषो दिवम्॥३॥
ॐ भूं भूदेव्यै नमः स्वाहा।

ॐ त्रिꣳशद्धाम व्विराजति व्वाक्पतङ्गायधीयते।
प्रतिवस्तोरहद्युभिः॥४॥
ॐ भूं भूदेव्यै नमः स्वाहा।

ॐ यत्त्वा क्रुद्धः परो वपमन्युना यदवर्त्या।
सुकल्पमग्ने तत्तव पुनस्त्वोद्दीपयामसि॥५॥
ॐ भूं भूदेव्यै नमः स्वाहा।

ॐ यत्ते मन्युपरोप्तस्य पृथिवी मनुदध्वसे।
आदित्या विश्वे तद्देवा वसवश्च समाभरन्॥६॥
ॐ भूं भूदेव्यै नमः स्वाहा।

ॐ मेदिनी देवी वसुन्धरा स्याद्वसुधा देवी वासवी।
ब्रह्मवर्चसः पितृणां श्रोत्रं चक्षुर्मनः॥७॥
ॐ भूं भूदेव्यै नमः स्वाहा।

ॐ देवी हिरण्यगर्भिणी देवी प्रसूवरी सदने सत्यायने सीद॥८॥
ॐ भूं भूदेव्यै नमः स्वाहा।

ॐ समुद्रवती सावित्री हनो देवी मह्यवी मही।
धरणी महोव्यधिष्ठा श्रृङ्गे श्रृङ्गे यज्ञे यज्ञे विभीषणी॥९॥
ॐ भूं भूदेव्यै नमः स्वाहा।

ॐ इन्द्रपत्नी व्याजिनी सुरसित इह वायुमती जलशयनी।

श्रियन्धाराजा सत्यन्तोपरि मेदिनी श्वोपरिधत्तङ्गाय॥१०॥
ॐ भूं भूदेव्यै नमः स्वाहा।

ॐ विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्॥११॥
ॐ भूं भूदेव्यै नमः स्वाहा।

ॐ धनुर्धरायै विद्महे सर्वसिद्ध्यै च धीमहि।
तन्नो धरा प्रचोदयात्॥१२॥ ॐ भूं भूदेव्यै नमः स्वाहा॥

नीलासूक्तहोमः

ॐ नीला देवीꣳ शरणमहं प्रपद्ये, सुतरासि तरसे नमः॥१॥
ॐ नीं नीलादेव्यै नमः स्वाहा॥

ॐ गृणाहि घृतवतो सवितराधिपत्यै पयस्वतीरन्तिराशानो अस्तु ध्रुवा दिशां विष्णुपत्न्यघोराऽस्येशाना सहसो या मनोतौ। बृहस्पतिर्मातरिश्वोत वायुस्सन्धुवांना वाता अभिनो गृणन्तु। विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्या अस्येशाना जगतो विष्णुपत्नी॥२॥
ॐ नीं नीलादेव्यै नमः स्वाहा॥

ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो नीला प्रचोदयात्॥ ॐ नीं नीलादेव्यै नमः स्वाहा॥३॥

ततः **ॐ नमो नारायणाय स्वाहा** इति मूलमन्त्रेणाष्टाक्षरेण १०८ वारं साकल्यद्रव्येण होमः कर्तव्यः।
(**द्रष्टव्यम्-** सुदर्शनाष्टोत्तरनामानि पूर्वमपि दत्तानि, तथापि आचार्यादीनां सौकर्याय स्वाहान्तनामानि पुनरत्रापि दत्तानि। यद्यपि केषाञ्चन मतं यत् स्वाहान्तशब्दप्रयोगे नमःशब्दयोगस्य आवश्यकता नास्तीति तथापि केचन मन्यन्ते यत् **ॐ सुदर्शनाय नमः** इत्यादयो मन्त्राः, तस्माद् नमः, स्वाहा उभयमपि ग्राह्यमिति।)

श्रीसुदशनाष्टोत्तरशतनामभिर्होमः

(साकल्यद्रव्येण)

१ ॐ सुदर्शनाय नमः स्वाहा।
२ ॐ चक्रराजाय नमः स्वाहा।
३ ॐ तेजाव्यूहाय नमः स्वाहा।
४ ॐ महाद्युतये नमः स्वाहा।
५ ॐ सहस्रबाहवे नमः स्वाहा।
६ ॐ दीप्ताङ्गाय नमः स्वाहा।
७ ॐ अरुणाक्षाय नमः स्वाहा।
८ ॐ प्रतापवते नमः स्वाहा।
९ ॐ अनेकादित्यसङ्काशाय नमः स्वाहा।
१० ॐ प्रोर्ध्वज्लालाभिरञ्जिताय नमः स्वाहा।
११ ॐ सौदामिनीसहस्राभाय नमः स्वाहा।
१२ ॐ मणिकुण्डलशोभिताय नमः स्वाहा।
१३ ॐ पञ्चभूतमनोरूपाय नमः स्वाहा।
१४ ॐ षट्कोणान्तरसंस्थिताय नमः स्वाहा।
१५ ॐ हरान्तःकरणोद्भूतरोषभीषणविग्रहाय नमः स्वाहा।
१६ ॐ हरिपाणिलसत्पद्मविहारारमनोहराय नमः स्वाहा।
१७ ॐ श्रीकाररूपाय नमः स्वाहा।
१८ ॐ सर्वज्ञाय नमः स्वाहा।
१९ ॐ सर्वलोकार्चितप्रभवे नमः स्वाहा।
२० ॐ चतुर्दशसहस्राराय नमः स्वाहा।
२१ ॐ चतुर्वेदमयाय नमः स्वाहा।
२२ ॐ अनलाय नमः स्वाहा।
२३ ॐ भक्तचान्द्रमसज्योतिषे नमः स्वाहा।
२४ ॐ भवरोगविनाशकाय स्वाहा।
२५ ॐ रेफात्मकाय नमः स्वाहा।

२६ ॐ मकारात्मने नमः स्वाहा।
२७ ॐ रक्षोऽसृग्रुषिताङ्गकाय स्वाहा।
२८ ॐ सर्वदैत्यग्रीवनालविभेदनमहागजाय नमः स्वाहा।
२९ ॐ भीमदंष्ट्राय नमः स्वाहा।
३० ॐ ज्वालाकाराय नमः स्वाहा।
३१ ॐ भीमकर्मणे नमः स्वाहा।
३२ ॐ त्रिलोचनाय नमः स्वाहा।
३३ ॐ नीलवत्मने नमः स्वाहा।
३४ ॐ नित्यसुखाय नमः स्वाहा।
३५ ॐ निर्मलश्रियै नमः स्वाहा।
३६ ॐ निरञ्जनाय नमः स्वाहा।
३७ ॐ रक्तमाल्याम्बरधराय नमः स्वाहा।
३८ ॐ रक्तचन्दनरुषिताय नमः स्वाहा।
३९ ॐ रजोगुणाकृतये नमः स्वाहा।
४० ॐ शूराय नमः स्वाहा।
४१ ॐ रक्षःकुलयमोपमाय नमः स्वाहा।
४२ ॐ नित्यक्षेमङ्कराय नमः स्वाहा।
४३ ॐ प्राज्ञाय नमः स्वाहा।
४४ ॐ पाषण्डजनखण्डनाय नमः स्वाहा।
४५ ॐ नारायणाज्ञानुवर्तिने नमः स्वाहा।
४६ ॐ नैगमान्तप्रकाशकाय नमः स्वाहा।
४७ ॐ बलिनन्दनदोर्दण्डखण्डनाय नमः स्वाहा।
४८ ॐ विजयाकृतये नमः स्वाहा।
४९ ॐ मित्रभाविने नमः स्वाहा।
५० ॐ सर्वमयाय नमः स्वाहा।
५१ ॐ तमोविध्वंसनाय नमः स्वाहा।
५२ ॐ रजःसत्त्वतमोद्वर्तिने नमः स्वाहा।
५३ ॐ त्रिगुणात्मने नमः स्वाहा।

५४ ॐ त्रिलोकधृते नमः स्वाहा।
५५ ॐ हरिमायागुणोपेताय नमः स्वाहा।
५६ ॐ अव्ययाय नमः स्वाहा।
५७ ॐ अक्षस्वरूपभाजे नमः स्वाहा।
५८ ॐ परमात्मने नमः स्वाहा।
५९ ॐ परञ्ज्योतिषे नमः स्वाहा।
६० ॐ पञ्चकृत्यपरायणाय नमः स्वाहा।
६१ ॐ ज्ञानशक्तिबलैश्वर्यवीर्यतेजःप्रभामयाय नमः स्वाहा।
६२ ॐ सदसत्परमाय नमः स्वाहा।
६३ ॐ पूर्णाय नमः स्वाहा।
६४ ॐ वाङ्मयाय नमः स्वाहा।
६५ ॐ वरदाय नमः स्वाहा।
६६ ॐ अच्युताय नमः स्वाहा।
६७ ॐ जीवाय नमः स्वाहा।
६८ ॐ हरये नमः स्वाहा।
६९ ॐ हंसरूपाय नमः स्वाहा।
७० ॐ पञ्चाशत्पीठरूपकाय नमः स्वाहा।
७१ ॐ मातृकामण्डलाध्यक्षाय नमः स्वाहा।
७२ ॐ मधुध्वंसिने नमः स्वाहा।
७३ ॐ मनोमयाय नमः स्वाहा।
७४ ॐ बुद्धिरूपाय नमः स्वाहा।
७५ ॐ चित्तसाक्षिणे नमः स्वाहा।
७६ ॐ साराय नमः स्वाहा।
७७ ॐ हंसाक्षरद्वयाय नमः स्वाहा।
७८ ॐ मन्त्रयन्त्रप्रभावज्ञाय नमः स्वाहा।
७९ ॐ मन्त्रयन्त्रमयाय नमः स्वाहा।
८० ॐ विभवे नमः स्वाहा।
८१ ॐ स्रस्ट्रे नमः स्वाहा।

८२ ॐ क्रियास्पदाय नमः स्वाहा।
८३ ॐ शुद्धाय नमः स्वाहा।
८४ ॐ मन्त्रबोद्धे नमः स्वाहा।
८५ ॐ त्रिविक्रमाय नमः स्वाहा।
८६ ॐ निरायुधाय नमः स्वाहा।
८७ ॐ असंरम्भाय नमः स्वाहा।
८८ ॐ सर्वायुधसमन्विताय नमः स्वाहा।
८९ ॐ ओङ्काररूपाय नमः स्वाहा।
९० ॐ पूर्णात्मने नमः स्वाहा।
९१ ॐ आङ्कारात्साध्यबन्धनाय नमः स्वाहा।
९२ ॐ ऐङ्काराय नमः स्वाहा।
९३ ॐ वाक्प्रदाय नमः स्वाहा।
९४ ॐ वाग्मिने नमः स्वाहा।
९५ ॐ श्रीङ्कारैश्वर्यवर्द्धनाय नमः स्वाहा।
९६ ॐ क्लीङ्कारमोहनाकाराय नमः स्वाहा।
९७ ॐ हुंफट्क्षोभणाकृतये नमः स्वाहा।
९८ ॐ इन्द्रार्चितमनोवेगाय नमः स्वाहा।
९९ ॐ धरणीभारनाशकाय नमः स्वाहा।
१०० ॐ वीराराध्याय नमः स्वाहा।
१०१ ॐ विश्वरूपाय नमः स्वाहा।
१०२ ॐ वैष्णवाय नमः स्वाहा।
१०३ ॐ विष्णुरूपकाय नमः स्वाहा।
१०४ ॐ सत्यव्रताय नमः स्वाहा।
१०५ ॐ सत्पराय नमः स्वाहा।
१०६ ॐ सत्यधर्मानुषङ्गकाय नमः
१०७ ॐ नारायणकृपाव्यूहतेजश्चक्राय नमः स्वाहा।
१०८ ॐ सुदर्शनाय नमः स्वाहा।
ॐ श्रीविजयवल्लीसमेतसुदर्शनचक्रराजपरब्रह्मणे नमः स्वाहा।

मध्यमहोमः

सुदर्शनशतकस्य दशावृत्तिपारायणस्य एकावृत्तिहवनम्, एवं क्रमेण कर्तव्यम्। सुदर्शनशतकमन्त्रैरथवा तत्स्थाने सुदर्शनगायत्र्या षडक्षरसुदर्शनमन्त्रेण वा होमः।

ॐ सौदर्शन्युज्जिहाना दिशि विदिशि तिरस्कृत्य सावित्रमर्चि-
र्बाह्याबाह्यान्धकार-क्षतजगदगदङ्कारभूम्ना स्वधाम्ना।
दोःखर्जू-दूरगर्जद्विबुधरिपु-वधूकण्ठवैकल्यकल्या
ज्वालो जाज्वल्यमाना वितरतु भवतां वीप्सयाभीप्सितानि॥१॥

ॐ सुदर्शनाय हेतिराजाय स्वाहा।

एवं प्रकारेण प्रतिमन्त्रं जुहूयात्।

अथवा-

ॐ सुदर्शनाय विद्महे हेतिराजाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्।

ॐ सुदर्शनाय हेतिराजाय स्वाहा।

अथवा-

ॐ सहस्रार हुं फट् स्वाहा।

इति मध्यमहोमः।

उत्तरहोमः

ॐ व्वाचस्पतिं व्विश्वकर्म्माणमूतये मनोजुवं व्वाजेऽअद्या हुवेम।
स नो व्विश्वानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्म्मा।
ॐ सशक्तिकाय सपरिवाराय विष्वक्सेनाय स्वाहा।

ॐ देवासो येन विधृतेन बाहुना सुदर्शनेन प्रयतास्तमायन्।
येनाङ्किता मनवो लोकसृष्टिं वितन्वन्ति ब्राह्मणास्तद्वहन्ति।।
ॐ सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय सुदर्शनाय नमः स्वाहा।

ॐ शेषन्नुतऽइन्द्र सस्मिन्यौनौ प्रशस्तये पवीरवस्यमह्ना सुजदर्णां
स्यवयधुधागास्तिष्ठद्धरी धृषता मृष्टवाजान्।।
ॐ सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय शेषाय नमः स्वाहा।।

ॐ किꣳस्विद्वनङ्कऽउस वृक्षऽआसयतो द्यावा पृथिवी निष्टतक्षुः।
मनीषिणो मनसा पृच्छते दुतद्यदद्ध्य तिष्ठद्भुवनानि धारयन्।
ॐ सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय अनन्ताय नमः स्वाहा।।

ॐ सुपर्णं विप्रा कवयोवचोभिरेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति।
छन्दाꣳसि च दधतो अध्वरेषु ग्रहान् सोमस्य मिमते द्वादश।
ॐ सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय गरुडाय नमः स्वाहा।।

ॐ यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्म्माणिप्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।
ॐ सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय साध्येभ्यो नमः स्वाहा।।

ॐ स्वादुषꣳसदः पितरोवयोधाः कृच्छ्रेश्रितः शक्तीवन्तो गभीराः।
चित्रसेनाऽइषुवलाऽअमृध्राः सतो वीराऽउरवोव्व्रात स्वाहा।
ॐ सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय हेतये नमः स्वाहा।।

ततः स्वाहान्तैश्चतुर्विंशतिनामभिर्जुहुयात्

१ ॐ केशवाय नमः स्वाहा	२ ॐ नारायणाय नमः स्वाहा
३ ॐ माधवाय नमः स्वाहा	४ ॐ गोविन्दाय नमः स्वाहा
५ ॐ विष्णवे नमः स्वाहा	६ ॐ मधुसूदनाय नमः स्वाहा
७ ॐ त्रिविक्रमाय नमःस्वाहा	८ ॐ वामनाय नमः स्वाहा
९ ॐ श्रीधराय नमः स्वाहा	१० ॐ हृषीकेशाय नमः स्वाहा
११ ॐ पद्मनाभाय नमःस्वाहा	१२ ॐ दामोदराय नमः स्वाहा
१३ ॐ वासुदेवाय नमः स्वाहा	१४ ॐ संकर्षणाय नमः स्वाहा
१५ ॐ प्रद्युम्नाय नमः स्वाहा	१६ ॐ अनिरुद्धाय नमः स्वाहा
१७ ॐ पुरुषोत्तमाय नमः स्वाहा	१८ ॐ अधोक्षजाय नमः स्वाहा
१९ ॐ नारसिंहाय नमःस्वाहा	२० ॐ अच्युताय नमः स्वाहा
२१ ॐ जनार्दनाय नमः स्वाहा	२२ ॐ उपेन्द्राय नमः स्वाहा
२३ ॐ हरये नमः स्वाहा	२४ ॐ श्रीकृष्णाय नमःस्वाहा

श्रीमहालक्ष्म्या नामभिर्होमः

१ ॐ श्रियै नमःस्वाहा	२ ॐ अमृतोद्भवायै नमःस्वाहा
३ ॐ कमलायै नमः स्वाहा	४ ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः स्वाहा
५ ॐ विष्णुपत्न्यै नमः स्वाहा	६ ॐ वैष्णव्यै नमः स्वाहा
७ ॐ वरारोहायै नमः स्वाहा	८ ॐ हरिवल्लभायै नमः स्वाहा
९ ॐ शार्ङ्गिण्यै नमः स्वाहा	१० ॐ देवदेविकायै नमः स्वाहा
११ ॐ लोकसुन्दर्यै नमः स्वाहा	१२ ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा।

ॐ श्रीदेव्यै नमः स्वाहा। ॐ भूदेव्यै नमः स्वाहा।

ॐ नीलादेव्यै नमः स्वाहा। ॐ गोदादेव्यै नमः स्वाहा।

ॐ श्री रङ्गनायक्यै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा॥

अथ वैकुण्ठपार्षदहोमः स्वाहान्तनामभिः

१ ॐ आधारशक्त्यै नमः स्वाहा।
२ ॐ प्रकृत्यै नमः स्वाहा।
३ ॐ अखिलजगदाधारकूर्मरूपिणे नारायणाय नमः स्वाहा।
३ ॐ अनन्ताय नागराजाय नमः स्वाहा।
४ ॐ भूम्यै नमः स्वाहा।
५ ॐ वैकुण्ठाय दिव्यलोकाय नमः स्वाहा।
६ ॐ वैकुण्ठाय दिव्यजपनदाय नमः स्वाहा।
७ ॐ वैकुण्ठाय दिव्यनगराय नमः स्वाहा।
८ ॐ वैकुण्ठाय दिव्यविमानाय नमः स्वाहा।
१० ॐ आनन्दमयाय दिव्यमण्डपरत्नाय नमः स्वाहा।
११ ॐ आस्तरणरूपिणे अनन्ताय नागराजाय नमः स्वाहा।
१२ ॐ धर्माय पीठपादाय नमः स्वाहा।
१३ ॐ ज्ञानाय पीठपादाय नमः स्वाहा।
१४ ॐ वैराग्याय पीठपादाय नमः स्वाहा।
१५ ॐ ऐश्वर्याय पीठपादाय नमः स्वाहा।
१६ ॐ ऋग्वेदाय पीठवाहकाय नमः स्वाहा।
१७ ॐ यजुर्वेदाय पीठवाहकाय नमः स्वाहा।
१८ ॐ सामवेदाय पीठवाहकाय नमः स्वाहा।
१९ ॐ अथर्ववेदाय पीठवाहकाय नमः स्वाहा।
२० ॐ अधर्माय पीठगात्राय नमः स्वाहा।
२१ ॐ अज्ञानाय पीठगात्राय नमः स्वाहा।
२२ ॐ अवैराग्याय पीठगात्राय नमः स्वाहा।
२३ ॐ अनैश्वर्याय पीठगात्राय नमः स्वाहा।
२४ ॐ एभिः परिच्छिन्नतनवे सदसदात्मकाय पीठभूताय नागराजाय नमः स्वाहा।
२५ ॐ पीठस्योपरि अष्टदलपद्माय नमः स्वाहा।

२६ ॐ सोममण्डलाय नमः स्वाहा।
२७ ॐ वह्निमण्डलाय नमः स्वाहा।
२८ ॐ सूर्यमण्डलाय नमः स्वाहा।
२९ ॐ विमलायै चामरकरायै नमः स्वाहा।
३० ॐ क्रियायै चामरकरायै नमः स्वाहा।
३१ ॐ उत्कर्षिण्यै चामरकरायै नमः स्वाहा।
३२ ॐ ज्ञानायै चामरकरायै नमः स्वाहा।
३३ ॐ प्रह्वयै चामरकरायै नमः स्वाहा।
३४ ॐ सत्यायै चामरकरायै नमः स्वाहा।
३५ ॐ ईशानायै चामरकरायै नमः स्वाहा।
३६ ॐ योगायै चामरकरायै नमः स्वाहा।
३७ ॐ अनुग्रहायै चामरकरायै नमः स्वाहा।
३८ ॐ जगत्प्रकृतये चामरकराय नमः स्वाहा।
३९ ॐ सहस्रशीर्ष्णे अनन्ताय नमः स्वाहा।
४० ॐ पुरतः पादपीठाय नमः स्वाहा।
४१ ॐ भगवत्पादुकाभ्यां नमः स्वाहा।
४२ ॐ अस्मद्गुरुभ्यो नमः स्वाहा।
४३ ॐ अस्मत्परमगुरुभ्यो नमः स्वाहा।
४४ ॐ अस्मत्सर्वगुरुभ्यो नमः स्वाहा।
४५ ॐ श्रीमते रामानुजाय नमः स्वाहा।
४६ ॐ श्रीपराङ्कुशदासाय नमः स्वाहा।
४७ ॐ श्रीमद्यामुनमुनये नमः स्वाहा।
४८ ॐ श्रीराममिश्राय नमः स्वाहा।
४९ ॐ श्री पुण्डरीकाक्षाय नमः स्वाहा।
५० ॐ श्रीमन्नाथमुनये नमः स्वाहा।
५१ ॐ श्रीमते शठकोपाय नमः स्वाहा।
५२ ॐ श्रीमते विष्वक्सेनाय नमः स्वाहा।
५३ ॐ श्रियै नमः स्वाहा।

५४ ॐ श्रीधराय नमः स्वाहा।
५५ ॐ सुदर्शनाय हेतिराजाय नमः स्वाहा।
५६ ॐ पाञ्चजन्याय शङ्खाधिपतये नमः स्वाहा।
५७ ॐ कौमोदक्यै गदाधिपतये नमः स्वाहा।
५८ ॐ नन्दकाय खड्गाधिपतये नमः स्वाहा।
५९ ॐ शार्ङ्गाय चापाधिपतये नमः स्वाहा।
६० ॐ श्रीवत्साय श्रीनिवासाय नमः स्वाहा।
६१ ॐ कौस्तुभाय सर्वरत्नाधिपतये नमः स्वाहा।
६२ ॐ वैजयन्त्यै वनमालायै नमः स्वाहा।
६३ ॐ ह्रीं पुष्ट्यै नमः स्वाहा।
६४ ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः स्वाहा।
६५ ॐ द्रां निद्रायै नमः स्वाहा।
६६ ॐ क्लीं कान्त्यै नमः स्वाहा।
६७ ॐ कं पृथिव्यै नमः स्वाहा।
६८ ॐ गं गरुडाय नमः स्वाहा।
६९ ॐ किरीटाय मुकुटाधिपतये नमः स्वाहा।
७० ॐ किरीटमालायै आपीडात्मिकायै नमः स्वाहा।
७१ ॐ मकराकृतकुण्डलाभ्यां नमः स्वाहा।
७२ ॐ कण्ठिकाभरणाय नमः स्वाहा।
७३ ॐ श्रीमत्तुलस्यै नमः स्वाहा।
७४ ॐ हाराय सर्वाभरणाधिपतये नमः स्वाहा।
७५ ॐ काञ्चीगुणोज्ज्वलाय पीताम्बराय नमः स्वाहा।
७६ ॐ सर्वेभ्यो भगवद्भूषणेभ्यो नमः स्वाहा।
७७ ॐ सर्वेभ्यो भगवद्दिव्यायुधेभ्यो नमः स्वाहा।
७८ ॐ सर्वाभ्यो भगवत्पादसंवाहिनीभ्यो नमः स्वाहा।
७९ ॐ सर्वेभ्यो भगवत्परिकरेभ्यो नमः स्वाहा।
८० ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा।
८१ ॐ विष्वक्सेनाय नमः स्वाहा।

८२ ॐ सूत्रवत्यै नमः स्वाहा।
८३ ॐ जं जयत्सेनाय नमः स्वाहा।
८४ ॐ गं गजाननाय नमः स्वाहा।
८५ ॐ हं हयाननाय नमः स्वाहा।
८६ ॐ कं कालप्रकृतिसंज्ञाय नमः स्वाहा।
८७ ॐ सर्वेभ्यो विष्वक्सेनपरिजनेभ्यो नमः स्वाहा।
८८ ॐ चण्डाय नमः स्वाहा।
८९ ॐ प्रचण्डाय नमः स्वाहा।
९० ॐ भद्राय नमः स्वाहा।
९१ ॐ सुभद्राय नमः स्वाहा।
९२ ॐ जयाय नमः स्वाहा।
९३ ॐ विजयाय नमः स्वाहा।
९४ ॐ धात्रे नमः स्वाहा।
९५ ॐ विधात्रे नमः स्वाहा।
९६ ॐ कुमुदाय सायुधाय सपरिवाराय सशक्तिकाय नमः स्वाहा।
९७ ॐ कुमुदाक्षाय सायुधाय सपरिवाराय सशक्तिकाय नमः स्वाहा।
९८ ॐ पुण्डरीकाय सायुधाय सपरिवाराय सशक्तिकाय नमः स्वाहा।
९९ ॐ वामनाय सायुधाय सपरिवाराय सशक्तिकाय नमः स्वाहा।
१०० ॐ शङ्कुकर्णाय सायुधाय सपरिवाराय सशक्तिकाय नमः स्वाहा।
१०१ ॐ सर्पनेत्राय सायुधाय सपरिवाराय सशक्तिकाय नमः स्वाहा।
१०२ ॐ सुमुखाय सायुधाय सपरिवाराय सशक्तिकाय नमः स्वाहा।
१०३ ॐ सुप्रतिष्ठिताय सायुधाय सपरिवाराय सशक्तिकाय नमः स्वाहा।
१०४ ॐ सर्वेभ्यो भगवद्गणाधिपतिभ्यो नमः स्वाहा।
१०५ ॐ नित्येभ्यो नमः स्वाहा।
१०६ ॐ मुक्तेभ्यो नमः स्वाहा।
१०७ ॐ दिव्येभ्यो नमः स्वाहा।
१०८ ॐ समस्तपरिवाराय श्रीमते नारायणाय नमः स्वाहा।

अष्टवसुहोमः

ॐ सुगावो देवा सदनाऽअकर्म्मयऽआजग्मे दꣳसवनञ्जुषाणाः।
भरमाणाव्वहमानाहवीꣳष्यस्मे धत्त व्वसवोव्वसूनि स्वाहा।
ॐ अष्टवसुभ्यो नमः स्वाहा।

दिग्पालहोमः

१. ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा।
२. ॐ अग्नये नमः स्वाहा।
३. ॐ यमाय नमः स्वाहा।
४. ॐ निर्ऋतये नमः स्वाहा।
५. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा।
६. ॐ वायवे नमः स्वाहा।
७. ॐ कुबेराय नमः स्वाहा।
८. ॐ ईशानाय नमः स्वाहा।
९. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा।
१०. ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा।

प्रायश्चित्तहोमः

हस्ते जलाक्षतादिकमादाय नामगोत्रादिकमुच्चार्य मम सुदर्शनानुष्ठानकर्माङ्ग-होमकर्मणो मध्ये सम्भवन्मन्त्रतन्त्र-विधिविपर्यास-न्यूनातिरिक्त-स्वराक्षरव्यत्यासप्रायश्चित्तार्थमाहुतीर्होष्यामि।
ततः स्रुवेणाज्यमादाय-

ॐ अनाज्ञातं यदज्ञातं यज्ञस्य क्रियते मिथुः।
अग्ने तदस्य कल्पय त्वꣳहि वेत्थ यथातथम्॥
ॐ अग्नये स्वाहा, अग्नय इदं न मम॥१॥

ॐ पुरुषसम्मितो यज्ञो यज्ञः पुरुषसम्मितः।
अग्ने तदस्य कल्पय त्वꣳहि वेत्थ यथातथम्॥
ॐ अग्नये स्वाहा, अग्नय इदं न मम॥२॥

ॐ यदविद्वांसो यद्विद्वांसो मुग्धाः कुर्वन्ति ऋत्विजः।
अग्नेर्मा तस्मादेनसः श्रद्धा देवी च मुञ्चताम्।
ॐ अग्नये श्रद्धादेव्यै च स्वाहा, अग्नये श्रद्धादेव्या इदं न मम।

ततः सितत‍िलाज्याभ्यामष्टोत्तरशताहुतीर्जुहूयात्

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
ॐ त्र्यम्बकाय नमः स्वाहा, त्र्यम्बकायेदं न मम।।

ततो घृतेन १०८ वारं जुहूयात्

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाᳪसुरे।
ॐ विष्णवे नमः स्वाहा, विष्णव इदं न मम।

ततो घृतेनैव जुहूयात्

ॐ इन्द्राय अभयङ्कराय स्वाहा, इन्द्रायाभयङ्करायेदं न मम।
ॐ अग्नये वसुनीताय स्वाहा, अग्नये वसुनीतायेदं न मम।

स्विष्टकृद्धोमः

ॐ यदस्य कर्मणोऽअत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्।
अग्निष्टुत् स्विष्टकृद्विद्वान् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु।।
ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, अग्नये स्विष्टकृत इदं न मम।
ॐ भूः स्वाहा, अग्नय इदं न मम।
ॐ भुवः स्वाहा, वायव इदं न मम।
ॐ स्वः स्वाहा, सूर्यायेदं न मम।
ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहा, प्रजापतय इदं न मम।

अथ दशांशहवनस्य दशांशतर्पणम्, तद्दशांशमार्जनञ्च

ततो यजमानो हस्ते जलाक्षतादिकमादाय नामगोत्रादिकमुच्चार्य संकल्पं कुर्यात्-

मम सङ्कल्पोक्तकृतसुदर्शनानुष्ठानकर्मणः तद्दशांशहवनकर्मणः साङ्गतासिद्धये तद्दशांशतर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं च दुग्धेन जलेन वा अहं करिष्ये।

ॐ सुदर्शनाय विद्महे हेतिराजाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्।
श्रीमन्तं सुदर्शनं तर्पयामि। (निर्धारितसंख्या द्रष्टव्या)
ॐ ॐ सुदर्शनाय विद्महे हेतिराजाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्।
आत्मानं मार्जयामि। (अत्रापि निर्धारितसंख्या द्रष्टव्या)

पूर्णाहुतिः

दर्व्या आज्येन स्रुचं चतुःकृत्वः पूरयित्वा तत्र ताम्बूलपूगीफलश्रीफलानि निधाय नववस्त्रेण आच्छाद्य पुनराज्येनाभज्य पुष्पादिभिरलङ्कृत्य तिष्ठन् मनसा यज्ञपुरुषं ध्यायन्-

ॐ मूर्धानन्दिवोऽअरतिं पृथिव्या व्वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम्।
कविꣳसम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जययन्त देवाः।

ॐ पूर्णः पश्चादुत पूर्णः पुरस्तादुन्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय।
तस्या देवाऽअधिवसन्तऽउत्तमे नाकेऽइह मादयन्ताम्।

ॐ सप्त तेऽअग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्तहोत्राः सप्तधा त्वा बजन्ति सप्तयोनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा।

ॐ अग्नये पूर्णाय सप्तवते स्वाहा, अग्नये पूर्णाय सप्तवते इदं न मम।

स्रुचा आज्यमादाय वसोर्धारा

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसो पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।

अथोत्तरपरिषेचनम्

जलपूर्णां प्रणीतां दक्षिणहस्तेनादाय-

ॐ अदितेऽनुमन्यस्व (दक्षिणे प्रागग्राम्)

ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व (पश्चिमत उत्तराग्राम्)

ॐ सरस्वतेऽनुमन्यस्व (उत्तरतः प्रागग्राम्)

ॐ देवसवितः प्रसुवः (प्रदक्षिणक्रमेण) जलधारां दद्यात्।

प्रणीतापात्रं स्वस्य पुरतो निधाय तत्र-

ॐ सदसि सन्मे भूयाः सर्वमसि सर्वं मे भूयाः पूर्णमसि पूर्णं मे भूया अक्षतमसि मामेक्षेष्टाः इति मन्त्रेण जलान्तरं निनीय तज्जलं हस्ताभ्यामादाय-

ॐ देवा ऋषयो मार्जयन्ताम् पूर्वस्यां किञ्चिज्जलपातनम्।

ॐ मासा पितरो मार्जयन्ताम् दक्षिणस्यां किञ्चिज्जलपातनम्।

ॐ गृहाः पशवो मार्जयन्ताम् पश्चिमस्यां किञ्चिज्जलपातनम्।

ॐ आप ओषधयो वनस्पतयो मार्जयन्ताम् उत्तरस्यां किञ्चिज्जलपातनम्।

ॐ यज्ञः संवत्सरो यज्ञपतिर्मार्जयन्ताम् ऊर्ध्वायां किञ्चिज्जलपातनम्।

ततः पुरस्ताद् भूमौ च सहिरण्यं किञ्चिज्जलं निक्षिप्य अवशिष्टजलेन-

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः इति प्रणीतां न्युब्जां कुर्यात्।

अग्नेर्भस्म गृहीत्वा यजमानस्य त्र्यायुषीकरणम्-

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः ललाटे।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् कण्ठे।

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् हृदये।

ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् दक्षिणबाहुमूले भस्मधारणं कुर्यात्।

ततो नीराजनपुष्पाञ्जलिपरिक्रमादिकं कृत्वा भूमौ दण्डवत् प्रणमेत्।

ब्रह्मविसर्जनम्

ॐ ब्रह्मणे नमः इति ब्रह्माणं गन्धादिभिः सम्पूज्य-

ॐ स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥

भगवन् देवदेवेश जगतामार्तिनाशन।

व्रजस्व पूजामादाय पुनरागमनाय च।

परिधिहोमः

ततः परिधीन् आधारसमिधः परिस्तरणकुशाँश्च आदाय

ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत अरिष्टास्माकं वीरा मापरासे चिमत्पतयः, इति अग्नौ प्रक्षिपेत्। ततः बद्धाञ्जलिः प्रार्थयेत्- ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देववयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराण मेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम॥

अग्निविसर्जनम्

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥

दक्षिणादिदानम्

ततश्चतुर्विंशत्सङ्ख्याकानां श्रीवैष्णवानां भोजनं दक्षिणादानमावश्यकम्। कार्यसिद्धये भूयसीदक्षिणादिना आचार्यादिपूजनम्। तत्र सङ्कल्पः-

देशकालादिकमुच्चार्य.....................गोत्रोत्पन्नस्य ....शर्मणः/ वर्मणः/ गुप्तस्य मम सङ्कल्पोक्तसुदर्शनशतकानुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिद्धये आचार्यब्रह्मपारायणकर्तृकेभ्य इमां दक्षिणां यथाभागं विभज्य दातुमुत्सृज्ये। विहितसंख्यापर्याप्तब्राह्मणान् भोजयिष्ये, वसनदक्षिणादिभिः आचार्यादीन् पूजयिष्ये। (गोप्रदानादिकं च करिष्ये)

आचार्याय ब्रह्मणे च पूर्णपात्रदानम्

देशकालादिकमुच्चार्य.....................गोत्रोत्पन्नस्य ....शर्मणः/ वर्मणः/ गुप्तस्य मम सङ्कल्पोक्तसुदर्शनशतकानुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिद्धये सर्वाङ्गतापूर्णतायै च सफलं सदक्षिणाकं तण्डुलपूरितपूर्णपात्रं...............शर्मणे आचार्याय/ब्रह्मणे दातुमुत्सृज्ये।

आचार्यो ब्राह्मणैः सह
भगवन्निवेदितपुष्पफलैर्यजमानाय श्रेयोदानं ददाति

यस्मिन् विन्यस्य भारं विजयिनि जगताञ्जङ्गमस्थावराणां
लक्ष्मीनारायणाख्यं मिथुनमनुभवत्यत्युदारान् विहारान्।
आरोग्यम्भूतिमायुः कृतमिव बहुना यद्यदास्थापदं वः
तत्तन्नित्यं समस्तन्दिशतु स पुरुषो दिव्यहेत्यक्षवर्ती॥

स्वस्त्यस्तु कुशलमस्तु चिरायुरस्तु
गोवाजिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु।
ऐश्वर्यमस्तु विजयोऽस्तु रिपुक्षयोऽस्तु
सन्तानवृद्धिसहिता हरिभक्तिरस्तु॥

भवन्नियुक्तेन मया एतैः ब्राह्मणैः सह कृतेन सुदर्शनानुष्ठानेन कर्मणा विजयलक्ष्मीसमेतश्रीसुदर्शनप्रीतिद्वारा भगवद्भागवताचार्यमुखोल्लासपूर्वकं सङ्कल्पोक्तसमस्तकार्यसिद्धिरस्तु।

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिशुद्धास्तु मित्राणामुदयोऽस्तु वः॥

समर्पणं विसर्जनञ्च

गन्धाक्षतपुष्पैः स्थापितदेवानाम् उत्तरपूजनं कृत्वा समर्पणम्-

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि।

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥

यन्त्राणां मूर्तीनां शालग्रामस्य विसर्जनं न कार्यम्, अन्येषां विसर्जनम्।

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामप्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

ॐ अच्युताय नमः, ॐ अच्युताय नमः, ॐ अच्युताय नमः॥

इति गोविन्दाचार्यसङ्कलितं पूजनहोमविधिसहितं
श्रीसुदर्शनानुष्ठानं सम्पूर्णम्।
(मकरसङ्क्रान्तिः २०६१)

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमद्भगवद्भागवताचार्यवैभवम्

आचार्यं शठकोपदेशिकमतः प्राचार्यपारम्परे
श्रीमल्लक्ष्मणयोगिवर्ययमुनावास्तव्यमालादिकान्।
वाल्मीकिं सह नारदेन मुनिना वाग्देवतावल्लभं
सीतालक्ष्मणवायुसूनुसहितं श्रीरामचन्द्रं भजे॥१॥

आचार्य श्रीशठकोप सूरि तथा उनके बादके आचार्यपरम्परा के श्रीरामानुज स्वामी जी, श्रीयामुनाचार्य स्वामी जी, श्री नाथमुनि इत्यादि आचार्य, श्रीनारदमुनि, श्रीवाल्मीकि जी, श्रीब्रह्मा जी, श्रीसीता जी, श्रीलक्ष्मण जी, श्री हनुमान जी समेत श्रीरामचन्द्र भगवान की मैं आराधना करता हूँ॥

श्रीरङ्गमङ्गलमहोत्सववर्द्धनाय
वेदान्तपान्थपरमार्थसमर्थनाय।
कैङ्कर्यलक्षणविलक्षणमोक्षलक्ष्म्यै
रामानुजो विजयते यतिराजराजः॥२॥

श्रीरंगनाथ भगवान के मंगल महोत्सव के संवर्धन के लिये, वेदान्तमार्ग के पारमार्थिक जनों की सहायता के लिये कैंकर्य के द्वारा विलक्षण मोक्षलक्ष्मी की प्राप्ति के लिये यतिराजराज श्री रामानुज स्वामी जी विजय को प्राप्त करते हैं॥

श्रीरङ्गमङ्गलमणिं करुणानिवासं
श्रीवेङ्कटाद्रिशिखरालयकालमेघम्।
श्रीहस्तिशैलशिखरोज्वलपारिजातं
श्रीशं नमामि शिरसा यदुशैलदीपम्॥३॥

दयानिधान मंगलकारी श्री रंगनाथ भगवान् श्रीवेंकटगिरि के शिखर मन्दिर में विराजमान श्रीबालाजी , हस्तिगिरि के शिखर के उज्वल पारिजात श्रीवरदराज, यदुशैल के दीपमणि श्री सम्पत्कुमार भगवान इन सबको मैं शिर से प्रणाम करता हूँ।

काषायशोभिकमनीयशिखानिवेशं
दण्डत्रयोज्ज्वलकरं विमलोपवीतम्।
उद्यद्दिनेशनिशमुल्लसदूर्ध्वपुण्ड्रं
रूपं तवास्तु यतिराजदृशो ममाग्रे॥४॥

हे यतिराज! शरीर पर शोभा देता काषायवस्त्र, शिर पर सुन्दर चौड़ी शिखा, हाथ में त्रिदण्ड, वक्ष:स्थल पर शुभ्र विमल यज्ञोपवीत, ललाट पर उदय होते सूर्य के समान उज्वल ऊर्ध्वपुण्ड्र, यह आपका स्वरूप सदा मेरे नेत्रों के सामने रहे।।

भक्तामृतं विश्वजनानुमोदनं
सर्वार्थदं श्रीशठकोपवाङ्मयम्।
सहस्रशाखोपनिषत्समागमं
नमाम्यहं द्राविडवेदसागरम्।।५।।

भक्तों के लिये अमृत जैसे व समस्त संसारी जीवों को ज्ञान और आनन्द देने वाले तथा सब कामनाओं पूर्ण करने वाले, उपनिषद् के समान सहस्रगाथायुक्त इस श्री शठकोप स्वामीजी के दिव्य प्रबन्धों के द्रविड वेदसागर को मैं प्रणाम करता हूँ।।

नमामि रामानुजपादपङ्कजं
वदामि रामानुजनामनिर्मलम्।
स्मरामि रामानुजदिव्यविग्रहं
करोमि रामानुजदासदास्यताम्।।६।।

श्रीरामानुज स्वामी जी के चरणकमलों को मैं नमस्कार करता हूँ। श्रीरामानुज स्वामी जी के निर्मल नामों का मैं गान करता हूँ। श्रीरामानुज स्वामी जी के दिव्य स्वरूप का मैं स्मरण करता हूँ तथा श्रीरामानुज स्वामी जी का कैंकर्य करने वालों का दास बन कर उनकी सेवा करता हूँ।

श्रीमते रम्यजामातृमुनीन्द्राय महात्मने।
श्रीरङ्गवासिने भूयान्नित्यश्रीर्नित्यमङ्गलम्।।७।।

श्रीरंगम् में निवास करने वाले महात्मा श्री रम्यजामातृ श्रीवरवर मुनीन्द्र का नित्य वैभव बढ़े और नित्य मंगल हो।

मङ्गलं यतिराजाय श्रीभाष्यामृतदायिने।
सौलभ्यपरिपूर्णाय महापूर्णाय मङ्गलम्।।८।।

श्रीभाष्य रूपी अमृत के प्रदाता श्री यतिराज स्वामी जी का मङ्गल हो और सौलभ्यगुणों से परिपूर्ण श्री महापूर्ण स्वामी जी का मंगल हो।

मङ्गलाशासनपरैर्मदाचार्यपुरोगमैः।
सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मङ्गलम्।।९।।

मंगलाशासनों में निरत हमारे आचार्यों के पूर्ववर्ती समस्त पूर्वाचार्यों द्वारा संचालित सत्कर्म एवं सत्सम्प्रदाय का मंगल हो।।

एक हजार प्रकाण्ड विद्वान तैयार करने का महान् लक्ष्य

पाश्चात्य संस्कृति के चकाचौंध में आज भारतीय समाज भी रंगा हुआ है। हम आज अपनी संस्कृति, सभ्यता, वेद, शास्त्र, धर्म, रीति-परम्परा एवं देश पर गर्व नहीं करते किन्तु पाश्चात्य-सभ्यता में गोता लगाने को आतुर हैं। एक ओर तो पाश्चात्य जगत् हमारी धरोहर, सभ्यता एवं सनातन पद्धति की ओर विवेकपूर्ण आदर प्रकट कर रहा है और हमारे आचरणों को अपने जीवन में अपनाने लगा है। जैसे- योग **YOGA** हमारे ऋषि-मुनियों की खोज है और वह अपनी भूमि में उपेक्षित था। जब पाश्चात्य जगत् ने इस रहस्य को समझा और अपने जीवन में उतारा और योग को योगा बनाया तथा भारत वापस आया तो आज चारों तरफ योगा ही योगा हो रहा है। इसी तरह वास्तु (Vastu) विदेश गया और वैस्टु बनकर वापस आया तो आज घर-घर वास्तु है। ज्योतिषि जाकर Astrology बनकर आया और कम्प्यूटर में सध गया तो आज एस्ट्रॉलोजी के बिना समाज में कोई कार्य नहीं हो रहे हैं। इसी तरह आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर आदि स्पर्शचिकित्सा, ध्यान(मेडिटेशन) आदि फिर भारतीय समाज में वापस आ रहे हैं। अब अधिकांश लोग पाश्चात्यपद्धतियों से धोखा खाकर परेशान होकर पुनः ऋषिपद्धतियों को अपनाना शुरू कर दिये हैं।

आज योग, ध्यान, ज्योतिष, वास्तु, आयुर्वेद आदि का पूर्णतया व्यवसायीकरण शुरू हो गया। हमारे शास्त्रों में ऋषियों ने इन विषयों पर मूर्णजया वैज्ञानिक दृष्टि से खोज किया है। आज के लाग उसका शास्त्रपूर्वक अध्ययन न करके केवल बाहरी एवं व्यावहारिक रूप से उपयोग कर रहे हैं। हमें डर है कि कहीं ये विषय केवल धनिकों के लिये ही न रह जायें। जैसे आज की एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति, न्याय आदि निर्धनों के लिए अपनी पहुँच से दूर हो रहे हैं। इसलिए ये सारे विषय वेद, वेदांग, उपनिषद्, आयुर्वेद, प्राकृतिक उपचार, ज्योतिष, वास्तु आदि विषयों पर शास्त्र के अनुकूल सर्वजनहिताय और सर्वजनसुखाय कैसे बनाया जाय? जो व्यवसाय के रूप में न होकर केवल सेवा के रूप में कार्य करके इस भारतीय सरणी को जन-जन तक पहुँचाया जा सके। एतदर्थ सर्वप्रथम वेद, वेदांग का अध्ययन होना आवश्यक है।

इसी चिन्तन को लेकर इस पत्रिका के प्रकाशक **स्वामी श्री गोविन्दाचार्य**(संचालक- श्री मुक्तिनाथ वेद विद्याश्रम, दिल्ली एवं संस्थापक एवं प्रमुख न्यासी **श्रीनिवास सेवार्थ न्यास, दिल्ली** ने एक महान संकल्प लिया है कि हम अपने जीवन में इन्हीं शास्त्रों के एक हजार प्रकाण्ड विद्वान तैयाकर करके देश-विदेश में प्रचारार्थ नियुक्त करके, जो नगर-नगर, गाँव-गाव में जाकर निःशुल्क

सेवा कर सकें। इसी क्रम में आज आपके सत्प्रयास से दिल्ली, चण्डीगढ़, पंचकूला, भिवानी, मैसूर कर्नाटक, पनवेल-मुम्बई आदि नगरों में विद्याश्रम चल रहे हैं जहाँ २५० से अधिक छात्र वेद, वेदांग, वेदान्त, ज्योतिष, योग, ध्यान आदि की निःशुल्क आवास, भोजन, पुस्तक, वस्त्र आदि की सुविधा के साथ शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले लोग तो धनव्यय करके भी शिक्षा प्राप्त करते हैं किन्तु इन विषयों के छात्र इतने सम्पन्न नहीं हैं। अतः प्राचीन काल से ही ऋषि-पद्धति में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था रही है। जो लक्ष्मीपुत्र महानुभाव इस महान कार्य में सहभागी बनना चाहें, ऐसे देश-विदेश के लोगों से हमारी प्रार्थना है कि कम से कम एक छात्र का सम्पूर्ण व्यय(मासिक एक हजार रुपये) वहन कर भारतीय संस्कृति परम्परा के संरक्षण एवं संवर्धन तथा प्रचार प्रसार के महायज्ञ में आहुति देकर देश-समाज के प्रति अपना दायित्व पूर्ण करें।

श्री गोविन्दाचार्य जी के द्वारा संचालित विभिन्न विद्याश्रमों एवं **श्रीनिवास सेवार्थ न्यास** के नाम से संचालित संस्थाओं में तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें। **न्यास** को आयकर की धारा 80-**G** के अन्तर्गत दानदाता के पक्ष **करमुक्ति प्रमाणपत्र प्राप्त** है। न्यास के नाम से इब्राहिमपुर, बुराड़ी, दिल्ली में एक हजार आठ स्क्वायर गज का भूखण्ड है और उसी के साथ एक एकड़ जमीन क्रय करने का प्रस्ताव है। सभी महानुभावों से अनुरोध है कि अपने सामर्थ्य के अनुसार भूमिदान में अपनी सहभागिता अवश्य निश्चित करें- **सुदर्शनाचार्य**, सम्पादक- **योगालोक**

यतिराजप्रकाशनम्, ६, मारबाड़ी घाट, कुदसिया घाट, बेला रोड़, दिल्ली- ५४ से प्रकाशित पुस्तकें-

१. **वेदान्तसार** (श्री रामानुज स्वामी जी द्वारा प्रसादित) 51/-
२. **ऋजुसिद्धान्तकौमुदी** (पाणिनीय 600 सूत्र) ऋजुकर्ता-गोविन्दाचार्य 21/-
३. **गीतार्थसंग्रहः** (श्री यामुनाचार्य स्वामी जी) 15/-
४. **नित्यानुसन्धानम्** श्रीवैष्णवीय स्तोत्र, भाषा सहित 15/-
५. **श्रीसुदर्शनानुष्ठानम्** 30/-

प्रकाशोन्मुख पुस्तकें

१. **ऋजुसिद्धान्तकौमुदी** श्रीधरमुखोल्लासिनी विस्तृत हिन्दी टीका
२. **लघुसिद्धान्तकौमुदी** श्रीधरमुखोल्लासिनी विस्तृत हिन्दी टीका
३. **श्रीवैष्णवानुष्ठानपद्धतिः**

योगालोक मासिक पत्रिका

वार्षिक सदस्यता 120/- पंचवार्षिक- 500/- आजीवन सदस्यता- 1500/-

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

जगद्गुरु श्री रामानुजाचार्य स्वामी जी महाराज

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

चक्राब्जमण्डलम्

यतिराज प्रकाशन

6, मारवाड़ी घाट, कुदसिया घाट,
बेला रोड दिल्ली-54,
दूरभाष :- 011-23930776, 09810429487